وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ (القرآن)

तुम्हारे रब ने फ़रमायाः "तुम मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी दुआएं क़ुबूल करूँगा।"

हिस्नुल मुस्लिम

मस्नून अज़्कार और दुआएं

लेखक

फ़ज़ीलतुश्शैख सईद बिन अली अल-कहतानी हफ़िज़हुल्लाह

हिंदी तर्जुमा

मुहम्मद नजीब बक़्क़ाली

مكتبة السنة

मकतबह अस्सुन्नह

नई तरतीब और फ़ायदेमंद इज़ाफ़ों के साथ एक नया एडीशन

क़ुरआन और हदीस से ली गई दुआएं

हिस्नुल मुस्लिम

लेखक

सईद बिन अली अल-कहतानी

हिंदी तर्जुमा

मुहम्मद नजीब बक़्क़ाली

तमाम हुक़ूक़ महफ़ूज़ हैं

नाम किताब : हिस्नुल मुस्लिम

लेखक : सईद बिन अ़ली अल-क़हतानी

हिंदी तर्जुमा : मुहम्मद नजीब बक़्क़ाली

तादाद : 1100

सन इशाअत : 2016

क़ीमत : 75 रु.

مكتبة السنة

MAKTABAH AS-SUNNAH

Shop no. 5, Firdaus Manzil, 12, Ghoghari
Mohalla, Bhendi Bazar, Mumbai- 400 003.
Mobile: 9222315006/ 8097444448/ 7498555422
Email: bakaliarmn@gmail.com
maktabahassunnah@hotmail.com

फ़हरिस्त मज़ामीन

1	अपनी बात	1
2	ज़िक्र सुन्नत के मुताबिक करना वाजिब है	6
3	ज़िक्र की फ़ज़ीलत	7
4	नींद से जागने के बाद की दुआ	13
5	कपड़ा पहनने की दुआ	21
6	नया कपड़ा पहनने की दुआ	22
7	नया कपड़ा पहनने वाले के लिए	22
8	कपड़ा उतारते वक़्त क्या पढ़े ?	23
9	शौचालय में दाख़िल होने की दुआ	23
10	शौचालय से निकलने की दुआ	24
11	वुज़ू से पहले की दुआ	24
12	वुज़ू के बाद की दुआ	24

13	घर से निकलते वक़्त की दुआएं	26
14	घर में दाख़िल होते वक़्त की दुआ	27
15	मस्जिद की तरफ़ जाने की दुआ	27
16	मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ	29
17	मस्जिद से निकलने की दुआ	30
18	अज़ान के वक़्त की दुआ	31
19	अज़ान के बाद की दुआ	33
20	नमाज़ शुरु करने की दुआएं	34
21	रुकूअ की दुआएं	44
22	रुकूअ से उठने की दुआएं	46
23	सज्दे की दुआएं	48
24	दोनों सज्दों के बीच की दुआएं	50
25	सज्दए तिलावत की दुआएं	51

26	तशह्हुद	53
27	नबी करीम ﷺ पर दरुद	54
28	सलाम फेरने से पहले की दुआएं	56
29	सलाम फेरने के बाद की दुआएं	66
30	नमाज़े इस्तिख़ारह की दुआएं	76
31	सुबह और शाम की दुआएं	79
32	सोने के वक़्त की दुआएं	98
33	रात के वक़्त करवट बदलते हुए	109
34	नींद में परेशानी या तन्हाई महसूस	110
35	बुरा ख़्वाब आए तो क्या करे ?	110
36	क़ुनूते वित्र की दुआएं	111
37	वित्र के सलाम के बाद की दुआएं	114
38	फ़िक्र और ग़म की दुआएं	115

39	तक्लीफ़ और मुसीबत के वक़्त	117
40	दुश्मन और बादशाह से मिलते	119
41	बादशाह के ज़ुल्म के ड़र की	120
42	दुश्मन को बद्दुआ देना	123
43	लोगों से ड़र लगे तो क्या पढ़े	124
44	ईमान में शक हो जाने की दुआ	124
45	कर्ज़ की अदाईगी की दुआ	125
46	कुरआन या नमाज़ पढ़ते वक़्त	126
47	मुश्किल के वक़्त की दुआ	127
48	गुनाह कर बैठे तो क्या करे ?	127
49	शैतान और उस के वसवसे दूर	128
50	ना पसन्दीद: वाक़िआ या बेबसी	129
51	नौ मौलूद की मुबारकबाद	130

52	बच्चों को अल्लाह की हिफ़ाज़त	131
53	बीमार पुर्सी के वक़्त मरीज़ के	132
54	बीमार पुर्सी की फ़ज़ीलत	133
55	ज़िन्दगी से ना उम्मीद मरीज़ की	134
56	मौत से क़रीब इन्सान को तल्क़ीन	136
57	मुसीबत में घिरे इन्सान की दुआ	136
58	मय्यत की आँखे बन्द करते वक़्त	136
59	नमाज़े जनाज़: की दुआएं	137
60	बच्चे की नमाज़े जनाज़:की दुआऐं	142
61	ताज़ियत की दुआ	144
62	मय्यत को क़ब्र में उतारते वक़्त	145
63	मय्यत को दफ़्न करने के बाद	145
64	कब्रस्तान को देखने की दुआ	146

65	आँधी की दुआ	147
66	बादल गरजने की दुआ	148
67	बारिश माँगने की दुआएं	148
68	बारिश उतरते वक़्त की दुआ	150
69	बारिश उतरने के बाद की दुआ	150
70	आसमान साफ़ हो जाने के लिए	150
71	नया चाँद देखने की दुआ	151
72	रोज़ा इफ़्तार करते वक़्त की	152
73	खाना खाने से पहले की दुआ	153
74	खाना खाने के बाद की दुआएं	154
75	महमान की मेज़बान के लिए दुआ	155
76	पिलाने वाले के लिए दुआ	156
77	किसी के यहाँ इफ़्तार की दुआ	156

78	दावत के वक़्त रोज़ा इफ़्तार न	157
79	रोज़ेदार को कोई गाली दे तो क्या	157
80	पहला फल देखने के वक़्त	157
81	छींक की दुआ	158
82	शादी करने वाले के लिए दुआ	159
83	शादी करने और सवारी ख़रीदने	160
84	बीवी के पास आने से पहले की	161
85	ग़ुस्सा आजाने के वक़्त की दुआ	161
86	मुसीबत में घिरे हुऐ को देखने के	161
87	मज्लिस के बीच की दुआ	162
88	मज्लिस का कफ़्फ़ारा	163
89	अल्लाह तुझे मआफ़ करे कहने	164
90	भलाई करने वाले के लिए दुआ	164

91	दज्जाल से महफ़ूज़ रहने के	164
92	मुझे तुम से अल्लाह के लिए	165
93	माल और दौलत पेश करने वाले	165
94	क़र्ज़ लौटाते वक़्त क़र्ज़ देने वाले	165
95	शिर्क से ड़रने की दुआ	166
96	बरकत की दुआ देने वाले के लिए	167
97	बदशगूनी को ना पसन्द समझने	167
98	सवारी पर बैठने की दुआ	167
99	सफ़र की दुआ	169
100	शहर या बस्ती में दाख़िल होने की	171
101	बाज़ार में दाख़िल होने की दुआ	173
102	सवारी फिसलने के वक़्त की दुआ	173
103	मुसाफ़िर की मुक़ीम के लिए दुआ	174

104	मुक़ीम की मुसाफ़िर के लिए दुआ	174
105	सफ़र में तस्बीह और तक्बीर	175
106	सफ़र में सुबह के वक़्त की दुआ	175
107	सफ़र में या बिना सफ़र किसी	176
108	सफ़र से वापसी की दुआ	176
109	ख़ुशी या परेशानी की बात सुनने	177
110	रसूलुल्लाह ﷺ पर दरुद भेजने	178
111	ज़्यादा से ज़्यादा सलाम फैलाना	179
112	काफ़िर के सलाम का जवाब	180
113	मुर्ग़ बोलने और गधा रेंकने के	180
114	रात को कुत्ते भोंकने के वक़्त	181
115	ऐसे शख़्स के लिए दुआ जिसे	182
116	मुसलमान दुसरे मुसलमान की	182

117	जब मुसलमान अपनी तअ़रीफ़	183
118	हज या उमरा का एहराम बाँधने	184
119	हज्रे अस्वद के क़रीब जा कर	184
120	रुक्ने यमानी और हज्रे अस्वद	185
121	सफ़ा और मर्वह पर रुकने की दुआ	185
122	अ़र्फ़: के दिन (9 जिल्हिज्ज:)की	187
123	मशअ़रे हराम के पास ज़िक्र	188
124	रमी जमरात के वक़्त हर कंकरी	188
125	ख़ूशी महसूस करने और ख़ूशी	188
126	ख़ूशख़बरी मिलने पर क्या करे ?	189
127	जिस्म में तक्लीफ़ महसूस हो तो	189
128	अपनी नज़र लग जाने का ड़र हो	190
129	घबराहट के वक़्त क्या कहा जाए	190

130 कोई जानवर या उंट ज़बह करते 190

131 सरकश शैतानों के धोके और 191

132 तौबा और इस्तिग़फ़ार 193

133 तस्बीह, तहमीद, तहलील और 194

134 नबी करीम ﷺ तस्बीह कैसे 202

135 मुख़तलिफ़ नेकियां और जामेअ़ आदाब 202

अपनी बात

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْم وَبَعْد

अल्लाह तआला की तअरीफ़ और रसूले करीम ﷺ पर दरूद और सलाम के बाद।

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया दुआ इबादत है (तिर्मिज़ी) अल्लाह तआला ने आदम علیہ السلام को पैदा करने के बाद सब से पहली इबादत जो उन को सिखाई वह **दुआ** ही थी। "ऐ हमारे रब हम ने अपने आप पर ज़ुल्म किया है अगर तू ने हमें मआफ़ न किया और हम पर रहम न किया तो हम नुक़्सान उठाने वालों में से हो जाएंगे।" (सूरए आराफ़) दुआ ऐसी इबादत है जिस के लिए कोई दिन या वक़्त तय नहीं बल्कि हर लम्हा हर घड़ी हर जगह मांगने की इजाज़त है। रसूल्लाह ﷺ की मुबारक ज़िन्दगी का कोई लम्हा और घड़ी ऐसी नहीं जो दुआ से ख़ाली हो।

अल्लाह तआला बड़ा महरबान है। अपने हर नेक और बुरे बन्दे की दुआ को सुनता है। यह ख़्याल ग़लत है कि

अल्लाह तआला गुनहगारों की दुआ को नहीं सुनता, अल्लाह का फ़रमान है: लोगो! तुम्हारा रब कहता है कि तुम सब मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ क़ुबूल करुँगा जो लोग मेरी इबादत(दुआ) से घमंड करते हैं वह ज़लील हो कर जहन्नम में दाख़िल होंगे। (मोमिन :60) और रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो शख़्स अल्लाह से दुआ नहीं करता अल्लाह उस से नाराज़ होता है। (तिर्मिज़ी)

इन्सान कभी कभी ऐसे हालात में घिर जाता है कि सारे सहारे टूट जाते हैं उम्मीद की कोई किरन दिखाई नहीं देती सारे रास्ते बन्द हो जाते हैं। रिश्तेदारों और दोस्तों पर से भी भरोसा उठ जाता है यहाँ तक कि भाई भाई से, शौहर बीवी से और औलाद माँ बाप से खुल कर बात नहीं कर सकते मतलब यह कि सब कुछ होते हुए भी इन्सान अकेला, बेबस और मजबूर हो जाता है।

तब उस के अन्दर से एक आवाज़ उठती है कि एक सहारा अब भी मौजूद है, एक दरवाज़ा अब भी खुला है जहाँ इन्सान अपने दुख सुख और अपनी तकलीफ़ों की दास्तान हर

वक़्त बयान कर सक्ता है। इस हालत को अल्लाह ने ख़ुद अपने कलाम में बयान किया है "भला कौन है जो बेक़रार की दुआ क़ुबूल करता है जब वह उसे पुकारे और उसकी तकलीफ़ को दूर कर देता है और ज़मीन में तुम्हें ख़िलाफ़त देता है (यह काम करने वाला) अल्लाह के सिवा कोई और भी है?" (नमल: 62)। क़ुरआन ने हमारे सामने नबियों के बहुत से क़िस्से रखे हैं कि जिन से पता चलता है कि वह ख़ुद अपने फ़ायदे और नुक्सान के मालिक नहीं थे ख़ुद अपने आप को मुसीबतों से नहीं बचा सके बल्कि उन्हों ने मुसीबत, परेशानी और आज़माइश के वक़्त हमेशा अल्लाह ही को पुकारा। फिर अल्लाह ने उन की मुसीबत और तकलीफ़ दूर कर दी। सच बात यह है कि ज़िन्दगी में आने वाली मुसीबतों, ग़मों और मुश्किलों से छुटकारा पाने के लिए दुआ से ज़्यादा मज़बूत हथियार कोई नहीं है।

इसी तरह दुआ सब से अच्छा हदिया (तोहफ़ा) भी है रसूलुल्लाह ﷺ जब अपनी जान की बाज़ी लगाने वाले सहाबा से उन की दीनी ख़िदमतों से ख़ुश होते तो उन्हें दुआ का

क़ीमती और सब से अच्छा हदिया देते थे। एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान के लिए सब से अच्छा हदिया अगर कोई है तो वह दुआ ही है।

यह अक़ीदा रखना भी ग़लत है कि अल्लाह किसी बुज़ुर्ग की दुआ को रद्द नहीं करता अल्लाह तआला ने नूह عليه السلام की अपने बेटे के लिए दुआ को रद्द कर दिया (हूद : 46) और ख़ूद रसूलुल्लाह ﷺ की तीन दुआओं में से एक को क़ुबूल नहीं किया (मुस्लिम) और अब्दुल्लाह बिन उबई की बख़्शिश की दुआ को भी क़ुबूल नहीं किबा (तौबा :80)।

मुहतरम भाइयो और बहनो! ज़िक्र, अज़्कार और दुआओं की बहुत सारी किताबें मौजूद हैं लेकिन बहुत सी किताबों में मनगढ़त और ज़ईफ़ दुआएँ भी होती हैं, मुसलमान की ज़िन्दगी में दुआओं की जितनी अहमियत है उतनी ही ज़रुरी यह बात भी है कि दुआएँ और अज़्कार वही पढ़े जाएं जो सुन्नत से साबित हों। और अल्लाह तआला उसी अमल को क़ुबूल करेगा जो सुन्नत से साबित हो।

यह किताब "**हिस्नुल मुस्लिम**" जो आप के हाथों में है इस की ख़ासियत यह है कि इस किताब में **शेख़ सईद बिन अली अल क़हतानी** ने क़ुरआन और सहीह या हसन हदीसों से साबित दुआएँ ही जमा की हैं।

मैं ने अपनी कमज़ोरियों और इल्म की कमी के बावजूद इस किताब का हिंदी तर्जूमा किया है और कई बार इस को बारीकी से देखा है। इस के बाद भी किसी को कोई कमी नज़र आजाए तो महरबानी करके ज़रुर बताएं ताकि अगले एडीशनों में उस को सहीह किया जा सके।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह अपने ख़ास फ़ज़्ल और करम से हमारी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और इस किताब से तमाम मुसलमानों को भरपूर फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ दे। (आमीन)

रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन न क अन्तस समीअुल अलीम
वतुब अलैना इन न क अन्तत तव्वाबुर्रहीम

मुहम्मद नजीब बक़्क़ाली, मकतबह अस्सुन्नह मुम्बई

ज़िक्र सुन्नत के मुताबिक करना वाजिब है

अल्लाह तआ़ला ने फरमायाः

﴿وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ۝﴾

"और तुम उसे इस तरह याद करो जिस तरह उस ने तुम्हें हिदायत दी है और यकीनन इस से पहले तुम गुमराहों में से थे।" (अल ब-क़-रहः 198)

﴿فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ۝﴾

"पस अल्लाह को याद करो जिस तरह उस ने तुम्हे वह कुछ सिखाया जो तुम नहीं जानते थे।" (अल ब-क़-रहः 239)

﴿وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝﴾

"और (ऐ नबी!) अपने रब को सुबह व शाम अपने दिल में याद कीजिए, नर्मी से और ड़रते हुए, पस्त और हल्की

आवाज़ से और आप बेखबरों में से न हो जाइए।" (अल अअ़राफः 198)

ज़िक्र की अहमीयत व फ़ज़ीलत

﴿فَاذْكُرُونِيٓ أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ۝﴾

"तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद करूंगा और तुम मेरा शुक्र करो और मेरी नाशुक्री न करो।" (अल ब-क़-रहः 239)

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ۝﴾

"ऐ ईमान वालो अल्लाह तआ़ला को बहुत ज़्यादा याद करो।" (अल अहज़ाबः 41)

﴿وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝﴾

"और अल्लाह को बहुत याद करने वाले मर्द और बहुत याद करने वाली औरतें, अल्लाह ने उन के लिए माफ़ी और बहुत बड़ा बदला तय्यार कर रखा है।" (अल अहज़ाबः 35)

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमायाः

مَثَلُ الَّذِیْ یَذْکُرُ رَبَّهٗ وَالَّذِیْ لَا یَذْکُرُ رَبَّهٗ. مَثَلُ الْحَیِّ وَالْمَیِّتِ

"उस आदमी की मिसाल जो अपने रब का ज़िक्र करता है और जो अपने रब का ज़िक्र नहीं करता, ज़िन्दा और मुर्दा की तरह है।" (सहीह बुखारीः 6407)

أَلَا أُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرِ أَعْمَالِكُمْ وَأَزْكَاهَا عِنْدَ مَلِيكِكُمْ وَأَرْفَعِهَا فِي دَرَجَاتِكُمْ وَخَيْرٍ لَّكُمْ مِنْ إِنْفَاقِ الذَّهَبِ وَالْوَرِقِ وَخَيْرٍ لَكُمْ مِّنْ أَنْ تَلْقَوْا عَدُوَّكُمْ فَتَضْرِبُوْا أَعْنَاقَهُمْ وَيَضْرِبُوْا أَعْنَاقَكُمْ. قَالُوا بَلٰى. قَالَ "ذِكْرُ اللهِ تَعَالٰى"

"क्या मैं तुम्हें ऐसा काम न बताऊँ जो तुम्हारे सब कामों से बेहतर, तुम्हारे शहनशाह (अल्लाह) के यहाँ सब से पाकीज़ा, तुम्हारे दरजात (पदों) में सब से ऊँचा और तुम्हारे लिए सोना चाँदी खर्च करने से बहुत बहतर है, बल्कि तुम्हारे लिए इस से भी बहतर है कि तुम्हारा मुकाबला तुम्हारे दुश्मन के साथ हो, तुम उन की गरदनें काटो और वह तुम्हारी गरदनें काटें"?

सहाबा ने कहाः क्यों नही! ज़रूर बताएँ। आप ﷺ ने फरमायाः "(वह है) अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र।" (सहीह मुस्लिमः 779)

يَقُولُ اللهُ تَعَالَى: أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي، وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِي، فَإِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي، وَإِنْ ذَكَرَنِي فِي مَلَإٍ ذَكَرْتُهُ فِي مَلَإٍ خَيْرٍ مِنْهُمْ، وَإِنْ تَقَرَّبَ شِبْرًا إِلَيَّ تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ بَاعًا، وَإِنْ أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً

"अल्लाह तआ़ला फरमाता हैः मैं अपने बन्दे की उस सोच के अनुसार हूँ जो वह मेरे बारे में रखता है और जब वह मुझे याद करता है तो मैं उस के साथ होता हूँ। अगर वह मुझे अपने दिल में याद करे तो मैं उसे अपने दिल में याद करता हूँ और अगर वह मुझे अपनी महफ़िल (सभा) में याद करे तो मैं उस से बहतर महफ़िल में उसे याद करता हूँ और अगर वह एक बालिश्त मेरे क़रीब आए तो मैं एक हाथ उस के करीब आता हूँ और अगर वह एक हाथ मेरे नज़दीक आए तो मैं

दोनों बाज़ूओं के फैलाव के बराबर उस के क़रीब आता हूँ। और अगर वह मेरे पास चल कर आए तो मैं दौड़ कर उस के पास आता हूँ।" (सहीह बुखारीः 3377)

مَنْ قَعَدَ مَقْعَدًا لَّمْ يَذْكُرِ اللهَ فِيْهِ كَانَتْ عَلَيْهِ مِنَ اللهِ تِرَةً وَّمَنِ اضْطَجَعَ مَضْجَعًا لَّمْ يَذْكُرِ اللهَ فِيْهِ كَانَتْ عَلَيْهِ مِنَ اللهِ تِرَةً

"जो आदमी किसी ऐसी जगह पर बैठा जिस में उस ने अल्लाह तआ़ला को याद न किया तो वह बैठक उस के लिए अल्लाह तआ़ला की तरफ से नुक़सान वाली होगी और जो आदमी किसी ऐसी जगह लेटा जहाँ उस ने अल्लाह तआ़ला को याद न किया वह (लेटना) उस के लिए अल्लाह तआ़ला की तरफ से नुक़सान वाला होगा।" (सुनन अबी दाऊदः 4856)

مَا جَلَسَ قَوْمٌ مَّجْلِسًا لَّمْ يَذْكُرُوا اللهَ فِيْهِ وَلَمْ يُصَلُّوْا عَلٰى نَبِيِّهِمْ إِلَّا كَانَ عَلَيْهِمْ تِرَةً فَإِنْ شَآءَ عَذَّبَهُمْ وَإِنْ شَآءَ غَفَرَ لَهُمْ

"लोग जब किसी महफिल में बैठें जहाँ वह अल्लाह तआ़ला को याद न करें और अपने नबी ﷺ पर दरूद न भेजें तो

वह (महफ़िल) उन के लिए नुक़सान वाली होगी। फिर अगर (अल्लाह तआ़ला) चाहे तो उन्हें अज़ाब दे और अगर चाहे तो उन्हें माफ़ कर दे।" (जामेअ़ तिर्मिज़ीः 3380)

مَا مِنْ قَوْمٍ يَّقُوْمُوْنَ مِنْ مَّجْلِسٍ لَّا يَذْكُرُوْنَ اللهَ فِيْهِ إِلَّا قَامُوْا عَنْ مِّثْلِ جِيْفَةِ حِمَارٍ، وَكَانَ لَهُمْ حَسْرَةً

"जब लोग किसी ऐसी बैठक से उठते हैं जिस में वह अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र न कर रहे हों तो वह मरे गधे (की बदबूदार लाश) जैसी चीज़ से उठते हैं और यह (उठना) उन के लिए नुक़्सान वाला होगा।" (सुनन अबी दाऊदः 4855)

مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِّنْ كِتَابِ اللهِ فَلَهُ بِهِ حَسَنَةٌ وَّالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا لَا أَقُوْلُ الٓمٓ حَرْفٌ، وَلٰكِنْ أَلِفٌ حَرْفٌ وَّلَامٌ حَرْفٌ وَّمِيْمٌ حَرْفٌ

"जो आदमी अल्लाह की किताब (कुरआन) में से एक ह़र्फ (शब्द) पढ़े तो उसके लिए इसके बदले एक नेकी है और वह नेकी अपने जैसी दस नेकियों के बराबर है मैं नहीं कहता

कि, **अलिफ़ लाम्-मीम्** एक हर्फ़ है बल्कि **अलिफ़** एक हर्फ़ है **लाम्**(दूसरा) हर्फ़ है और **मीम्**(तीसरा) हर्फ़ है।" (जामेअ़ तिर्मिज़ीः 2910)

أَيُّكُمْ يُحِبُّ أَنْ يَّغْدُوَ كُلَّ يَوْمٍ إِلٰى بُطْحَانَ أَوْ إِلَى الْعَقِيْقِ فَيَأْتِيَ مِنْهُ بِنَاقَتَيْنِ كَوْمَاوَيْنِ فِيْ غَيْرِ إِثْمٍ وَّلَا قَطْعِ رَحِمٍ؟ . فَقُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللهِ نُحِبُّ ذٰلِكَ قَالَ: أَفَلَا يَغْدُوْ أَحَدُكُمْ إِلَى الْمَسْجِدِ فَيَعْلَمَ أَوْ يَقْرَأَ اٰيَتَيْنِ مِنْ كِتَابِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ خَيْرٌ لَّهُ مِنْ نَّاقَتَيْنِ وَثَلٰثٌ خَيْرٌ لَّهُ مِنْ ثَلَاثٍ وَّأَرْبَعٌ خَيْرٌ لَّهُ مِنْ أَرْبَعٍ وَّمِنْ أَعْدَادِهِنَّ مِنَ الْإِبِلِ

"तुम में से कौन यह पसन्द करेगा कि वह हर रोज़ बुतहान या अक़ीक़ की तरफ जाऐ और वहाँ से मोटी मोटी कोहानों वाली दो ऊँटनियाँ लेकर आए, इसमें वह न कोई गुनाह करे न रिश्तों को काटे। हम ने कहा या रसूलल्लाह ﷺ हम (सब) यह पसन्द करते हैं। आप ने फरमायाः तुम में से कोई मस्जिद की तरफ क्यों नहीं जाता कि अल्लाह तआ़ला की किताब में

से दो आयतें सीखे या पढ़े यह उसके लिए दो ऊँटनियों से बहतर हैं और तीन आयतें उस के लिए तीन (ऊँटनियों) से बहतर हैं, चार (आयतें) चार (ऊँटनियों) से बहतर हैं और (जितनी भी आयतें हो) उतने ऊँटों से (बहतर हैं)।"
(सहीह मुस्लिमः 803)

नींद से जागने के बाद की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُوْرُ

अल-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ि अह्याना बअ्-द मा अमातना व इलैहिन्-नुशूर० (बुख़ारी फ़त्ह के साथ, मुस्लिम)

सब तरह की तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिस ने हमें मारने के बाद ज़िन्दा किया और उसी की तरफ़ उठ कर जाना है।

❁ रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो आदमी रात को किसी भी वक़्त जागे और जागने के बाद यह दुआ पढ़े तो उसे मआ़फ़ कर दिया जाता है, फिर अगर कोई दुआ करे तो उस की दुआ

क़ुबूल होती है, फिर अगर उठ कर वुज़ू करे और नमाज़ पढ़े तो उस की नमाज़ क़ुबूल होती है।

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ، رَبِّ اغْفِرْ لِيْ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल्-मुल्कु व लहुल्-हम्दु, व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर। सुब्हा-नल्लाहि वल्-हमदु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर। वला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्-लाहिल्-अलिय्यिल्-अज़ीम रब्बिग़्फ़िर्ली।

(बुख़ारी फ़त्ह के साथ, स़हीह इब्ने माजह)

अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद (जिस को है। उस का कोई शरीक नहीं। उसी की बादशाहत है और उसी के लिए ही हर तरह की तअ़रीफ़ और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है। पाक है अल्लाह तआ़ला और सब तअ़रीफ़ अल्लाह

ही के लिए है। अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा)मअ़बूद नहीं। और अल्लाह सब से बड़ा है। और बुलन्दी और अ़ज़्मत वाले अल्लाह की तौफ़ीक़ के बिना (बुराई से बचने की) हिम्मत है न (नेकी करने की) ताक़त। ऐ मेरे रब मुझे मआ़फ़ कर दे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ فِیْ جَسَدِیْ، وَرَدَّ عَلَیَّ رُوْحِیْ، وَأَذِنَ لِیْ بِذِکْرِهٖ

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानी फ़ी ज-सदी व रद्-द अ़लैय्-य रूही व अज़ि-न ली बिज़िक्रिही० (सहीह तिर्मिज़ी 5/473)

हर तरह की तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिस ने मेरे बदन को सुख दिया, मेरी रूह (प्राण) को मेरे बदन में लोटाया और मुझे अपनी याद की इजाज़त दी।

﴿ اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّیْلِ وَ النَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ۚۙ اَلَّذِیْنَ یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰی جُنُوْبِهِمْ وَ یَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا

خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○ رَبَّنَآ اِنَّكَ
مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ وَ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ○
رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ
فَاٰمَنَّا ۗ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ كَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَ تَوَفَّنَا مَعَ
الْاَبْرَارِ ۚ رَبَّنَا وَ اٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَ لَا تُخْزِنَا يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ۗ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ○ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ
لَآ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْ
بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَ اُوْذُوْا فِيْ
سَبِيْلِيْ وَ قٰتَلُوْا وَ قُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ
لَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ وَ
اللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ○ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
فِي الْبِلَادِ ۗ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۖ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۗ وَبِئْسَ الْمِهَادُ
○ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ
لِّلْاَبْرَارِ ○ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْكُمْ وَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ
الْحِسَابِ ○ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَ صَابِرُوْا وَ رَابِطُوْا
وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ○ قف

इन्-न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्-अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि ल - आयातिल्-लिउलिल्-अल्बाब० अल्लज़ी-न यज़्कुरूनल्ला-ह क़ियामंव् वकुअूदंव्-व अला जुनूबिहिम् व य-त-फ़क्करू-न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्-अर्ज़ि रब्बना मा ख़-लक़्-त हाज़ा बातिलन् सुब्हा न-क फ़क़िना अज़ाबन्नार० रब्बना इन्न-क मन् तुद्ख़िलिन्ना-र फ़-क़द् अख़्ज़ै तहू वमा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् अन्सार० रब्बना इन्नना समिअ्-ना मुनादियंय्युनादी लिल ईमानि अन् आमिनू बिरब्बिकुम् फ़आमन्ना रब्बना फ़ग़्फ़िरलना ज़ुनूबना

वकफ़्फ़र् अन्ना सय्यिआतिना वतवफ़्फ़ना मअल्-अबरार०रब्बना व आतिना मा वअत्तना अला रुसुलि-क व ला तुख़्ज़िना यौमल्-क़ियामति इन्न-क लातुख़्लिफ़ुल्-मीआद० फ़स्तजा-ब लहुम् रब्बुहुम् अन्नी ला उज़ीअु अ-म-ल आमिलिम्-मिन्कुम् मिन् ज़-करिन् औ उन्सा बअ-ज़ुकुम् मिम्बअ-ज़िन् फ़ल्लज़ी-न हाजरू व उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व ऊज़ू फ़ी सबीली वक़ा तलू व क़ुतिलू लउकफ़्फ़रन्-न अन्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल उद्ख़िलन्न-हुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तहल्-अन्हारू सवाबम्-मिन् इन्दिल्लाहि वल्लाहु इन्दहु हुस्नुस्सवाब० ला यगुर्न्न-क तक़ल्लुबुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़िलबिलाद० मताअुन् क़लीलुन् सुम्-म मअ्वाहुम् जहन्न-मु वबिअ् सल्मिहाद० लाकिनिल्-लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तहितहल्- अन्हारू ख़ालिदी-न फ़ीहा नुज़ुलम्मिन् इन्दिल्लाहि व मा इन्दल्लाहि ख़ैरुललिल्-अबरार० व इन्-न मिन् अहिलल् किताबि लमंय्युअ्मिनु बिल्लाहि व मा उन्ज़िल-ल इलैकुम् व मा उन्ज़िल-ल इलैहिम् ख़ाशिअी-न

लिल्लाहि ला यशतरू-न बि आयातिल्लाहि स़-म-नन् क़लीलन् उला-इ-क लहुम् अजरुहुम् इन्-द रब्बिहिम् इन्नल्ला-ह सरीअुल् हिसाब० या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस़्बिरू व स़ाबिरू व राबितू वत्तकुल्ला-ह ल-अल्लकुम् तुफ़्लिहून० (सूरः आले इमरान 3 /190-200) (बुख़ारी फ़त्ह के साथ, मुस्लिम)

बेशक आसमान और ज़मीन की पैदाइश और रात दिन के बदल बदल कर आने जाने में बड़ी निशानियाँ हैं (उन लोगों के लिए) जो समझ बूझ वाले हैं। वह लोग जो अल्लाह को उठते, बैठते और लेटे (हर हाल में)याद करते हैं और सोच विचार करते हैं आसमानों और ज़मीनों की पैदाइश में(और कहते हैं) ऐ हमारे रब! नहीं बनाया तू ने इस (मख़्लूक़) को बेफ़ाएदा तू पाक है (क़यामत के दिन) तू हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचाले। ऐ हमारे परवरदिगार! बेशक जिसे तू ने दोज़ख़ में ड़ाला उसे तू ने रुस्वा कर दिया और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं है। ऐ हमारे रब! बेशक हम ने एक पुकारने वाले को ईमान की पुकार लगाते सुना कि तुम ईमान ले आओ अपने

रब पर तो हम ईमान ले आए इसलिए ऐ हमारे रब! तू हमारे गुनाह मआ़फ़ कर और हम से हमारी सब बुराइयाँ मिटा दे और हमें मौत दे नेक बन्दों के साथ। ऐ रब! हमें वह कुछ दे जिस का तू ने हम से अपने रसूलों के ज़रिए वादा किया और क़यामत के दिन हमें रुस्वा न हाल में उन्हें ऐसी जन्नतों में दाख़िल करूँगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी (यह सब कुछ) अल्लाह की तरफ़ से बदला है और अल्लाह तआ़ला के पास बहतरीन बदला है। तुमहें कभी धोका न दे काफ़िरों का शहरों में घूमना फिरना। यह फ़ाएदा तो मआ़मूली है, फिर उस के बाद उन का ठिकाना दोज़ख़ है और (वह) बहुत बुरा ठिकाना है। लेकिन जो लोग अपने रब से डर गए उन के लिए ऐसे बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, (यह सब कुछ) अल्लाह की तरफ़ से महमानी है, और जो कुछ अल्लाह के पास है वह नेकियों के लिए बहुत बहतर है। और यक़ीनन कुछ अहले किताब (यहूदी और ईसाई) ऐसे हैं जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो तुम्हारी तरफ़ उतारी गई और उस चीज़ पर जो उन की तरफ़ उतारी गई,

अल्लाह से ड़रते हैं, अल्लाह तआ़ला की आयतों को थोड़ी सी क़ीमत के बदले नहीं बेच देते यही लोग हैं जिन के लिए उन के रब के यहाँ बहुत अच्छा बदला है कुछ शक नहीं कि अल्लाह तआ़ला जल्द हिसाब लेने वाला है। ऐ मोमिनो! सब्र करो सब्र के साथ (दुश्मनों का) मुक़ाबला करो और ड़टे रहो और अल्लाह से ड़रो ताकि तुम कामयाब हो जाओ।

कपड़ा पहनने की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ هٰذَا الثَّوْبَ وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी हाज़ा (अस्सौ-ब) व र-ज़-क़नीहि मिन् ग़ैरि हौलिम् -मिन्नी वला क़ुव्वतिन्० (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजह, इर्वाउलग़लील)

सब तरह की तआ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिस ने मुझे यह (कपड़ा) पहनाया और उस ने मुझे मेरी अपनी क़ुव्वत और ताक़त के बग़ैर दिया।

नया कपड़ा पहनने की दुआ

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ كَسَوْتَنِيْهِ، أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِهٖ وَخَيْرِ مَا صُنِعَ لَهٗ، وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهٗ

अल्लाहुम्-म लकल हम्दु अन्-त कसौ तनीहि, अस-अलु-क मिन् ख़ैरिही व ख़ैरि मा सुनि-अ लहू व अऊज़ुबि-क मिन् शर्रिही व शर्रि मा सुनि-अ लहू० (अबु दाऊद, तिर्मिज़ी, शमाइलुत्-तिर्मिज़ी)

ऐ अल्लाह! तेरे ही लिए हर तरह की तअरीफ़ है, तू ने ही मुझे यह पहनाया, मैं तुझ से इस की भलाई का सवाल करता हूँ और उस काम की भलाई का जिस के लिए इसे बनाया गया है, और मैं तेरी पनाह में आता हूँ इस की बुराई से और उस काम की बुराई से जिस के लिए इसे बनाया गया है।

नया कपड़ा पहनने वाले के लिए दुआ

تُبْلِيْ وَيُخْلِفُ اللهُ تَعَالٰى

तुब्ली व युख़्लिफ़ुल्लाहु तआला० (इब्ने माजह, बग़वी)

तुम इसे पुराना करो और अल्लाह तआ़ला (तुम्हें) इस के बदले और दे।

اِلْبَسْ جَدِيْدًا وَّعِشْ حَمِيْدًا وَّمُتْ شَهِيْدًا

इलबस् जदीदंव्-व झिश् हमीदंव्-व मुत्शहीदन्० (सहीह इब्ने माजह)

नया कपड़ा पहनो तअ़रीफ़ के लाएक ज़िन्दगी गुज़ारो और शहादत की मौत पाओ।

कपड़ा उतारते वक़्त क्या पढ़े ?

بِسْمِ اللهِ

बिस्मिल्लाह० (तिर्मिज़ी, सहीहुल जामेअ़, इर्वाउल ग़लील)

अल्लाह तआ़ला के नाम के साथ।

शौचालय में दाख़िल होने की दुआ

بِسْمِ اللهِ اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَآئِثِ

बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्-म इन्नी अऊ़ज़ुबि-क मिनल ख़ुबुसि वल्-ख़बाइस० (बुख़ारी, मुस्लिम)

अल्लाह के नाम के साथ, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूँ ख़बीसों और ख़बीसियों से।

शौचालय से निकलने की दुआ

غُفْرَانَكَ

गुफ़्रानक० (तिर्मिज़ी, तख़्रीज ज़ादुल मआद)

(ऐ अल्लाह! मैं) तेरी बख़्शिश (चाहता हूँ)।

वुज़ू से पहले की दुआ

بِسْمِ اللهِ

बिस्मिल्लाह० (अबुदाऊद, इब्ने माजह, अहमद, इर्वाउल ग़लील)

अल्लाह तआला के नाम के साथ।

वुज़ू के बाद की दुआ

أَشْهَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन् अब्दुहू व रसूलुहू० (मुस्लिम)

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह अकेले के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं है उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उस के बन्दे और उस के रसूल हैं।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ

अल्लाहुम्-मज्अलनी मिनत्तव्वाबी-न वज्अल्नी मिनल मु-त-तह्हिरीन० (तिर्मिज़ी)

ऐ अल्लाह! मुझे बहुत तौबा करने वालों में से बना दे और मुझे पाक साफ़ रहने वालों में से बना दे।

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوْبُ إِلَيْكَ

सुब्हान-कल्लाहुम्-म व बिहम्दि-क अश्हदु अल्ला इला-ह इल्ला अन्-त, अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु इलै-क० (अ़म-लुल यौम वल्लैल:नसाई, इर्वाउल ग़लील)

ऐ अल्लाह! मैं तेरी तअ़रीफ़ के साथ तेरी पाकी बयान करता हूँ मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, मैं तुझ से मआ़फ़ी माँगता हूँ और तुझ से तौबा करता हूँ।

घर से निकलते वक़्त की दुआएं

بِسْمِ اللهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ

बिस्मिल्लाहि तवक्कलतु अलल्लाहि व ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह० (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

(मैं इस घर से) अल्लाह के नाम के साथ (निकल रहा हूँ) मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया। अल्लाह की मदद के बिना बुराई से बचने की हिम्मत है न नेकी करने की ताक़त।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اَضِلَّ، اَوْ اُضَلَّ، اَوْ اَزِلَّ، اَوْ اُزَلَّ، اَوْ اَظْلِمَ، اَوْ اُظْلَمَ، اَوْ اَجْهَلَ، اَوْ يُجْهَلَ عَلَيَّ

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊ़ज़ुबि-क अन् अज़िल्- ल अव् उज़ल्- ल अव् अज़िल्- ल अव् उज़ल्-ल अव् अज़िल-म अव् उज़ ल-म अव् अज ह-ल अव् युज ह-ल अलय्-य०
(अबूदाऊद, सहीह तिर्मिज़ी, सहीह इब्ने माजह)

ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूँ (इस बात से) कि मैं गुमराह हो जाऊँ या मुझे गुमराह कर दिया जाए, मैं फिसल

जाऊँ या मुझे फिस्ला दिया जाए, मैं ज़ुल्म करूँ या मुझ पर ज़ुल्म किया जाए, मैं किसी से जहालत और नादानी करुँ या मेरे साथ जहालत या नादानी की जाए।

घर में दाख़िल होते वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡۤ اَسۡاَلُكَ خَيۡرَ الۡمَوۡلَجِ وَ خَيۡرَ الۡمَخۡرَجِ. بِسۡمِ اللّٰهِ وَلَجۡنَا، وَبِسۡمِ اللّٰهِ خَرَجۡنَا، وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلۡنَا

बिस्मिल्लाहि व लज्ना व बिस्मिल्लाहि ख़-रज्ना व अलल्-लाहि रब्बिना तवक्कलना० (अबूदाऊद)

अल्लाह के नाम के साथ हम दाख़िल हुए और अल्लाह ही के नाम के साथ हम निकले और अपने रब पर ही हम ने भरोसा किया।

फिर अपने घर वालों को सलाम कहे।

मस्जिद की तरफ़ जाने की दुआ

اَللّٰهُمَّ اجۡعَلۡ فِیۡ قَلۡبِیۡ نُوۡرًا، وَّفِیۡ لِسَانِیۡ نُوۡرًا، وَّفِیۡ سَمۡعِیۡ نُوۡرًا، وَّفِیۡ بَصَرِیۡ نُوۡرًا، وَّمِنۡ فَوۡقِیۡ نُوۡرًا، وَّمِنۡ تَحۡتِیۡ نُوۡرًا، وَّعَنۡ يَّمِيۡنِیۡ نُوۡرًا،

وَّعَنْ شِمَالِيْ نُوْرًا، وَّمِنْ أَمَامِيْ نُوْرًا، وَّمِنْ خَلْفِيْ نُوْرًا، وَّاجْعَلْ فِيْ نَفْسِيْ نُوْرًا، وَّأَعْظِمْ لِيْ نُوْرًا، وَّعَظِّمْ لِيْ نُوْرًا، وَّاجْعَلْ لِيْ نُوْرًا، وَّاجْعَلْنِيْ نُوْرًا، اَللّٰهُمَّ أَعْطِنِيْ نُوْرًا، وَّاجْعَلْ فِيْ عَصَبِيْ نُوْرًا، وَّفِيْ لَحْمِيْ نُوْرًا، وَّفِيْ دَمِيْ نُوْرًا، وَّفِيْ شَعْرِيْ نُوْرًا، وَّفِيْ بَشَرِيْ نُوْرًا، اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِيْ نُوْرًا فِيْ قَبْرِيْ وَنُوْرًا فِيْ عِظَامِيْ وَزِدْنِيْ نُوْرًا، وَّزِدْنِيْ نُوْرًا، وَّزِدْنِيْ نُوْرًا وَّهَبْ لِيْ نُوْرًا عَلٰى نُوْرٍ

अल्लाहुम्-मज्अल् फ़ी क़ल्बी नूरंव्-व फ़ी लिसानी नूरंव्-व फ़ी सम्अी नूरंव्-व फ़ी ब-सरी नूरंव्-व मिन् फ़ौक़ी नूरंव्-व मिन् तहती नूरंव्-व अंय्यमीनी नूरंव्-व अन् शिमाली नूरंव्-व मिन् अमामी नूरंव्-व मिन् ख़ल्फ़ी नूरंव्-वज्अल् फ़ी नफ़्सी नूरंव्-व अअ्ज़िम् ली नूरंव्-व अज़्ज़िम् ली नूरंव्-वज्अल्-ली नूरंव्-वज्अल्नी नूरन्, अल्लाहुम्-म अअ्तिनी नूरंव्-वज्अल् फ़ी अ-स़बी नूरंव्-व फ़ी लहमी नूरंव्-व फ़ी दमी नूरंव्-व फ़ी शअ्री नूरंव्-व फ़ी ब-शरी नूरन्, अल्लाहुम्मजअल्-ली नूरन् फ़ी क़बरी

व नूरन् फ़ी झ़िज़ामी व ज़िद्नी नूरंव्-व ज़िद्नी नूरंव्-व ज़िद्नी नूरंव्-व हब् ली नूरन् अला नुरिन्० (फ़त्हुलबारी)

ऐ अल्लाह! मेरे दिल में नूर पैदा कर और मेरी ज़ुबान में भी नूर, मेरे कानों में भी नूर और मेरी आँखों में भी नूर, मेरे ऊपर भी नूर और मेरे नीचे भी नूर, मेरे दाएं भी नूर और मेरे बाएं भी नूर मेरे सामने भी नूर और मेरे पीछे भी नूर और पैदा कर मेरे नफ़्स में भी नूर, और मुझे बहुत नूर दे और मुझे बहुत ज़्यादा नूर दे और मेरे लिए (हर तरफ़) नूर कर दे और मुझे नूर बना दे। ऐ अल्लाह! मुझे नूर दे और मेरे पट्ठों में नूर बना दे, मेरे गोश्त में नूर बना दे, मेरे ख़ून में भी नूर बना दे। ऐ अल्लाह! मेरे लिए नूर बना दे मेरी क़ब्र में और नूर बना दे मेरी हड्डियों में और ज़्यादा कर मेरा नूर और ज़्यादा कर मेरा नूर और ज़्यादा कर मेरा नूर और दे मुझे बहुत ज़्यादा नूर और दे मुझे नूर पर नूर।

मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ

أَعُوْذُ بِاللهِ الْعَظِيْمِ، وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ، وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ،

مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللهِ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

अअ़ूज़ु बिल्लाहिल अ़ज़ीमि व बिवज्हिहिल्-करीमि व सुल्तानिहिल्-क़दीमि मिनश्-शैतानिर्रजीमि, बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि, अल्लाहुम्-मफ़्तहली अब्वा-ब रहमति-क० (मुस्लिम, अबूदाऊद)

मैं अ़ज़्मत वाले अल्लाह, उस के करीम चेहरे और उसकी पुरानी सल्तनत की हिफ़ाज़त में आता हूँ शैतान मर्दूद से, अल्लाह के नाम के साथ (दाख़िल होता हूँ) और दरुद और सलाम हो रसूल ﷺ पर। ऐ अल्लाह! मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोलदे।

मस्जिद से निकलने की दुआ

بِسْمِ اللهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ، اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ، اَللّٰهُمَّ اعْصِمْنِيْ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाहि अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क मिन् फ़ज़्लि-क अल्लाहुम्-मअसिम्नी मिनश्- शैतानिर्रजीम० (अबूदाऊद)

अल्लाह के नाम के साथ (मैं निकलता हूँ) और दरुद और सलाम हो रसूलुल्लाह ﷺ पर। ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरा फ़ज़्ल माँगता हूँ। ऐ अल्लाह मुझे बचा ले शैतान मर्दूद से।

अज़ान के वक़्त की दुआ

अज़ान सुन कर वही अल्फ़ाज़ कहे जो मुअज़्ज़िन (अज़ान देने वाला) कहता है। लेकिन

حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ، حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

हय्-य अलस्सलाह, और हय्-य अलल्फ़लाह के जवाब में कहे।

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ

ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह०

अल्लाह की तौफ़ीक़ के बग़ैर बुराई से बचने की हिम्मत है न नेकी करने की ताक़त।

यह दुआ मुअज़्जिन के शहादत के कलमे कहने के बाद पढ़े। (इब्ने ख़ुज़ैमह)

وَأَنَا أَشْهَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، رَضِيْتُ بِاللهِ رَبًّا، وَّبِمُحَمَّدٍ رَّسُوْلًا وَّبِالْإِسْلَامِ دِيْنًا

व अना अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू व अन्-न मुहम्मदन् अब्दुहू व रसूलुहू, रज़ीतु बिल्लाहि रब्बंव्-व बिमुहम्मदिर्- रसूलंव्- वबिल इस्लामि दीना० (मुस्लिम)

और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह अकेले के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं उस का कोई शरीक नहीं और मुहम्मद ﷺ उस के बन्दे और उस के रसूल हैं, मैं अल्लाह तआ़ला के रब होने पर राज़ी हूँ, मुहम्मद ﷺ के रसूल होने और इस्लाम के दीन होने पर।

❁ मुअज़्ज़िन का जवाब देने के बाद नबी करीम ﷺ पर दरूद भेजे। (मुस्लिम)

अज़ान के बाद की दुआ

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّآمَّةِ، وَالصَّلٰوةِ الْقَآئِمَةِ، اٰتِ مُحَمَّدَا نِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ، وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَا نِ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ، إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادِ

अल्लाहुम्-म रब्-ब हाज़िहिद्-दअ़्-वतित्-ताम्-मति वस्सलातिल्-क़ाइमति, आति मुहम्म द निल्- वसी-ल-त वल्-फ़ज़ी-ल-त वब्-अ़स्हु मक़ाम्म्-महमू द निल्लज़ी वअ़त्तहू (इन्न-क ला तुख़्लिफ़ुल मीआद) (बुख़ारी, बैहक़ी)

ऐ अल्लाह! ऐ इस पूरी दअ़वत (अज़ान) और इस खड़ी होने वाली नमाज़ के रब ! मुहम्मद ﷺ को ख़ास़ नज़्दीकी और ख़ास़ फ़ज़ीलत दे और उन्हें उस मक़ामे महमूद पर पहुँचा दे जिस का तूने उन से वअ़दा किया है। यक़ीनन तू वअ़दा ख़िलाफ़ी नहीं करता।

❁ अज़ान और अक़ामत (तक्बीर) के बीच अपने लिए दुआ करे क्यों कि उस वक़्त दुआ रद्द नहीं होती। (तिर्मिज़ी, अबूदाऊद, अहमद, इर्वाउल ग़लील)

नमाज़ शुरु करने की दुआएं

اَللّٰهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَّ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ، اَللّٰهُمَّ نَقِّنِيْ مِنْ خَطَايَايَ كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ، اَللّٰهُمَّ اغْسِلْنِيْ مِنْ خَطَايَايَ بِالثَّلْجِ وَالْمَآءِ وَالْبَرَدِ

अल्लाहुम्-म बाअ़िद् बैनी व बै-न ख़ताया-य कमा बाअ़त्-त बैनलमश्रिक़ि वलमग़्रिबि अल्लाहुम्-म नक़्क़िनी मिन् ख़ताया-य कमा युनक़्क़ स़ौबुल् अबयज़ु मिनद्-द-न-सि अल्लाहुम्-मग़्सिलनी मिन् ख़ताया-य बिस़्सलजी वल माइ वल बरद० (बुख़ारी, मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! मेरे और मेरे गुनाहों के बीच दूरी कर दे, जैसे दूरी की तू ने मश्रिक़ और मग़्रिब के बीच। ऐ अल्लाह! मुझे साफ़ करदे मेरे गुनाहों से जिस तरह साफ़ किया जाता है सफ़ेद कपड़ा मैल से। ऐ अल्लाह! मुझे धो दे मेरे गुनाहों से बर्फ़ और पानी और ओलों के साथ।

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، وَتَبَارَكَ اسْمُكَ، وَتَعَالٰى جَدُّكَ، وَلَآ إِلٰهَ غَيْرُكَ

सुब्हा-न-कल्लाहुम्-म वबिहम्दि-क व तबार-कस्मु-क वतआला जद्दु-क वला इला-ह ग़ैरुक० (अबूदाऊद, नसाई, तिर्मिज़ी, इब्ने माजह)

ऐ अल्लाह! मैं तेरी पाकी बयान करता हूँ तेरी तअरीफ़ के साथ और तेरा नाम बरकत वाला है और तेरी शान बुलन्द है और तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं है।

وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ، إِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ، وَمَحْيَايَ، وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ، لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ، اَللّٰهُمَّ أَنْتَ الْمَلِكُ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ، أَنْتَ رَبِّيْ وَأَنَا عَبْدُكَ، ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَاعْتَرَفْتُ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْ لِيْ ذُنُوْبِيْ جَمِيْعًا إِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّآ أَنْتَ، وَاهْدِنِيْ لِأَحْسَنِ الْأَخْلَاقِ لَا يَهْدِيْ

لِأَحْسَنِهَا إِلَّا أَنْتَ، وَاصْرِفْ عَنِّيْ سَيِّئَهَا لَا يَصْرِفُ عَنِّيْ سَيِّئَهَا إِلَّا أَنْتَ، لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ، وَالْخَيْرُ كُلُّهُ بِيَدَيْكَ، وَالشَّرُّ لَيْسَ إِلَيْكَ، أَنَا بِكَ وَإِلَيْكَ، تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوْبُ إِلَيْكَ

वज्जहतु वज्हि-य लिल्लज़ी फ़-त-रस्समावाति वलअर्-ज़ हनीफ़ंव्-वमा अना मिनल्-मुश्रिकीन इन्-न स़लाती व नुसुकी व महया-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन, लाशरी-क लहू वबिज़ालि-क उमिर्तु वअना मिनल्-मुस्लिमीन अल्लाहुम्-म अन्-तलमलिकु ला इला-ह इल्ला अन्-त, अन्-त रब्बी व अना अब्दु-क, ज़लम्तु नफ़्सी वअ् तरफ़्तु बिज़म्बी फ़ग़िफ़रली ज़ुनूबी जमीअन् इन्नहू ला यग़िफ़रुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन्-त वहदिनी लिअहसनिल्-अख़लाक़ि ला यहदी लिअह्-सनिहा इल्ला अन्-त, वस़्रिफ़ अन्नी सय्यिअहा ला यस़्रिफ़ु अन्नी सय्यिअहा इल्ला अन्-त लब्बै-क व सअ्दै-क वलखैरु

कुल्लुहू बियदै-क वश्शर्रु लै-स इलै-क अना बि-क व इलै-क तबारक-त व तआलै-त अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु इलै-क० (मुस्लिम)

मैं ने अपने चेहरे को उस हस्ती की तरफ़ फेर दिया जिस ने आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया एक तरफ़ हो कर और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ। बेशक मेरी नमाज़, मेरी क़ुरबानी और मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है। उस का कोई शरीक नहीं और इसी बात का मुझे हुक्म हुआ है और मैं अल्लाह के फ़रमांबर्दारों में से हूँ। ऐ अल्लाह! तू ही बादशाह है तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं है तू मेरा रब है और मैं तेरा बन्दा हूँ मैं ने अपने आप पर ज़ुल्म किया और मैं ने माना अपने गुनाहों को, फिर तू मेरे सब गुनाह मआ़फ़ कर दे और सच्ची बात यह है कि तेरे सिवा कोई भी गुनाह मआ़फ़ नहीं कर सकता और मुझे सब से अच्छे अख़लाक़ की हिदायत दे, तेरे सिवा कोई भी अच्छे अख़लाक़ की हिदायत नहीं दे सकता। और हटा दे मुझ से सब बुरे अख़लाक़ (कि) तेरे सिवा कोई भी मुझ से बुरे अख़लाक़ नहीं

हटा सकता। मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ और तमाम भलाइयाँ तेरे हाथों में हैं और बुराई तेरी तरफ़ नहीं लगाई जा सकती मैं तेरी हिदायत से हूँ और तेरी तरफ़ हूँ। तू बरकत वाला और बुलन्द है। मैं तुझ से मआफ़ी माँगता हूँ और तेरे सामने तौबा करता हूँ।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ جِبْرَائِيْلَ، وَمِيْكَائِيْلَ، وَإِسْرَافِيْلَ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ، عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ، اِهْدِنِيْ لِمَا اخْتُلِفَ فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِكَ إِنَّكَ تَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ

अल्लाहुम्-म रब ब जिबराई-ल व मीकाई-ल व इस्राफ़ी-ल फ़ातिरस्समावाति वलअर्ज़ि आलिमल्-ग़ैबि वश्शहादति अन्-त तहकुमु बै-न इबादि-क फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ू-न, इहदिनी लिमख़्तुलि-फ़ फ़ीहि मिनल्-हक़्क़ बिइज़नि-क इन्न-क तहदी मन् तशाअु इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम० (मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! ऐ जिबराईल और मीकाईल और इसराफ़ील के परवर्दिगार! आसमानों और ज़मीनों के पैदा करने वाले! गायब और हाज़िर के जानने वाले! तू ही अपने बन्दों के बीच उस चीज़ का फ़ैसला करेगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते रहे थे, हक़ की जिन बातों में इख़्तिलाफ़ हो गया है तू मुझे अपने हुक्म के साथ उन में हक़ की तरफ़ हिदायत दे। यक़ीनन तू ही जिसे चाहे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है।

اَللّٰهُ أَكْبَرُ كَبِيْرًا، اَللّٰهُ أَكْبَرُ كَبِيْرًا، اَللّٰهُ أَكْبَرُ كَبِيْرًا، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا، وَسُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّأَصِيْلًا

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ مِنْ نَفْخِهٖ، وَنَفْثِهٖ، وَهَمْزِهٖ

अल्लाहुअक्बर कबीरा, अल्लाहुअक्बर कबीरा, अल्लाहुअक्बर कबीरंव्-वलहम्दु लिल्लाहि कसीरंव्-वलहम्दु लिल्लाहि कसीरंव्- वल्हम्दु लिल्लाहि कसीरंव्-व सुब्हानल्लाहि बुक्रतंव्- व असीला० (तीन बार)

अऊज़ू बिल्लाहि मिनश्-शैतानिर्रजीमि मिन् नफ़्ख़िही व नफ़्सिही व हम्ज़िही० (अबूदाऊद, इब्ने माजह, अहमद)

अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा है। अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा है। अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा है। और सब तरह की बहुत ज़्यादा तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए है और सब तरह की बहुत ज़्यादा तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए है और सब तरह की बहुत ज़्यादा तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए है। और मैं सुब्ह व शाम अल्लाह की पाकी बयान करता हूँ। मैं पनाह माँगता हूँ अल्लाह तआ़ला की शैतान मर्दूद से उस की फूँक, उस की थूक और उस के चोके से।

❁ नबी करीम ﷺ जब रात को तहज्जुद के लिए उठते तो फ़रमाते:

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ نُورُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ قَيِّمُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ

لَكَ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ مَلِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ الْحَقُّ، وَوَعْدُكَ الْحَقُّ، وَقَوْلُكَ الْحَقُّ، وَلِقَآؤُكَ الْحَقُّ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ، وَّالنَّارُ حَقٌّ، وَّالنَّبِيُّوْنَ حَقٌّ، وَّمُحَمَّدٌ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَقٌّ، وَّالسَّاعَةُ حَقٌّ اَللّٰهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ، وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ، وَبِكَ اٰمَنْتُ، وَإِلَيْكَ أَنَبْتُ، وَبِكَ خَاصَمْتُ، وَإِلَيْكَ حَاكَمْتُ، فَاغْفِرْ لِيْ مَا قَدَّمْتُ، وَمَآ أَخَّرْتُ، وَمَآ أَسْرَرْتُ، وَمَآ أَعْلَنْتُ أَنْتَ إِلٰهِيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ

अल्लाहुम्-म ल-कलहम्दु अन्-त नूरुस्समावाति वलअर्ज़ि व मन् फ़ीहिन्-न व ल-कलहम्दु अन्-त क़य्यिमुस्समावाति वलअर्ज़ि व मन् फ़ीहिन्-न व ल-कलहम्दु अन्-त रब्बुस्समावाति वल अर्ज़ि व मन् फ़ीहिन्-न व ल-कलहम्दु ल-क मुलकुस्समावाति वलअर्ज़ि वमन् फ़ीहिन्-न व ल-कलहम्दु अन्-त मलिकुस्समावाति वलअर्ज़ि व ल-

कलहम्दु, अन्-तलहक़्क़ु व वअ्दु-कल-हक़्क़ु व क़ौलुकल-हक़्क़ु व लिक़ाउकल-हक़्क़ु वलजन्नतु हक़्क़ुंव्-वन्नारु हक़्क़ुंव्- वन्नबिय्यू-न हक़्क़ुंव्-व मुहम्मदुन् हक़्क़ुंव्- वस्साअतु हक़्क़ुन् अल्लाहुम्-म ल-क असलम्तु व अलै-क तवक्कलतु व बि-क आमन्तु व इलै-क अनब्तु व बि-क ख़ासम्तु व इलै-क हाकम्तु फ़ग़्फ़िर्ली मा क़द्दम्तु व मा अख़्ख़र्तु व मा अस्रर्तु व मा अअ्लन्तु अन्-तलमुक़द्दिमु व अन्-तलमुअख़्ख़रु ला इला-ह इल्ला अन्-त अन्-त इलाही ला इला-ह इल्ला अन्-त० (बुख़ारी फ़त्ह के साथ, मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! तेरे ही लिए सब तरह की तअ़रीफ़ है तू नूर है आसमानों का और ज़मीनों का और (उन चीज़ों का नूर) जो इन में हैं और तेरे लिए ही सब तरह की तअ़रीफ़ है तू इन्तज़ाम करने वाला है आसमानों और ज़मीनों का और जो कुछ भी इन में है। और तेरे लिए ही सब तरह की तअ़रीफ़ है। तू ही रब है आसमानों और ज़मीनों का और इन में मौजूद चीज़ों का और तेरे लिए ही सब तरह की तअ़रीफ़ है। तेरे लिए बादशाहत है

आसमानों और ज़मीनों की और जो कुछ इन में है और तेरे लिए ही सब तरह की तअरीफ़ है तू बादशाह है आसमानों और ज़मीनों का। और तेरे लिए ही सब तरह की तअरीफ़ है। तू हक़ है तेरा वअदा हक़ है। और तेरी बात हक़ है। और तेरी मुलाक़ात हक़ है। जन्नत हक़ है और जहन्नम हक़ है। और पैग़म्बर हक़ हैं और मुहम्मद ﷺ हक़ हैं और क़यामत हक़ है। ऐ अल्लाह! तेरे लिए ही मैं फ़रमांबरदार हुआ और तुझी पर मैं ने भरोसा किया और तुझी पर मैं ईमान लाया और तेरी ही तरफ़ पलटा और तेरी मदद के साथ मैं ने (दुश्मन) से झगड़ा किया और तेरी तरफ़ ही फ़ैसला ले कर आया। तू मुझे मआफ़ कर दे जो कुछ मैं ने पहले किया है और जो कुछ बाद में किया, जो मैं ने छुपा कर किया और जो कुछ दिखा कर किया (सब मआफ़ कर दे)। तू ही आगे करने वाला और तू ही पीछे करने वाला है। तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअबूद नहीं। तू ही (सच्चा) मअबूद है, तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअबूद नहीं।

रुकूअ की दुआएं

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ

सुब्हा-न रब्बियल्-अज़ीम० (अबूदाऊद, नसाई, इब्ने माजह, अहमद, सहीहुत तिर्मिज़ी)

पाक है मेरा रब अज़्मत वाला (महान)। (कम से कम 3 बार)

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ

सुब्हा-न-कल्लाहुम्-म रब्बना व बिहम्दि-क अल्लाहुम्-मग़्फ़िर्ली० (बुख़ारी, मुस्लिम)

पाक है तू ऐ अल्लाह! ऐ हमारे परवर्दिगार, अपनी तअ़रीफ़ के साथ ऐ अल्लाह! मुझे मआ़फ़ कर दे।

سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلٰئِكَةِ وَالرُّوحِ

सुब्बूहुन् क़ुद्दूसुर रब्बुल मलाइकति वर्रूह० (मुस्लिम, अबूदाऊद)

बहुत ही पाकीज़ा, बुहत ही मुक़द्दस है फ़रिशतों और रुह (जिब्राईल) का रब।

اَللّٰهُمَّ لَكَ رَكَعْتُ، وَبِكَ اٰمَنْتُ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ خَشَعَ لَكَ سَمْعِيْ، وَبَصَرِيْ وَمُخِّيْ، وَعَظْمِيْ، وَعَصَبِيْ، وَمَا اسْتَقَلَّتْ بِهٖ قَدَمِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

अल्लाहुम्-म ल-क रकअ़्तु व बि-क आमन्तु व ल-क अस्लम्तु, ख़-श-अ़ ल-क सम्अ़ी व ब-स़री व मुख़्ख़ी व अ़ज़्मी व अ़-स़बी व मस्त-क़ल्-ल बिही क़-द-मी०
(मुस्लिम, नसाई, तिर्मिज़ी, अबूदाऊद)

ऐ अल्लाह! मैं तेरे लिए ही झुका और तुझी पर ईमान लाया। और मैं तेरा ही फ़रमांबर्दार बना, तेरे लिए ही बेबसी का इज़्हार किया मेरे कानों ने, मेरी आँखो ने, मेरे दिमाग़ ने, मेरी हड्डियों ने और मेरे पट्ठों ने और (मेरे इस जिस्म ने) जिसे उठाया हुआ है मेरे पैरों ने।

سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوْتِ وَالْمَلَكُوْتِ وَالْكِبْرِيَآءِ وَالْعَظَمَةِ

सुब्हा-न ज़िल ज-बरूति वल म-लकूति वल किब्रियाइ वल अ़ज़्मति० (अबूदाऊद, नसाई, अहमद)

पाक है अल्लाह बहुत बड़ी क़ुदरत और ताक़त वाला और बहुत बड़ी बादशाहत वाला और बुज़ुर्गी और बड़ाई वाला।

रुकूअ से उठने की दुआएं

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

समिअल्लाहु लिमन् हमिदह० (बुख़ारी फ़त्ह के साथ)

सुन ली अल्लाह ने जिस ने उस की तअ़रीफ की।

رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ، حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ

रब्बना व लकल हम्दु हम्दन् कसीरन् तय्यिबम मुबारकन् फ़ीह० (बुख़ारी फ़त्ह के साथ)

ऐ हमारे रब! तेरे लिए ही सब तरह की तअ़रीफ़ है, तअ़रीफ़ बहुत ज़्यादा और पाकीज़ा जिस में बरकत की गई है।

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمٰوٰتِ وَ مِلْءَ الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَ مِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ، اَهْلَ الثَّنَآءِ وَالْمَجْدِ، اَحَقُّ مَا قَالَ الْعَبْدُ وَكُلُّنَا لَكَ عَبْدٌ، اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ

अल्लाहुम्-म रब्बना ल-कलहम्दु मिलअस्समावाति व मिलअल्-अर्ज़ि व मा बै-नहुमा व मिल्-अ मा शिअ्-त मिन् शैइम् बअ़दु,अहलस्सनाइ वलमज्दि, अहक़्क़ु मा क़ालल्-अ़ब्दु व कुल्लुना ल-क अ़ब्दुन्, अल्लाहुम्-म ला मानि-अ लिमा अअ़्तै-त व ला मुअ़ति-य लिमा मनअ़्-त वला यन्फअु ज़लजद्दि मिन्-कलजद्दु० (मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! ऐ हमारे परवर्दिगार! तेरे ही लिए है सब तरह की तअ़रीफ़ इतनी कि भर जाए उस से आसमान और भर जाए उस से ज़मीन और जो कुछ इन दोनों के बीच है और भर जाए हर वह चीज़ जिसे तू चाहे, इस के बाद ऐ तअ़रीफ़ और बुज़ुर्गी के लायक़! सब से सच्ची बात जो बन्दे ने कही (यह है) हम सब के सब तेरे ही बन्दे हैं, ऐ अल्लाह! जो तू दे उसे कोई रोकने वाला नहीं और उसे कोई देने वाला नहीं जो तू रोक ले, और किसी इज़्ज़त वाले को उस की इज़्ज़त तेरे यहाँ कोई फ़ाएदा नहीं दे सकती।

सज्दे की दुआएं

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى

सुब्हा-न रब्बियल्-अअ्ला० (अबूदाऊद, नसाई, सहीहुत-तिर्मिज़ी)

पाक है मेरा रब जो सब से बुलन्द (महान) है। (कम से कम तीन बार)

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ

सुब्हा-न-कल्लाहुम्-म रब्बना व बिहम्दि-क अल्लाहुम्-मग़्फ़िर्ली० (बुख़ारी, मुस्लिम)

पाक है तू ऐ अल्लाह! ऐ हमारे परवर्दिगार, अपनी तअ़रीफ़ के साथ ऐ अल्लाह! मुझे मआ़फ़ कर दे।

سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلٰئِكَةِ وَالرُّوْحِ

सुब्बूहुन् क़ुद्दूसुन रब्बुल्-मलाइकति वर्रूह०

बहुत ही पाकीज़ा, बहुत ही मुक़द्दस है तमाम फ़रिश्तों और रूह (जिब्रईल) का रब।

اَللّٰهُمَّ لَكَ سَجَدْتُّ وَبِكَ اٰمَنْتُ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ، سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ خَلَقَهٗ، وَصَوَّرَهٗ، وَشَقَّ سَمْعَهٗ وَبَصَرَهٗ، تَبَارَكَ اللّٰهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ

अल्लाहुम्-म ल-क सजत्तु व बि-क आमन्तु व ल-क असलम्तु, स-ज-द वज्हि-य लिल्लज़ी ख़-ल-क़हू व स़व्व-रहू व शक़्-क़ सम्अहू व ब-स़-रहू तबारकल्लाहु अहसनुल्-ख़ालिक़ीन० (मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! मैं ने तेरे ही लिए सज्दा किया, तुझी पर ईमान लाया और तेरा ही फ़रमांबर्दार हुआ, मेरे चेहरे ने उसी हस्ती को सज्दा किया जिस ने उसे पैदा किया, उसे शक्ल और सूरत दी और उस के कानों और आँखों के सूराख़ बनाए, बरकत वाला है अल्लाह जो सब से अच्छा पैदा करने वाला है।

سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوْتِ وَالْمَلَكُوْتِ وَالْكِبْرِيَآءِ وَالْعَظَمَةِ

सुब्हा-न ज़िलज-बरूति वल म-लकूति वल किब्रियाइ वल अ़ज़्मति० (अबूदाऊद, नसाई, अहमद)

पाक है बहुत ज़्यादा ताक़त और बहुत बड़ी बादशाहत और बुज़ुर्गी और बड़ाई वाला।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ ذَنْبِيْ كُلَّهٗ، دِقَّهٗ وَجِلَّهٗ، وَأَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ وَعَلَانِيَتَهٗ وَسِرَّهٗ

अल्लाहुम्-मग़्फ़िर्ली ज़म्बी कुल्लहू दिक़्क़हू वजिल्लहू वअव्व लहू वआख़िर-रहू व अलानिय-तहू वसिर्रहू०
(मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! मेरे तमाम गुनाह मआफ़ कर दे छोटे और बड़े, अगले और पिछले, ख़ुले और छिपे हुए।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ، وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ، لَآ أُحْصِيْ ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ

दोनों सज्दों के बीच की दुआएं

رَبِّ اغْفِرْلِيْ، رَبِّ اغْفِرْلِيْ

रब्बिग़्फ़िर्ली, रब्बिग़्फ़िर्ली० (अबूदाऊद, सहीह इब्ने माजह)

ऐ मेरे रब! मुझे मआफ़ कर दे, ऐ मेरे रब मुझे मआफ़ कर दे।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَاجْبُرْنِيْ وَعَافِنِيْ وَارْفَعْنِيْ

अल्लाहुम्-मग़्फ़िर्ली वर्हम्नी वहदिनी वज्बुर्नी व आफ़िनी वर्ज़ुक़्नी वर्फ़अ्नी० (अबूदाऊद, सहीहुत्-तिर्मिज़ी, सहीह इब्ने माजह)

ऐ अल्लाह! मुझे मआफ़ कर, मुझ पर रहम कर, मुझे हिदायत दे, मेरे नुक़्सान पूरे करदे, मुझे आफ़ियत दे, मुझे रिज़्क़ दे और मुझे बुलन्दी दे।

सज्दए तिलावत की दुआएं

سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ خَلَقَهٗ وَشَقَّ سَمْعَهٗ وَبَصَرَهٗ بِحَوْلِهٖ وَقُوَّتِهٖ فَتَبَارَكَ اللّٰهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ

स-ज-द वज्हि-य लिल्लज़ी ख़-ल-क़हू व शक़्क़ सम्अहू व ब-स़-रहू बिहौलिही व क़ुव्वतिही फ़-तबार-कल्लाहु अह्सनुल् ख़ालिक़ीन० (तिर्मिज़ी, अहमद)

मेरे चेहरे ने उस ज़ात को सज्दा किया जिस ने इसे पैदा किया, और उस ने अपनी ताक़त और क़ुव्वत से उस के कान और आँख के सूराख़ बनाए बरकत वाला है अल्लाह जो सब से अच्छा पैदा करने वाला है।

اَللّٰهُمَّ اكْتُبْ لِيْ بِهَا عِنْدَكَ أَجْرًا ، وَّضَعْ عَنِّيْ بِهَا وِزْرًا، وَّاجْعَلْهَا لِيْ عِنْدَكَ ذُخْرًا، وَّتَقَبَّلْهَا مِنِّيْ كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ عَبْدِكَ دَاوٗدَ

अल्लाहुम्-मक्तुब्ली बिहा इन्द-क अज्रंव्- वज़अ् अन्नी बिहा विज़्रंव्-वज्अल्हा ली इन्द-क ज़ुख़्रंव्- व त-क़ब्बल्हा मिन्नी कमा तक़ब्बल्तहा मिन् अब्दि-क दावूद० (तिमिर्ज़ी, हाकिम)

ऐ अल्लाह! मेरे लिए इस (सज्दे) के बदले अपने यहाँ स़वाब लिख दे, और इसकी वजह से मुझ से (मेरे गुनाहों का) बोझ उतार दे और इस (सज्दे) को मेरे लिए अपने यहाँ ज़ख़ीरा बना दे और इस (सज्दे) को मेरी तरफ़ से ऐसे क़ुबूल कर जैसे तू ने अपने बन्दे दावूद عليه السلام की तरफ़ से क़ुबूल किया था।

तशह्हुद

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ أَشْهَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्स ल-वातु वत्-तय्यिबातु अस्सलामु अलै-क अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व ब-रकातुहू अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्-स़ालिहीन अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन् अब्दुहू व रसूलुहू० (बुख़ारी फ़त्ह के साथ, मुस्लिम)

(मेरी) तमाम ज़बानी, बदनी और माली इबादतें अल्लाह ही के लिए हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी! अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें, सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा)

मअ़बूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उस के बन्दे और उस के रसूल हैं।

नबी करीम ﷺ पर दरुद

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ إِبْرَاهِيْمَ، إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ إِبْرَاهِيْمَ، إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिव्-व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा स़ल्लै-त अ़ला इब्राही-म व अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्-मजीद० अल्लाहुम म बारिक अ़ला मुहम्मदिव्-व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा बारक-त अ़ला इब्राही-म व अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्-मजीद० (बुख़ारी फ़त्ह के साथ)

ऐ अल्लाह! मुहम्मद ﷺ और उन की आल पर रहमत नाज़िल कर जैसे रहमत नाज़िल की तू ने इब्राहीम عليه السلام और आले

इब्राहीम ﷺ पर तू यक़ीनन् तअ़रीफ़ के लाएक़ है, बड़ी शान वाला है। ऐ अल्लाह! बरकत नाज़िल कर, मुहम्मद ﷺ पर और आले मुहम्मद ﷺ पर जैसे तू ने बरकत नाज़िल की इब्राहीम ﷺ पर और आले इब्राहीम ﷺ पर यक़ीनन् तू तअ़रीफ़ के लाएक़ है, बड़ी शान वाला है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى أَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اٰلِ إِبْرَاهِيْمَ، وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى أَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ، كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اٰلِ إِبْرَاهِيْمَ، إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिव्-व अ़ला अज़्वाजिही व ज़ुर्रिय्यतिही कमा स़ल्लै-त अ़ला आलि इब्राही-म व बारिक अ़ला मुहम्मदिंव्-व अ़ला अज़्वाजिही व ज़ुर्रिय्यतिही कमा बारक त अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद० (बुख़ारी फ़त्ह के साथ, मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल कर मुहम्मद ﷺ पर, आप की (पाक दामन) बीवियों और आप की औलाद पर जैसे रहमत

नाज़िल की तू ने आले इब्राहीम ﷺ पर, और बरकत नाज़िल कर मुहम्मद ﷺ पर, आप की (पाक दामन) बीवियों और आप की औलाद पर जैसे रहमत नाज़िल की तू ने आले इब्राहीम ﷺ पर, तू यक़ीनन् तअ़रीफ़ के लाइक़ है बड़ी शान वाला है।

सलाम फेरने से पहले की दुआएं

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَمِنْ عَذَابِ جَهَنَّمِ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ، وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ

अल्लाहुम-म इन्नी अऊ़ज़ुबि-क मिन् अ़ज़ाबिल्-क़बरि व मिन् अ़ज़ाबि जहन्न-म व मिन् फ़ित्नतिल्-महया वल्-ममाति व मिन् शर्रि फ़ित्नतिल्-मसीहिद्-दज्जाल० (बुख़ारी, मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! बेशक़ मैं तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ क़ब्र के अ़ज़ाब से, ज़हन्नम के अ़ज़ाब से और ज़िन्दगी और मौत के

फ़ित्ने (आज़्माइश) से, और मसीह दज्जाल के फ़ित्ने की बुराई से।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ، وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ

अल्लाहुम-म इन्नी अऊ़ज़ुबि-क मिन् अ़ज़ाबिल्-क़बरि व अऊ़ज़ुबि-क मिन् फ़ित्नतिल्-मसीहिद्-दज्जालि व अऊ़ज़ुबि-क मिन् फ़ित्नतिल्-महया वल-म-माति, अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ुबि-क मिनल्-मअ्समि वल्-मग़्रम० (बुख़ारी, मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ क़ब्र के अ़ज़ाब से, और तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ मसीह दज्जाल के फ़ित्ने से, और तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्ने से, ऐ अल्लाह! यक़ीनन् मैं तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ गुनाह से और क़र्ज़ से।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّا أَنْتَ ، فَاغْفِرْلِيْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِيْ، إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

अल्लाहुम-म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन् कसीरंव्-व ला यग़िफ़रुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन्-त फ़ग़िफ़र्ली मग़िफ़-रतम्-मिन् इन्दि-क वरहम्नी इन्न-क अन्तल्-ग़फ़ूरुर्रहीम० (बुख़ारी, मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! बेशक मैं ने अपनी जान पर बहुत ज़्यादा ज़ुल्म किया है और तेरे सिवा कोई भी गुनाहों को मआफ नहीं कर सकता। इसलिए तू मुझे अपनी ख़ास़ बख़्शिश से मआफ़ कर दे और मुझ पर रहम कर। यक़ीनन् तू ही मआफ़ करने वाला, बहुत महरबान (दयालू) है।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ ، وَمَا أَسْرَفْتُ ، وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ . أَنْتَ الْمُقَدِّمُ، وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ

अल्लाहुम-मग़्फ़िर्ली मा क़द्दम्तु वमा अख़्ख़र्तु वमा असररतु वमा अअ्लन्तु वमा असरफ़्तु वमा अन्-त अअ्लमु बिही मिन्नी अन्तल्-मुक़द्दिमु व अन्तल्-मुअख़्ख़रु ला इला-ह इल्ला अन्-त० (मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! तू मुझे मआ़फ़ कर दे जो कुछ मैं ने पहले किया और जो कुछ बाद में किया जो कुछ मैं ने छिपा कर किया और जो कुछ मैं ने दिखा कर किया, जो मैं ने ज़्यादती की और जिसे तू मुझ से ज़्यादा जानता है (सब मआ़फ़ कर दे) तू ही आगे ले जाने वाला और तू ही पीछे करने वाला है, तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं है।

اَللّٰهُمَّ أَعِنِّيْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ، وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

अल्लाहुम्-म अइन्नी अ़ला ज़िक्रि-क व शुक्रि-क व हुस्नि इबादतिक० (अबूदाऊद, नसाई)

ऐ अल्लाह! तू मेरी मदद् कर अपनी याद पर, अपने शुक्र पर और अपनी अच्छी इबादत पर।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ، وَأَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُبْنِ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ أَنْ أُرَدَّ إِلٰى أَرْذَلِ الْعُمُرِ، وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ

अल्लाहुम्-म इन्नी अअूज़ुबि-क मिनल्-बुख़्ल व अअूज़ुबि-क मिनल्-जुब्नि व अअूज़ुबि-क मिन् अन् उरद्-द इला अरज़लिल्-उमुरि व अअूज़ुबि-क मिन् फ़ित्नतिद्-दुन्या व अज़ाबिल्-क़ब्र। (बुख़ारी)

ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ कंजूसी से और तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ बुज़दिली से और तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ इस बात से कि मैं उमर के निकम्मे हिस्से की तरफ लौटाया जाऊँ और मैं तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ दुनिया के फ़ित्ने और क़ब्र के अ़ज़ाब से।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَأَعُوْذُبِكَ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम-म इन्नी अस्अलुकल्-जन्न-त व अअुज़ूबिक मिनन्नार। (अबूदाऊद)

ऐ अल्लाह मैं तुझ से जन्नत का सवाल करता हूँ और जहन्नम से तेरी पनाह चाहता हूँ।

اَللّٰهُمَّ بِعِلْمِكَ الْغَيْبِ وَقُدْرَتِكَ عَلَى الْخَلْقِ أَحْيِنِيْ مَا عَلِمْتَ الْحَيَاةَ خَيْرًا لِّيْ، وَتَوَفَّنِيْ إِذَا عَلِمْتَ الْوَفَاةَ خَيْرًا لِّيْ، اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ خَشْيَتَكَ فِي الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، وَأَسْأَلُكَ كَلِمَةَ الْحَقِّ فِي الرِّضَا وَالْغَضَبِ، وَأَسْأَلُكَ الْقَصْدَ فِى الْغِنٰى وَالْفَقْرِ، وَأَسْأَلُكَ نَعِيْمًا لَّا يَنْفَدُ، وَأَسْأَلُكَ قُرَّةَ عَيْنٍ لَّا تَنْقَطِعُ وَأَسْأَلُكَ الرِّضَا بَعْدَ الْقَضَآءِ، وَأَسْأَلُكَ بَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ، وَأَسْأَلُكَ لَذَّةَ النَّظَرِ إِلٰى لِقَآئِكَ، فِيْ غَيْرِ ضَرَّآءَ مُضِرَّةٍ، وَّلَا فِتْنَةٍ مُّضِلَّةٍ، اَللّٰهُمَّ زَيِّنَّا بِزِيْنَةِ الْإِيْمَانِ، وَاجْعَلْنَا هُدَاةً مُّهْتَدِيْنَ

अल्लाहुम्-म बिइल्मि-कल्-ग़ै-ब व क़ुद्रति-क अलल्-ख़ल्क़ि अह्यिनी मा अ़लिम्तल-हया-त ख़ैरल्ली व तवफ़्फ़नी इज़ा अ़लिम्तल-वफ़ा-त ख़ैरल्ली, अल्लाहुम्-म

इन्नी असअलु-क ख़श य-त-क फ़िल-ग़ैबि वश्शहा-दति व असअलु-क कलि मतल्-हक़्क़ि फ़िर्रिज़ा वल्-ग़-ज़बि व अस्अलु-कल्-क़स्-द फ़िल्-ग़िना वल्-फ़क़्रि व अस्अलु-क नअ़ीमल्-ला यन्फ़दु व अस्अलु-क क़ुर्र-त अ़ैनिल्-ला तन्क़तिअ़ु व अस्अलु-कर्रिज़ा बअ़्-दल्-क़ज़ाइ व अस्अलु-क बर्दल्-अ़ैशि बअ़्-दल्-मौति व अस्अलु-क लज़्ज़-तन्-नज़िर इला वज्हि-क वश्शौ-क इला लिक़ाइ-क फ़ी ग़ैरि ज़र्रा-अ मुज़िर्रतिंव्-व ला फ़ित्नतिम्-मुज़िल्लतिन् अल्लाहुम्-म ज़य्यिन्ना बिज़ी नतिल्-ईमानि वज्अल्ना हुदातम्-मुह तदीन० (नसाई, अहमद)

ऐ अल्लाह! तेरे ग़ैब जानने और मख़्लूक़ पर क़ुदरत रखने (की सिफ़त) के साथ सवाल करता हूँ कि मुझे उस वक़्त तक ज़िन्दा रख जब तक तेरे इल्म में ज़िन्दगी मेरे लिए बहतर हो और उस वक़्त मुझे मौत देना जब तेरे इल्म में मौत मेरे लिए बहतर हो, ऐ अल्लाह! बेशक मैं ग़ायब और हाज़िर (दोनों हालतों में) तुझ से तेरे डर का सवाल करता हूँ और मैं सवाल करता हूँ तुझ से कि मैं सच बात कहूँ, ख़ुशी और नाराज़ी

(दोनों हालतों में) और मैं सवाल करता हूँ तुझ से ग़रीबी और अमीरी में बीच का रास्ता अपनाने का और मैं सवाल करता हूँ तुझ से ऐसी नेअ़मत का जो ख़त्म न हो। और सवाल करता हूँ तुझ से आँखों की ऐसी ठंडक का जो ख़त्म न हो। और मैं तुझ से तेरे फ़ैसले पर राज़ी रहने का सवाल करता हूँ। और मैं माँगता हूँ तुझ से ज़िन्दगी की ठंडक मौत के बाद। और मैं सवाल करता हूँ तुझ से तेरे चेहरे के दीदार की लज़्ज़त और तेरी मुलाक़ात के शौक़ का (जो) बिना किसी तक्लीफ़ देने वाली मुसीबत और गुमराह करने वाले फ़ित्ने (के हासिल) हो। ऐ अल्लाह! हमें ईमान की ज़ीनत से सजा दे और हमें हिदायत वाला रह्नुमा बना दे।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْٓ أَسْأَلُكَ يَا اَللّٰهُ بِأَنَّكَ الْوَاحِدُ الْأَحَدُ، الصَّمَدُ الَّذِيْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا أَحَدٌ، أَنْ تَغْفِرَ لِيْ ذُنُوْبِيْ إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क या अल्लाहु बिअन्न-कल्-वाहिदुल-अ-ह-दुस्-स-म-दुल्लज़ी लम् यलिद् व लम्

यूलद् व लम् यकुल्लहू कुफ़ुवन् अहदुन् अन् तग़्फ़िर-रली जुनूबी इन्न-क अन्-तल्-ग़फ़ूरुर्रहीम० (नसाई, अहमद)

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ ऐ अल्लाह इसलिए कि तू अकेला है, बेमिसाल है, ऐसा बे नियाज़ है कि उस की कोई औलाद नहीं है और न वह किसी की औलाद है और न उस का कोई बराबरी का है (मैं सवाल करता हूँ) कि तू मेरे गुनाह मआफ़ कर दे। यक़ीनन् तू ही बहुत ज़्यादा मआफ़ करने वाला बहुत महरबान (दयालू) है।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ بِأَنَّ لَكَ الْحَمْدُ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ الْمَنَّانُ يَا بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ، يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ (اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَأَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ)

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क बिअन्न ल-कल्-हम द ला इला-ह इल्ला अन्-त वह्-द-क लाशरी-क ल-कलमन्नानु या बदीअस्समावाति वल्-अर्ज़ि या ज़ल्-जलालि वल्-

इक्रामि या हय्यु या क़य्यूमु इन्नी अस्अलु-कल्-जन्न-त वअऊज़ुबि-क मिनन्नार० (अबूदाऊद, नसाई, तिर्मिज़ी)

ऐ अल्लाह! यक़ीनन् मैं तुझ से इसलिए सवाल कर रहा हूँ कि हर तरह की तअ़रीफ़ तेरे लिए ही है। तुझ अकेले के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं। तेरा कोई साझी नहीं। (तू) बहुत ज़्यादा एहसान करने वाला है। ऐ आसमान और ज़मीन को लाजवाब पैदा करने वाले। ऐ बुज़ुर्गी और इज़्ज़त वाले। ऐ सदा ज़िन्दा! ऐ सदा क़ायम रहने वाले! यक़ीनन् मैं तुझ से जन्नत का सवाल करता हूँ और आग से तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ بِأَنِّيْ أَشْهَدُ أَنَّكَ أَنْتَ اللهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ، الْأَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِيْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا أَحَدٌ

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क बिअन्नी अश्हदु अन्न-क अन्-तल्लाहु ला इला-ह इल्ला अन्-तल्-अ-हदुस स मदुल्लज़ी लम् यलिद् व लम् यूलद् व लम् यकुल्लहू कुफ़ुवन् अ-हद० (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजह)

ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझ से इसलिए सवाल कर रहा हूँ कि मैं गवाही देता हूँ कि तू ही अल्लाह है। तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं तू बेमिसाल है। ऐसा बेनियाज़ है कि उस की कोई न औलाद है और न वह किसी की औलाद, और कोई भी उस की बराबरी का नहीं।

सलाम फेरने के बाद की दुआएं

اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाहु अकबर (बुख़ारी)

अल्लाह सब से बड़ा है। (1 बार ज़ोर से कहे)

أَسْتَغْفِرُ اللهَ، أَسْتَغْفِرُ اللهَ، أَسْتَغْفِرُ اللهَ، اللّٰهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ، تَبَارَكْتَ يَاذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

अस्तग़िफ़रुल्लाह, अस्तग़िफ़रुल्लाह, अस्तग़िफ़रुल्लाह, अल्लाहुम्-म अन्-तस्सलामु व मिन्-कस्-सलामु तबारक्-त या ज़ल्-जलालि वल्-इक्राम० (मुस्लिम)

मैं अल्लाह तआ़ला से मआ़फ़ी माँगता हूँ, मैं अल्लाह तआ़ला से मआ़फ़ी माँगता हूँ, मैं अल्लाह तआ़ला से मआ़फ़ी माँगता

हूँ। ऐ अल्लाह! तू ही सलामती वाला है और तेरी तरफ़ से ही सलामती है। ऐ शान और इज़्ज़त वाले। तू बरकत वाला है।

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू लहुल्-मुल्कु व लहुल्-हम्दु व हुवा अला कुल्लि शैइन् क़दीर अल्लाहुम्-म ला मानि-अ लिमा अअ्तै-त व ला मुअ्ति-य लिमा मनअ्-त व ला यन्फ़अु ज़ल्-जद्दि मिन्कल्-जद०

(बुख़ारी, मुस्लिम)

अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी की ही बादशाहत है और उसी के लिए ही हर तरह की तअ़रीफ़ और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है। ऐ अल्लाह! नहीं है कोई रोकने वाला उस चीज़ को जो तू दे और कोई देने वाला नहीं जो चीज़ तू रोक

ले। और किसी इज़्ज़त वाले को तेरे यहाँ उस की इज़्ज़त फ़ायदा नहीं दे सकती।

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ، لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ، وَلَا نَعْبُدُ إِلَّآ إِيَّاهُ، لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَآءُ الْحَسَنُ، لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल्-मुल्कु व लहुल्-हम्दु व हुवा अला कुल्लि शैइन् क़दीर, ला हौ-ल व ला क़ुव्-व-त इल्ला बिल्लाहि, ला इला-ह इल्लल्लाहु व ला नअ़बुदु इल्ला इय्याहू, लहुन्निअ़्मतु व लहुल्-फ़ज़्लु व लहुस्-सनाउल्-ह-सनु ला इला-ह इल्लल्लाहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न व लौ करिहल्-काफ़िरून० (मुस्लिम)

अल्लाह अकेले के सिवा कोई सच्चा मअ़बूद नहीं। उस का कोई साझी नहीं। उसी की ही बादशाहत है और उसी के लिए

ही हर तरह की तअ़रीफ़ है और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है। (बुराई से) बचने की हिम्मत है और न नेकी करने की ताक़त मगर अल्लाह की तौफ़ीक़ से, अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं। हम सिर्फ़ उसी की इबादत करते हैं, उसी की तरफ़ से इनआम है और उसी के लिए फ़ज़्ल और उसी के लिए सब से अच्छी तअ़रीफ़ है, अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं। हम अपनी बन्दगी ख़ालिस उसी के लिए करते हैं चाहे काफ़िरों को बुरा ही लगे।

सुब्हानल्लाह० (33 बार) سُبْحَانَ اللهِ
अल्लाह पाक है।

अल-हम्दु लिल्लाह० (33 बार) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
हर तरह की तअ़रीफ अल्लाह ही के लिए है।

अल्लाहुअक्बर० (33 बार) اَللهُ أَكْبَرُ
अल्लाह सब से बड़ा है।

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू, लहुल्-मुल्कु व लहुल्-हम्दु व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर० (1 बार) (मुस्लिम)

अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं उसी की ही बादशाहत है और उसी के लिए ही सब तरह की तअ़रीफ़ है और वही हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है। (जो कोई नमाज़ के बाद यह ज़िक्र करे उस के गुनाह समन्दर के झाग के बराबर हों तो भी मआ़फ़ हो जाते हैं)।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा महरबान है बहुत रहम करने वाला है।

﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ○ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ○ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ○ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○﴾

क़ुल् हुवल्लाहु अहद्० अल्लाहुस्-समद्० लम् यलिद् व लम् यूलद्० व लम् यकुल्लहू कुफ़ुवन् अहद्० (सूरः इख़लास़ 1-4)

(आप) कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह बे नियाज़ है। उस की न कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद। और न ही कोई उस की बराबरी का है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा महरबान है बहुत रहम करने वाला है।

﴿قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ○ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ○ وَمِنۡ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ○ وَمِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الۡعُقَدِ ○ وَمِنۡ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ○﴾

क़ुल् अऊज़ु बिरब्बिल्-फ़-लक़० मिन् शर्रि मा ख़-लक़्० व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा व-क़ब्० व मिन्

शर्रिन्नफ़्फ़ासाति फ़िल्अुक़द्० व मिन् शर्रि हासिदिन् इज़ा हसद्० (सूर: फ़लक़ 1-5)

(आप) कह दीजिए मैं पनाह माँगता हूँ सुबह के रब की, हर उस चीज़ की बुराई से जो उस ने पैदा की और अन्धेरा करने वाले के बुराई से जब वह छिप जाए। और गिरहों में फूँकने वालियों की बुराई से, और हसद् (द्वेष) करने वाले की बुराई से जब वह हसद् करे।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा महरबान है बहुत रहम करने वाला है।

﴿قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ○ مَلِكِ النَّاسِ ○ اِلٰهِ النَّاسِ ○ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ○ اَلَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ○ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ○﴾

कुल् अऊज़ु बिरब्बिन्नास० मलि-किन्नास० इलाहिन्नास० मिन् शर्रिल् वस्वासिल खन्नास० अल्लज़ी युवस्विसु फ़ीसुदूरिन्नास० मिनलजिन्नति वन्नास०

(आप) कह दीजिए मैं हिफ़ाज़त चाहता हूँ लोगों के रब की, लोगों के बादशाह की, लोगों के मअ़बूद की, बुरा ख़्याल ड़ालने वाले शैतान से जो आँखों से ओझल है। जो बुरा ख़्याल डालता है लागों के सीनों में। जिन्नों में से और इन्सानों में से।

(हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद 1 बार फ़ज्र और मग़रिब के बाद 3 बार) (अबूदाऊद, नसाई, तिर्मिज़ी)

﴿اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ ۚ لَا تَاۡخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوۡمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ مَنۡ ذَا الَّذِیۡ یَشۡفَعُ عِنۡدَهٗۤ اِلَّا بِاِذۡنِهٖ ؕ یَعۡلَمُ مَا بَیۡنَ اَیۡدِیۡهِمۡ وَ مَا خَلۡفَهُمۡ ۚ وَ لَا یُحِیۡطُوۡنَ بِشَیۡءٍ مِّنۡ عِلۡمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ کُرۡسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضَ ۚ وَ لَا یَـُٔوۡدُهٗ حِفۡظُهُمَا ۚ وَ هُوَ الۡعَلِیُّ الۡعَظِیۡمُ ○﴾

अल्लाहु लाइला-ह इल्ला हु-वल्हय्युल क़य्यूमु ला तअ्ख़ुज़ुहू सि-नतुंव्-व ला नौमुल लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्-अर्ज़ि मन् ज़ल्लज़ी यश्फ़अु इन्दहू इल्ला बि-इज़्निही यअ्-लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् वला युहीतू-न बिशैइम्मिन् इल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ कुर्सिय्युहुस समावाति वल-अर-ज़ व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हुवल् अलिय्युल् अज़ीम० (अल्-ब-क़-रह: 255)

अल्लाह वह है जिस के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, वह हमेशा ज़िन्दा और हमेशा क़ायम रहने वाला है, उसे ऊँघ आती है न नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। कौन है वह जो उस के यहाँ उस की इजाज़त के बिना (किसी की) सिफ़ारिश कर सके? वह उन चीज़ों को जानता है जो उन के सामने हैं और जो उन के पीछे हैं। और वह (लोग) उस के इल्म में से किसी चीज़ पर पहुँच नहीं रखते मगर जितना वह ख़ुद चाहे। और उस की कुर्सी छाई हुई है

आसमानों और ज़मीन पर और नहीं भारी होती उसे हिफ़ाज़त इन दोनों की और वह महान है बड़ाई वाला है।

(जो कोई हर नमाज़ के बाद **आयतुल कुर्सी** पढ़े उसे जन्नत में दाख़िल होने से मौत के सिवा कोई चीज़ नहीं रोकेगी)। (नसाई)

10 बार फ़ज्र और मग़रिब की नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़े।

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू लहुल्-मुल्कु व लहुल्-हम्दु युह्यी व युमीतु व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर० (तिर्मिज़ी, अहमद)

अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी की ही बादशाहत है और उसी के लिए ही तअ़रीफ़ है, वही ज़िन्दगी देता है और मौत देता है और वही हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है।

❁ फ़ज्र की नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़े।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا، وَّرِزْقًا طَيِّبًا، وَّعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क इल्मन्-नाफ़िअंव्-व रिज़्क़न् तय्यिबंव्- व अ-मलम्-मुत-क़ब्बला० (सहीह इब्ने माजह)

ऐ अल्लाह! बे शक मैं तुझ से फ़ाएदा देने वाला इल्म, पाक रोज़ी और क़ुबूल होने वाले अ़मल का सवाल करता हूँ।

नमाज़े इस्तिख़ारह की दुआ

जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ हमें तमाम कामों में इस्तिख़ारह करना ऐसे ही सिखाते जैसे क़ुरआन करीम की कोई सूरत सिखाते थे। आप ﷺ फ़रमाते, जब तुम में से कोई शख़्स कोई काम (निकाह, तिजारत, सफ़र) करना चाहे तो फ़र्ज़ के सिवा दो रकात नमाज़ पढ़े फिर यह दुआ पढ़े।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ، وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ،
وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ، فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ،

وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ، وَأَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ، اَللّٰهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هٰذَا الْأَمْرَ خَيْرٌ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ أَمْرِيْ، فَاقْدُرْهُ لِيْ وَيَسِّرْهُ لِيْ ثُمَّ بَارِكْ لِيْ فِيْهِ، وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هٰذَا الْأَمْرَ شَرٌّ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ أَمْرِيْ، فَاصْرِفْهُ عَنِّيْ وَاصْرِفْنِيْ عَنْهُ وَاقْدُرْ لِيَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ أَرْضِنِيْ بِهٖ

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्तख़ीरु-क बिइल्मि-क व अस्तक़्दिरु-क बिक़ुद्-रति-क व अस्अलु-क मिन् फ़ज़लि-कल्-अज़ीमि फ़इन्न-क तक़दिरु व ला अक़्दिरु व तअ्-लमु व ला अअ्-लमु व अन्-त अल्लामुलग़ुयूब, अल्लाहुम्-म इन् कुन्-त तअ्-लमु अन्-न हाज़ल्-अम्-र ख़ैरुल्ली फ़ी दीनी व मआशी व आक़िबति अमरी फ़क्दुरहु ली व यस्सिरहु ली सुम्-म बारिक ली फ़ीहि व इन् कुन्-त तअ्-लमु अन्-न हाज़ल्-अम्-र शर्रुल्ली फ़ी दीनी व मआशी व आक़िबति अमरी फ़सरिफ़्हु अन्नी

वसरिफ़्नी अन्हु वक़्दुर लियलख़ै-र हैसु का-न सुम्-म अर्ज़िनी बिही० (बुख़ारी)

ऐ अल्लाह! यक़ीनन् मैं तुझ से तेरे इल्म के साथ भलाई का चाहने वाला हूँ और तेरी क़ुदरत के साथ तुझ से ताक़त माँगता हूँ और मैं तुझ से तेरे बहुत बड़े फ़ज़्ल का सवाल करता हूँ, क्यों कि तू क़ुदरत रखता है और मैं क़ुदरत नहीं रखता, तू जानता है और मैं नहीं जानता, और तू ग़ैबों को ख़ूब जानता है, ऐ अल्लाह! अगर तू जानता है कि यह काम (यहाँ काम का नाम ले) मेरे लिए मेरे दीन, मेरी ज़िन्दगी और मेरे नतीजे के तौर पर अच्छा है तो इसे मेरी क़िस्मत में कर दे, इसे मेरे लिए आसान कर दे फिर मेरे लिए इस में बरकत दे, और अगर तू जानता है कि यह काम (काम का नाम ले) मेरे लिए मेरे दीन, मेरी ज़िन्दगी और मेरे नतीजे के तौर पर बुरा है, तो इसे मुझ से दूर कर दे और मुझे इस से दूर कर दे, और मेरी क़िस्मत में बहतरी कर दे जहाँ भी हो, फिर उस पर मुझे ख़ुश रख।

(नोट) जो शख़्स अल्लाह तआला से इस्तिख़ारा (भलाई का सवाल) करे, मोमिनों से मश्वरा करे और जम कर काम करे उसे पछतावा नहीं होता। अल्लाह फ़रमाता है।

وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ

और ख़ास कामों में उन से मश्वरा कर लिया कीजिए फिर जब पक्का इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा करें। (आलि इमरान 159)

सुबह और शाम की दुआएं

(आयतुल कुर्सी देखिए पन्ना नं: 73)

(सुर: इख़लास़ देखिए पन्ना नं: 70)

(सुर: फ़लक़ देखिए पन्ना नं: 71)

(सुर: नास देखिए पन्ना नं: 72)

أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، رَبِّ

أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِي هٰذَا الْيَوْمِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهُ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْ هَذَا الْيَوْمِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهُ، رَبِّ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ، وَسُوْءِ الْكِبَرِ، رَبِّ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ وَعَذَابٍ فِي الْقَبْرِ

असबहना व अस्-बहल्-मुल्कु लिल्लाहि वल-हम्दु लिल्लाहि ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल्-मुल्कु व लहुल हम्दु व हुवा अला कुल्लि शैइन् क़दीर, रब्बि अस्अलु-क ख़ै-र मा फ़ी हाज़ल यौ-म व ख़ै-र मा बअ्-दहू व अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि मा फ़ी हाज़ल यौमि व शर्रि मा बअ्-दहू, रब्बि अऊज़ुबि-क मिनल क-सलि व सूइल कि-बरि रब्बि अऊज़ुबि-क मिन् अज़ाबिन् फ़िन्नारि व अज़ाबिन् फ़िल्-क़ब्रि० (मुस्लिम)

हम ने और अल्लाह की सलतनत ने सुबह की और हर तरह की तअरीफ़ अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअबूद नहीं वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत है और उसी की ही तअरीफ़ है, और वह

हर चीज़ पर पुरी क़ुदरत रखता है। ऐ मेरे रब! मैं तुझ से इस दिन की भलाई और इस के बाद आने वाले दिनों की अच्छाई का सवाल करता हूँ और मैं तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ इस दिन की बुराई से और इस के बाद आने वाले दिनों की बुराई से, ऐ मेरे रब! मैं सुस्ती और बुढ़ापे की बुराई से तेरी पनाह में आता हूँ। ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह में आता हूँ आग के अ़ज़ाब से और क़ब्र के अ़ज़ाब से। शाम को पढ़े तो

अम्सैना व अम्सलमुल्कु लिल्लाहि कहे।

हम ने और अल्लाह की सल्तनत ने शाम की। और **रब्बि अस्अलु-क ख़ै-र मा फ़ी हाज़ल यौ-मि.....**की बजाए **रब्बि अस्अलु-क ख़ै-र मा फ़ी हाज़िहिल लैलती व ख़ै-र मा बअ्-दहा व अअ़ूज़ुबि-क मिन् शर्रि मा फ़ी हाज़िहिल लैलती व शर्रि मा बअ्-दहा,** ऐ मेरे रब! मैं तुझ से इस रात की भलाई और इस के बाद आने वाली रातों की अच्छाई का सवाल करता हूँ और मैं तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ इस रात की बुराई से और इस के बाद आने वाली रातों की बुराई से।

اَللّٰهُمَّ بِكَ أَصْبَحْنَا وَبِكَ أَمْسَيْنَا ، وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ نَمُوْتُ وَإِلَيْكَ النُّشُوْرُ

अल्लाहुम्-म बि-क अस्बहना व बि-क अमसैना व बि-क नहया व बि-क नमूतु व इलैकन्नुशूर०

ऐ अल्लाह! तेरी ही तौफ़ीक़ से हम ने सुबह की और तेरी ही तौफ़ीक़ से शाम और तेरे ही नाम पर हम ज़िन्दा हैं और तेरे ही नाम पर हम मरेंगे और तेरी ही तरफ़ उठ कर जाना है।

शाम के वक़्त यह दुआ पढ़े।

اَللّٰهُمَّ بِكَ أَمْسَيْنَا، وَبِكَ أَصْبَحْنَا، وَبِكَ نَحْيَا، وَبِكَ نَمُوْتُ وَإِلَيْكَ الْمَصِيْرُ

अल्लाहुम्-म बि-क अमसैना वबि-क अस्बहना वबि-क नहया वबि-क नमूतु व इलैकल्-मसीर० (तिर्मिज़ी)

ऐ अल्लाह! तेरे नाम के साथ हम ने शाम की और तेरे नाम के साथ हम ने सुबह की और तेरे नाम के साथ हम ज़िन्दा हैं और तेरे नाम के साथ हम मरते हैं और तेरी तरफ़ ही लौटना है।

اَللّٰهُمَّ أَنْتَ رَبِّيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ، خَلَقْتَنِيْ وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوْءُ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْلِيْ فَإِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّآ أَنْتَ

अल्लाहुम्-म अन्-त रब्बी ला इला-ह इल्ला अन्-त ख़लक़्तनी व अना अ़ब्दु-क व अना अ़ला अ़हदि-क व वअ़्दि-क मस त-तअ़तु अअ़ूज़ुबि-क मिन् शर्रि मा सनअ़तु अबूउ ल-क बिनिअ़्मति-क अ़लय्-य व अबूउ बिज़म्बी फ़ग़्फ़िर्ली फ़इन्नहू ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन्-त०
(बुख़ारी)

ऐ अल्लाह! तू मेरा रब है, तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं तू ने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ, और मैं अपनी ताक़त भर तेरे अ़हद और वअ़दे पर क़ायम हूँ। अपनी की हुई बुराई से तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ। मैं अपने ऊपर तेरे इनआ़म का इक़रार करता हूँ और मैं अपने गुनाह का इक़रार करता हूँ

इस्लिए तू मुझे मआफ़ कर दे। क्यों कि तेरे सिवा कोई भी गुनाह मआफ़ नहीं कर सकता।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَصْبَحْتُ أُشْهِدُكَ ، وَأُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ ، وَمَلَآئِكَتَكَ ، وَجَمِيْعَ خَلْقِكَ، أَنَّكَ أَنْتَ اللهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्बहतु उश्हिदु-क व उश्हिदु ह-म-ल-त अर्शि-क व मलाइ-क-त-क व जमी-अ ख़ल्क़ि-क अन न-क अन्-तल्लाहु ला इला-ह इल्ला अन्-त वह्द-क ला शरी-क ल-क व अन्-न मुहम्मदन् अब्दु-क व रसूलु-क०

(अबूदाऊद, नसाई)

ऐ अल्लाह! यक़ीनन् मैं ने इस हालत में सुबह की कि तुझे गवाह बनाता हूँ और तेरा अर्श उठाने वालों और तेरे फ़रिशतों और तेरी मख़्लूक़ को इस बात पर गवाह बनाता हूँ कि तू ही अल्लाह है, तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं। और बेशक मुहम्मद ﷺ तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं। (यह दुआ सुबह या शाम 4 बार पढ़े)

(शाम को **अस्बहतु** की जगह **अम्सैतु** पढ़े)

اَللّٰهُمَّ مَآ أَصْبَحَ بِيْ مِنْ نِّعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ، فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ

अल्लाहुम्-म मा अस ब-ह बी मिन्निअ्-मतिन् अव् बिअ-हदिम्-मिन् ख़लक़ि-क फ़मिन्-क वह्-द-क ला शरी-क ल-क फ़-ल-कलहम्दु व ल-कश्शुक्रु० (अबूदाऊद, अ़-म-लुल् यौम वल्लैलह नसाई)

ऐ अल्लाह! सुबह के वक़्त मुझ पर या तेरी मख़्लूक़ में से किसी पर जो भी इनआ़म हुआ है तो वह सिर्फ़ तेरी तरफ़ से है। तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं, इसलिए तेरे लिए ही तअ़रीफ़ है और तेरे लिए ही शुक्र है।

(शाम को **अस ब-ह** की जगह **अम्सा** पढ़े)

❁ जिस ने यह दुआ सुबह के वक़्त पढ़ी उस ने उस दिन का शुक्र अदा कर दिया और जिस ने यह दुआ रात के वक़्त पढ़ी उस ने उस रात का शुक्र अदा कर दिया।

اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَدَنِيْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ سَمْعِيْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَصَرِيْ، لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ، اَللّٰهُمَّ إِنِّيْٓ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكُفْرِ، وَالْفَقْرِ، وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ

अल्लाहुम्-म आफ़िनी फ़ी ब-दनी, अल्लाहुम्-म आफ़िनी फ़ी समअ़ी, अल्लाहुम्-म आफ़िनी फ़ी ब-सरी, ला इला-ह इल्ला अन्-त, अल्लाहुम्-म इन्नी अअ़ूज़ुबि-क मिनलकुफ्रि वल्-फ़क्रि व अअ़ूज़ुबि-क मिन् अ़ज़ाबिल्-क़ब्रि ला इला-ह इल्ला अन्-त० (अबूदाऊद, अहमद, अ़-म-लुल्यौम वल्लैलह नसाई)

ऐ अल्लाह! मुझे आ़फ़ियत (आराम) दे मेरे बदन में, ऐ अल्लाह! मुझे आ़फ़ियत दे मेरे कानों में, ऐ अल्लाह! मुझे आ़फ़ियत दे मेरी आँखों में, तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, ऐ अल्लाह! यक़ीनन् मैं तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ कुफ्र और मोहताजी से, और मैं तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ क़ब्र के अ़ज़ाब से, तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं। (सुबह शाम 3 बार पढ़ें)

حَسْبِيَ اللهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

(जो सुबह शाम 7 बार पढ़ ले अल्लाह उस के लिए काफ़ी होगा) **हस्बियल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व अ़लैहि तवक्कलतु व हु-व रब्बुल्-अ़र्शिल्-अ़ज़ीम०** (अबूदाऊद)

मुझे अल्लाह ही काफ़ी है उस के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, उसी पर मैं ने भरोसा किया और वह अ़र्शे अ़ज़ीम का रब है।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِيْ دِيْنِيْ وَدُنْيَايَ وَأَهْلِيْ وَمَالِيْ، اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِيْ وَاٰمِنْ رَّوْعَاتِيْ، اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِيْ مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ وَمِنْ خَلْفِيْ وَعَنْ يَمِيْنِيْ وَعَنْ شِمَالِيْ، وَمِنْ فَوْقِيْ، وَأَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِيْ

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-कल्-अफ़्-व वल्-आफ़िय-त फ़िद्दुन्या वल्-आख़िर-रति, अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-कल्-अफ़्-व वल्-आफ़िय-त फ़ी दीनी व दुन्या-य व अहली व माली अल्लाहुम्-मस्तुरऔराती व आमिर रौआती, अल्लाहुम्म हफ़ज़्नी मिम् बैनि यदय्-य व मिन् ख़ल्फ़ी व अंय्यमीनी व अन् शिमाली व मिन् फ़ौक़ी व अऊज़ु बिअज़्मति -क अन् उग़ता-ल मिन् तहती (अबूदाऊद, इब्नेमाजह)

ऐ अल्लाह! बे शक मैं तुझ से दुनिया और आख़िरत में मआफ़ी और आफ़ियत का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह बेशक मैं तुझ से मआफ़ी और आफ़ियत का सवाल करता हूँ अपने दीन और दुनिया और अपने घर वालों और माल में, ऐ अल्लाह! मेरी पर्दा वाली बातों पर पर्दा डाल दे और मेरे ख़ौफ़ और घबराहट को सुकून से बदल दे, ऐ अल्लाह! तू मेरी हिफ़ाज़त कर मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरे दाएं से और मेरे बाएं से और मेरे ऊपर से, और मैं तेरी अज़मत की पनाह

चाहता हूँ इस बात से कि अचानक अपने नीचे से हलाक (बरबाद) किया जाऊँ।

اَللّٰهُمَّ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَّمَلِيْكَهٗ، أَشْهَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ، أَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهٖ، وَأَنْ أَقْتَرِفَ عَلٰى نَفْسِيْ سُوْءًا اَوْ أَجُرَّهٗ إِلٰى مُسْلِمٍ

अल्लाहुम्-म आलिमल्-ग़ैबि वश्शहादति फ़ातिरस्समावाति वल्-अर्ज़ि रब-ब कुल्लि शैइंव्-व मलीकहू, अश्हदु अल्ला इला-ह इल्ला अन्-त, अअूज़ुबि-क मिन् शर्रि नफ़्सी व मिन् शर्रिश्शैतानि व शिर्किही व अन् अक़्तरि-फ़ अला नफ़्सी सूअन् अव् अजुर्रहू इला मुस्लिम०

(अबूदाऊद, तिर्मिजी)

ऐ अल्लाह! ग़ैब (छिपे हुए) और हाज़िर के जानने वाले! आसमानों और ज़मीन को बे मिसाल पैदा करने वाले! ऐ हर चीज़ के पालनहार और मालिक! मैं गवाही देता हूँ कि (सच्चा)

मअ़बूद तू ही है, मैं तेरी पनाह में आता हूँ अपने नफ़्स की बुराई से, शैतान की बुराई से, उस की साझेदारी से और इस बात से कि अपने ही ख़िलाफ़ कोई बुरा काम करूँ या किसी मुसलमान के ख़िलाफ़ कोई बुरा काम करूँ।

بِسْمِ اللهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْأَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ

बिस्मिल्लाहिल्-लज़ी ला यज़ुर्रु मअ़स्मिही शैउन् फ़िल्-अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ व हु-वस्समीअ़ुल्-अ़लीम०

(तिर्मिज़ी, अबूदाऊद) (सुबह शाम 3 बार पढ़ें)

उस अल्लाह के नाम के साथ जिस के नाम के होते हुए कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुँचा सकती, ज़मीन की हो या आसमानों की वह ख़ूब सुनने वाला ख़ूब जानने वाला है। (जो कोई इस दुआ को सुबह 3 बार और शाम को 3 बार पढ़ ले तो उसे कोई चीज़ नुक़्सान नही पहुंचा सकती)

رَضِیْتُ بِاللهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِیْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ نَّبِیًّا

रज़ीतु बिल्लाहि रब्बंव् वबिल् इस्लामि दीनंव् वबिमुहम्मदिन् नबिय्या० (अहमद, अबूदाऊद) (सुबह शाम 3 बार पढ़ें)

जो कोई इस दुआ को सुबह 3 बार और शाम को 3 बार पढ़ा करे तो अल्लाह तआला ऐसे आदमी से क़यामत के दिन राज़ी और ख़ुश होगा।

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ اَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهٗ وَلَا تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ

या हय्यु या क़य्यूमु बिरहमति-क अस्तग़ीसु अस्लिह् ली शानी कुल्लहू व ला तकिलनी इला नफ़्सी तर-फ़-त ऐनि० (सहीहुत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब)

ऐ हमेशा ज़िन्दा! ऐ सदा क़ायम रहने वाले! मैं तेरी ही रहमत के ज़रिए फ़रयाद करता हूँ तू मेरा हर काम संवार दे, और मुझे आँख झपकने के बराबर भी मेरे अपने हवाले न कर।

أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ، اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ خَيْرَ هٰذَا الْيَوْمِ، فَتْحَهُ، وَنَصْرَهُ ، وَنُوْرَهُ وَبَرَكَتَهُ ، وَهُدَاهُ، وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهُ

अस्बहना व अस्ब-हलमुल्कु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन, अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क ख़ै-र हाज़लयौमि फ़त्-हहू व नस्-रहू व नू-रहू व ब-र-क-तहू व हुदाहू व अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि मा फ़ीहि व शर्रि मा बअ्-दहू० (अबूदाऊद)

हम ने और अल्लाह रब्बे काइनात के मुल्क ने सुबह की ऐ अल्लाह! मैं तुझ से माँगता हूँ इस दिन की भलाई, इस की कामयाबी और मदद इस का नूर और इस की बरकत और हिदायत, और मैं तेरी हिफ़ाज़त चाहता हूँ इस दिन की बुराई और बाद वाले दिनों की बुराई से।

(शाम को पढ़े **अम्सैना व अम्सल मुल्कु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन, अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क ख़ै-र हाज़िहिल लैलति फ़त्-ह हा व अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि मा फ़ीहा व शर्रि मा बअ्-दहा०**)

أَصْبَحْنَا عَلٰى فِطْرَةِ الْإِسْلَامِ، وَعَلٰى كَلِمَةِ الْإِخْلَاصِ، وَعَلٰى دِيْنِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى مِلَّةِ أَبِيْنَا إِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا وَّمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ

अस्बहना अला फ़ित्रतिल्-इस्लामि व अला कलिमतिल्-इख़लासि व अला दीनि नबिय्यिना मुहम्मदिंव्-व अला मिल्लति अबीना इब्राही-म हनीफ़म्-मुस्लिमंव्-व मा का-न मिनल्-मुश्रिकीन० (अहमद)

हम ने सुबह की इस्लामी स्वभाव पर, सच्ची बात पर, अपने नबी मुहम्मद ﷺ के दीन पर और अपने बाप इब्राहीम عليه السلام की मिल्लत पर जो यक रुख़ (और) थे। (शाम को **अस्बहना** की जगह **अम्सैना** पढ़ें)

سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही० (100 बार) (मुस्लिम)

मैं अल्लाह की तअ़रीफ़ के साथ साथ उस की पाकी बयान करता हूँ। जो कोई इस दुआ़ को 100 बार सुबह और 100

बार शाम पढ़ेगा क़यामत के दिन कोई भी उस के अ़मल (कर्म) से बहतर अ़मल ले कर नहीं आएगा, अगर कोई उस के बराबर या उस से ज़्यादा बार कहे। (तो वह उस से बहतर हो सकता है)

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू लहुल-मुल्कु व लहुल-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर०
(बुख़ारी, मुस्लिम)

अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत और उसी की ही तअ़रीफ है और वह हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखता है।

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो कोई सुबह के वक़्त इस दुआ को 100 बार पढ़े तो उसे 10 गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा और उस के 100 गुनाह मअ़ाफ़ किए जाएंगे और 100

नेकियाँ उस के नाम लिखी जाएंगी और उस की बरकत से उस दिन शाम तक शैतान की साज़िश से महफ़ूज़ रहेगा और कोई भी उस से बहतर अ़मल ले कर नहीं आएगा अगर कोई उस से ज़्यादा बार कहे (तो वह उस से बहतर हो सकता है)

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया जो शख़्स सुबह के वक़्त इसी दुआ को 10 बार पढ़े उसे इस्माईल عليه السلام की औलाद में से एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा और उस के 10 गुनाह मआ़फ़ किए जाएंगे और उस के 10 दर्जे बुलंद किए जाएंगे और वह शाम तक शैतान से हिफ़ाज़त में रहेगा और अगर शाम को यह दुआ पढ़े तो सुबह तक यह फ़ज़ीलत हासिल रहेगी। (नसाई, अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब)

سُبْحَانَ اللهِ وَ بِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَ رِضَا نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَ مِدَادَ كَلِمَاتِهٖ

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही अ-द-द ख़ल्क़िही व रिज़ा नफ़्सिही, व ज़ि-न-त अ़र्शिही व मिदा-द कलिमातिही०

(सुबह के वक़्त 3 बार पढ़ें) (मुस्लिम)

अल्लाह तआ़ला अपनी तअ़रीफ़ों समेत पाक है अपनी मख़लूक़ की तादाद के बराबर, अपनी ज़ात की ख़ुशी के बराबर, अपने अ़र्श के वज़न और अपने कलिमात की रोशनाई के बराबर।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا، وَّرِزْقًا طَيِّبًا، وَّعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क इल्मन्-नाफ़िअंव्-व रिज़क़न् तय्यिबंव्-व अ-मलम्-मु-त-क़ब्बला० (सुबह के वक़्त) (इब्ने माजह)

ऐ अल्लाह! बे शक मैं तुझ से माँगता हूँ नफ़ा देने वाला इल्म, पाक रोज़ी और क़ुबूल होने वाला अ़मल।

أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوْبُ إِلَيْهِ

अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह व अतूबु इलैहि० (दिन में 100 बार पढ़ें) (बुख़ारी फ़त्ह के साथ, मुस्लिम)

मैं अल्लाह से मआ़फ़ी माँगता हूँ और उस के सामने तौबा करता हूँ।

أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित्-ताम्माति मिन् शर्रि मा ख़-लक़० (शाम को 3 बार पढ़ें) (अहमद, सहीह तिर्मिज़ी)

मैं अल्लाह के पूरे कलमात की हिफ़ाज़त में आता हूँ उस की मख़्लूक़ की बुराई से।

जो कोई इस दुआ को शाम के वक़्त 3 बार पढ़े तो उसे उस रात में ज़हरीले जानवर का डसना (काटना) तकलीफ़ नहीं पहुँचाएगा।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ

अल्लाहुम्-म सल्लि अला मुहम्मदिव व अला आलि मुहम्मद० (सुबह और शाम 10 बार पढ़ें) (मजमउज़्ज़वाइद, अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब)

ऐ अल्लाह! हमारे नबी मुहम्मद ﷺ पर दरूद और सलाम भेज।

रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं जो आदमी सुबह के वक़्त 10 बार मुझ पर दरुद और सलाम पढ़े तो उसे क़यामत के दिन मेरी

शफ़ाअत नसीब होगी। (लेकिन शर्त यह है कि रसूलुल्लाह ﷺ पर दरुद और सलाम पढ़ने वाला तौहीद परस्त मुसलमान हो)

सोने के वक़्त की दुआएं

❁ दोनों हथेलियों को मिला कर सूरः इख़लास, सूरः फ़लक़ और सूरः नास पढ़े फिर इन में फूँक मारे, और अपने जिस्म पर जहाँ तक होसके फेरे, चेहरे और जिस्म के सामने वाले हिस्से से शुरू करे। इस तरह 3 बार करे। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ, मुस्लिम)

(सूरः इख़लास, फ़लक़, नास तर्जुमा के साथ पन्ना नं 70 से 72 पर देखें)

❁ जब तुम बिस्तर पर पहुँचो और **आयतुल कुर्सी (अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हुवल् हय्युल् क़य्यूम)** पूरी पढ़ो तो अल्लाह की तरफ़ से एक हिफ़ाज़त करने वाला साथ हो जाएगा और शैतान सुबह तक तुम्हारे क़रीब भी न आ सकेगा। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ)

(आयतुल् कुर्सी तर्जुमा के साथ पन्ना नं 73 पर देखें)

❁ जो शख़्स नीचे दी हुई दो आयतें रात के वक़्त पढ़ता है यह उस के लिए काफ़ी होती हैं।

﴿اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ ۫ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۫ وَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ○ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ عَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَ اعْفُ عَنَّا ۟ وَ اغْفِرْ لَنَا ۟ وَ ارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○﴾

आ-म-नर्रसूलु बिमा उन्ज़िल इलैहि मिर्रब्बिही वलमुअ्मिनू-न कुल्लुन् आ म-न बिल्लाहि व मला-इ कतिही व कुतुबिही व रुसुलिही ला नुफ़र्रिकु बै-न अ-ह-

दिम्-मिर्रुसुलिही व क़ालू समिअ्-ना व अतअ्ना गुफ़रा-न-क रब्बना व इलैकलमसीर० ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन् इल्ला वुस्अहा लहा मा क-स-बत् व अ़लैहा मक त सबत् रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन्नसीना औ अख़्तअ्ना रब्बना व ला तहिमल् अ़लैना इस्रन् कमा हमल्तहु अ़लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिना रब्बना व ला तुहम्मिलना मा ला ता क़-त लना बिही वअ्-फ़ु अ़न्ना वग़्फ़र-लना वर्हम्ना अन्-त मौलाना फ़न्सुर्ना अ़-लल्-क़ौमिल्-काफ़िरीन० (सूर: ब-क़-र:) (बुख़ारी फ़त्ह के साथ, मुस्लिम)

अल्लाह का रसूल उस किताब पर ईमान लाया जो उस के परवरदिगार की तरफ़ से उस पर उतारी गई और मोमिन भी उस पर ईमान लाए। सब ईमान लाए अल्लाह पर, उस के फ़रिश्तों पर, उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर, हम उस के रसूलों में से किसी में फ़र्क़ नहीं करते और वह (अल्लाह से) कहते हैं कि हम ने (तेरा हुक्म) सुना और क़ुबूल किया। ऐ परवरदिगार हम तुझ से मआ़फ़ी माँगते हैं और तेरी ही तरफ़ (हमारी) वापसी है। अल्लाह तआ़ला किसी शख़्स

को उस की ताक़त से ज़्यादा तक्लीफ़ नहीं देता। जो शख़्स नेकी करेगा उस का फ़ाएदा उसी को मिलेगा और जो बुराई करेगा उस का वबाल उसी पर होगा। ऐ हमारे रब! अगर हम से भूल हो जाए या हम ग़लती करें तो हमारी पकड़ न करना। ऐ हमारे रब! हम पर ऐसा बोझ न डालना जैसा बोझ तू ने हम से पहले लोगों पर डाला था। ऐ हमारे रब! हम से उतना बोझ न उठवा जिस (के उठाने) की हम में ताक़त नहीं है तू हम को मआफ़ करदे। हमारी मग़्फ़िरत कर दे और हम पर रहम और महरबानी कर। तू हमारा मालिक है तू काफ़िरों के ख़िलाफ़ हमारी मदद कर।

بِاسْمِكَ رَبِّيْ وَضَعْتُ جَنْبِيْ وَبِكَ أَرْفَعُهٗ إِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِيْ فَارْحَمْهَا وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهٖ عِبَادَكَ الصَّالِحِيْنَ

बिस्मि-क रब्बी वज़अ् तु जम्बी वबि-क अरफ़अुहू इन् अम्सक्-त नफ़्सी फ़रहम्हा व इन् अरसल्तहा फ़ह्-फ़ज़्हा बिमा तह्-फ़ज़ु बिही इबाद-कस्सालिहीन० (बुख़ारी, मुस्लिम)

ऐ मेरे रब! मैं ने तेरे ही नाम के साथ अपना पहलू (बिस्तर पर) रखा। और तेरे ही (हुक्म से) इसे पर उठाऊँगा,अगर तू मेरी रूह को रोक ले तो उस पर रहम करना और अगर उसे छोड़ दे तो उस की ऐसे हिफ़ाज़त करना जैसे तू अपने नेक बन्दों की हिफ़ाज़त करता है।

اَللّٰهُمَّ إِنَّكَ خَلَقْتَ نَفْسِيْ وَأَنْتَ تَوَفَّاهَا، لَكَ مَمَاتُهَا وَمَحْيَاهَا، إِنْ أَحْيَيْتَهَا فَاحْفَظْهَا، وَإِنْ أَمَتَّهَا فَاغْفِرْ لَهَا، اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ

अल्लाहुम्-म इन्न-क ख़लक्-त नफ़्सी व अन्-त तवफ़्फ़ाहा, ल-क ममातुहा व महयाहा इन् अहयय्-तहा फ़ह्-फ़ज़हा व इन् अमत्तहा फ़ग़्फ़िर लहा अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-कल-आफ़ियह० (मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! तू ने ही मेरी रूह को पैदा किया और तू ही उसे मौत देगा, तेरे ही हाथ में उस की मौत और ज़िन्दगी है। अगर तू उसे ज़िन्दा रखे तो उस की हिफ़ाज़त करना और अगर तू

उसे मौत दे तो उसे मआफ़ करना ऐ अल्लाह! बेशक में तुझ से राहत का सवाल करता हूँ।

اَللّٰهُمَّ قِنِیْ عَذَابَكَ یَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ

अल्लाहुम्-म क़िनी अ़ज़ाब-क यौ-म तब्-अ़सु इबादक०
(अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

या अल्लाह! मुझे (उस दिन) अपने अ़ज़ाब से बचाना जिस दिन तू अपने बन्दों को उठाएगा।

❁ रसूलुल्लाह ﷺ जब सोने का इरादा करते तो अपना दायाँ हाथ अपने रूख़्सार (गाल) के नीचे रखते फिर 3 बार ऊपर लिखी हुई दुआ पढ़ते। (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

بِاسْمِكَ اَللّٰهُمَّ أَمُوْتُ وَأَحْیَا

बिस्मि-कल्लाहुम्-म अमूतु व अह्या० (बुख़ारी, मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! मैं तेरे ही नाम से मरता और जीता हूँ।

❁ रसूलुल्लाह ﷺ ने अ़ली رضی اللہ عنہ और फ़ातिमा رضی اللہ عنہا से फ़रमाया: क्या मैं तुम दोनों को वह चीज़ न बताऊँ जो तुम्हारे

लिए नौकर (ख़ादिम) से बहतर है। जब तुम अपने बिस्तर पर जाओ तो 33 बार **सुब्हानल्लाह** (अल्लाह पाक है) कहो और 33 बार **अल-हम्दु लिल्लाह** (हर तअ़रीफ़ अल्लाह के लिए है) कहो और 34 बार **अल्लाहु अक्बर** (अल्लाह सब से बड़ा है) कहो यह तुम्हारे लिए नौकर से बहतर है। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ, मुस्लिम)

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ، فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوٰى، وَمُنْزِلَ التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيْلِ، وَالْفُرْقَانِ، أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ أَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهٖ، اَللّٰهُمَّ أَنْتَ الْأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَّأَنْتَ الْاٰخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ، وَّأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَّأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُوْنَكَ شَيْءٌ، اِقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَأَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ

अल्लाहुम्-म रब्बस्-समावातिस्-सब्अि व रब्बल्-अर्शिल्-अ़ज़ीमि, रब्बना व रब्-ब कुल्लि शैइन् फ़ालिक़ल्-हब्बि

वन्नवा व मुन्जिलत्-तौराति वल्-इन्जीलि वल्-फ़ुरक़ानि, अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि कुल्लि शैइन् अन्तआख़िज़ुम् बिनासियतिही अल्लाहुम्-म अन्तलअव्वलु फ़लै-स क़ब्ल-क शैउंव्-व अन्तलआख़िरु फ़लै-स बअ्-द-क शैउंव्-व अन्तज़्ज़ाहिरु फ़लै-स फ़ौ-क़-क शैउंव्-व अन्तलबातिनु फ़लै-स दू-न-क शैउन् इक़्ज़ि अन्नद्-दै-न व अग़्निना मिनल्-फ़क़्र॰ (मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! ऐ सातों आसमानों के रब! ऐ अर्शे अज़ीम के रब! ऐ हमारे और हर चीज़ के रब! ऐ दाने और गुठली को फाड़ने वाले! ऐ तौरात, इन्जील और फ़ुरक़ान (क़ुर्आन) नाज़िल करने वाले! मैं हर उस चीज़ की बुराई से तेरी हिफ़ाज़त चाहता हूँ तू जिस की पेशानी पकड़े हुए है। ऐ अल्लाह! तू ही पहले है, तुझ से पहले कोई चीज़ नहीं और तू ही आख़िर है, तेरे बाद कोई चीज़ नहीं और तू ही ज़ाहिर है, तुझ से ऊपर कोई चीज़ नहीं है। और तू ही छिपा है तुझ से छिपी कोई चीज़ नहीं। हम से क़र्ज़ अदा (करने का सबब पैदा) कर दे और हमें मोहताजी से ग़नी कर दे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا، وَ كَفَانَا، وَاٰوَانَا، فَكَمْ مِّمَّنْ لَّا كَافِیَ لَهٗ وَلَا مُؤْوِیَ

अल-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ी अत्-अ-म-ना व सक़ाना व कफ़ाना व आवाना फ़-कम् मिम्मल्ला काफ़ि-य लहू व ला मूवि-य० (मुस्लिम)

सब तरह की तअरीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिस ने हमें खिलाया और पिलाया, और हमें काफ़ी हो गया, और हमें ठिकाना दिया, कितने ऐसे लोग हैं जिन्हें कोई किफ़ायत करने वाला न ठिकाना देने वाला है।

اَللّٰهُمَّ عَالِمَ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ، رَبَّ كُلِّ شَیْءٍ وَّمَلِیْكَهٗ، أَشْهَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ، أَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ، وَمِنْ شَرِّ الشَّیْطٰنِ وَشِرْكِهٖ، وَأَنْ أَقْتَرِفَ عَلٰی نَفْسِیْ سُوْٓءًا، أَوْ أَجُرَّهٗ إِلٰی مُسْلِمٍ

अल्लाहुम्-म आलिमल्-ग़ैबि वश्शहादति फ़ातिरस्समावाति वल्-अर्ज़ि, रब्-ब कुल्लि शैइंव्-व मलीकहू, अश्हदु अल्ला इला-ह इल्ला अन्-त, अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि नफ़्सी व मिन् शर्रिश्शैतानि व शिर्किही व अन् अक़्तरि-फ़ अला नफ़्सी सूअन् अव् अजुर्रहू इला मुस्लिम०
(अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

ऐ अल्लाह! ऐ छिपे और हाज़िर को जानने वाले! ऐ आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाले! ऐ हर चीज़ के रब और मालिक! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, मैं तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ अपने नफ़्स की बुराई से और शैतान की बुराई और उस की साझेदारी से और इस बात से भी (तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ कि) मैं अपने ख़िलाफ़ कोई बुराई करूँ या किसी मुसलमान के ख़िलाफ़ कोई बुराई करूँ ।

रसूलुल्लाह ﷺ उस समय तक नहीं सोते थे जब तक कि आप ﷺ सूरः **अलिफ़्-लाम्-मीम्-तन्ज़ील-सज्दः** और सूरः **तबारकल्लज़ी बियदिहिल्- मुल्कु** न पढ़ लेते। (तिर्मिज़ी, सहीहुल्- जामेअ़)

اَللّٰهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِيْ إِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِيْ إِلَيْكَ، وَوَجَّهْتُ وَجْهِيْ إِلَيْكَ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِيْ إِلَيْكَ رَغْبَةً وَّرَهْبَةً إِلَيْكَ لَا مَلْجَأَ وَلَا مَنْجَا مِنْكَ إِلَّآ إِلَيْكَ، اٰمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِيْٓ أَنْزَلْتَ وَبِنَبِيِّكَ الَّذِيْٓ أَرْسَلْتَ

अल्लाहुम्-म अस्लम्तु नफ़्सी इलै-क व फ़व्वज़्तु अम्री इलै-क व वज्जहतु वज्ही इलै-क व अल्जअ्तु ज़हरी इलै-क, रग़्बतंव्-व रहबतन् इलै-क ला मल्जआ व ला मन्जआ मिन्-क इल्ला इलै-क आमन्तु बिकिताबि-कल्लज़ी अन्ज़ल्-त व बिनबिय्यि-कल्लज़ी अर्सल्-त० (बुख़ारी फ़त्ह के साथ, मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! मैं ने अपनी रूह तेरे सुपुर्द कर दी और अपना काम तुझे सौंप दिया, और मैं ने अपना चेहरा तेरी तरफ़ किया और अपनी पीठ तेरी तरफ़ झुकाई (यह सब कुछ तेरी तरफ़ झुकाव, शौक़ और तुझ से डरते हुए किया) तेरे सिवा कोई न पनाह की जगह है और न छुट्कारे की जगह, मैं तेरी उस

किताब पर ईमान लाया जिसे तू ने नाज़िल किया और तेरे उस नबी ﷺ पर भी जिसे तू ने (हमारी तरफ़) भेजा।

आप ﷺ ने इस दुआ को पढ़ने वाले के बारे में फ़रमाया अगर तुम्हारी मौत हो जाए तो तुम्हारी मौत फ़ितरते इस्लाम पर होगी।

रात के वक़्त करवट बदलते हुए दुआ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ، رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ

ला इला-ह इल्लल्लाहुल्-वाहिदुल्-क़हहारु रब्बुस्समावाति वल्-अर्ज़ि व मा बै-नहुमल्-अज़ीज़ुल्-ग़फ़्फ़ार० (सहीहुल्-जामेअ़)

अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, वह अकेला ग़ालिब (शक्ति मान) है, वह आसमानों और ज़मीन और इन के बीच वाली चीज़ों का रब है, वह ग़ालिब है, मआ़फ़ करने वाला है।

नींद में परेशानी या तन्हाई महसूस करने की दुआ

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهِ وَعِقَابِهِ، وَشَرِّ عِبَادِهِ،
وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَأَنْ يَّحْضُرُوْنِ

अअ़ूज़ु बिकलिमातिल्लाहित्-ताम्-माति मिन् ग़-ज़ बिही व इकाबिही व शर्रि इबादिही व मिन् ह-मज़ातिश्शयातीनि व अंय्यहज़ुरून० (अबूदाऊद, सहीह तिर्मिज़ी)

मैं अल्लाह के पूरे कलिमात की पनाह में आता हूँ, उस की नाराज़ी और उस की सज़ा से और उस के बन्दों की बुराई और शैतान के वस्वसा डालने (गुनाहों पर उभारने और उकसाने) और उन के मेरे पास आने से।

बुरा ख़्वाब आए तो क्या करे?

1) तीन बार अपनी बाईं तरफ़ थूत्कारे।

2) शैतान और अपने इस ख़्वाब की बुराई से तीन बार अल्लाह की पनाह माँगे।

3) यह ख़्वाब किसी को न सुनाए।

4) जिस पहलू पर लेटा हो, उसे बदल दे।

5) अगर दिल चाहे तो उठ कर नमाज़ पढ़े। (मुस्लिम)

क़ुनूते वित्र की दुआएं

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِيْ فِيْمَنْ هَدَيْتَ، وَعَافِنِيْ فِيْمَنْ عَافَيْتَ، وَتَوَلَّنِيْ فِيْمَنْ تَوَلَّيْتَ، وَبَارِكْ لِيْ فِيْمَا أَعْطَيْتَ، وَقِنِيْ شَرَّ مَا قَضَيْتَ، فَإِنَّكَ تَقْضِيْ وَلَا يُقْضٰى عَلَيْكَ، إِنَّهٗ لَا يَذِلُّ مَنْ وَّالَيْتَ، [وَلَا يَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ]، تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ

अल्लाहुम्-महदिनी फ़ीमन् हदै-त व आफ़िनी फ़ीमन् आफ़ै-त व त-वल्लनी फ़ीमन् त-वल्लै-त व बारिक ली फ़ीमा अअ्तै-त व क़िनी शर्रमा क़ज़ै-त फ़इन्न-क तक़्ज़ी व ला युक़्जा अलै-क इन्नहू ला यज़िल्लु मंव्-वालै- त वला यअिज़्ज़ु मन् आदै-त तबारक्-त रब्बना व तआलै-त० (अबूदाऊद, नसाई, सहीह तिर्मिज़ी)

ऐ अल्लाह! तू ने जिन लोगों को हिदायत दी है मुझे भी उन में हिदायत दे और जिन लोगों को तू ने आफ़ियत दी है मुझे भी

उन में आ़फ़ियत दे और जिन लोगों की तू ने सरपरस्ती की है उन लोगों में मेरा भी सरपरस्त बन और जो कुछ तू ने मुझे दिया है उस में मेरे लिए बरकत दे और तू ने जो फ़ैसले किए हैं उन की बुराई से बचा क्यों कि तू ही फ़ैसले करता है और तेरे ख़िलाफ़ कोई फ़ैसला नहीं कर सकता। यक़ीनी बात है कि तू जिस का दोस्त बन जाए वह कभी रुस्वा नहीं होता और जिस से तू दुश्मनी करे वह कभी भी इज़्ज़त वाला नहीं हो सकता। ऐ हमारे रब! तू बरकत वाला और उँची शान वाला है।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ، وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ، وَأَعُوْذُبِكَ مِنْكَ، لَآ أُحْصِيْ ثَنَآءً عَلَيْكَ، أَنْتَ كَمَآ أَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊ़ज़ु बिरिज़ा-क मिन् स-ख़ति-क व बिमुआफ़ाति-क मिन् अुक़ूबति-क व अऊ़ज़ुबि-क मिन्-क, ला अुहसी स़नाअन् अलै-क अन्-त कमा असनै-त अला नफ़सिक० (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

ऐ अल्लाह! मैं तेरी ख़ुशी की हिफ़ाज़त में आता हूँ तेरी नाराज़ी से और तेरी मआफ़ी की हिफ़ाज़त में आता हूँ तेरी सज़ा से और तेरे अज़ाब से तेरी ही हिफ़ाज़त में आता हूँ, मैं पूरी तरह तेरी तअरीफ़ कर ही नहीं सकता तू ऐसा ही है जैसे तू ने ख़ुद अपनी तअरीफ़ की है।

اَللّٰهُمَّ إِيَّاكَ نَعْبُدُ، وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ، وَإِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ الْجِدَّ، وَنَرْجُوْ رَحْمَتَكَ إِنَّ عَذَابَكَ بِالْكَافِرِيْنَ مُلْحِقٌ اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ، وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ وَلَا نَكْفُرُكَ، وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّكْفُرُكَ

अल्लाहुम्-म इय्याकनअ्बुदु व ल-क नुसल्ली व नस्जुदु व इलै-क नस्आ व नहफ़िदु नरजू रह्-म-त-क व नख़शा अज़ाब-क इन्-न अज़ाब-क बिल्-काफ़िरी-न मुल्हिक़ अल्लाहुम्-म इन्ना नस्तईनु-क व नस्तग़्फ़िरु-क व नुस्नी अलै-कल्-ख़ै-र व ला नक्फ़ुरु-क व नुअ्मिनु बि-क व नख़्-ज़अु ल-क व नख़्-लअु मंय्यक्फ़ुरु-क० (सु-नने कुब्रा बैहक़ी)

ऐ अल्लाह! हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और तेरे लिए ही नमाज़ पढ़ते और सज्दा करते हैं और तेरी तरफ़ ही कोशिश और जल्दी करते हैं। हम तेरी रहमत की उम्मीद रखते और तेरे अ़ज़ाब से डरते हैं। यक़ीनन् तेरा अ़ज़ाब काफ़िरों को चिमटने वाला है। ऐ अल्लाह! बेशक हम तुझ से मदद् माँगते हैं और तुझ से मअ़ाफ़ी माँगते हैं और तेरी अच्छी तअ़रीफ़ करते हैं हम तेरी नाशुक्री नहीं करते हम तुझ पर ईमान लाते हैं और तेरे सामने झुकते हैं और जो तेरी नाशुक्री करता है हमारा उस से कोई संबन्ध नहीं।

वित्र के सलाम के बाद की दुआएं

سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ

सुब्हानल्-मलिकिल् क़ुददूस०

पाक है बादशाह बहुत ही पाकीज़गी वाला।

3 बार पढ़े तीसरी बार ज़ोर से कहे, आवाज़ को लम्बा भी करे और उस के साथ यह भी पढ़े।

رَبُّ الْمَلَآئِكَةِ وَالرُّوْحِ

(रब्बुल्-मलाइ-कति वर्रूह)० (नसाई)

(पाक है बहुत ही मुक़द्दस बादशाह) जो फ़रिशतों और जिबरईल अमीन का रब है।

फ़िक्र और ग़म की दुआएं

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ عَبْدُكَ، وَابْنُ عَبْدِكَ، وَابْنُ أَمَتِكَ، نَاصِيَتِيْ بِيَدِكَ، مَاضٍ فِيَّ حُكْمُكَ، عَدْلٌ فِيَّ قَضَاؤُكَ أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ، سَمَّيْتَ بِهٖ نَفْسَكَ أَوْ أَنْزَلْتَهٗ فِيْ كِتَابِكَ، أَوْ عَلَّمْتَهٗ أَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ، أَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهٖ فِيْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ، أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْاٰنَ رَبِيْعَ قَلْبِيْ، وَنُوْرَ صَدْرِيْ وَجَلَآءَ حُزْنِيْ وَذَهَابَ هَمِّيْ

अल्लाहुम्-म इन्नी अ़ब्दु-क वब्नु अ़ब्दि-क वब्नुअ-मति-क,नासियती बियदि-क, माज़िन् फ़िय्-य हुक्मु-क अ़द्लुन् फ़िय्-य क़ज़ाउ-क अस्अलु-क बिकुल्लिस्मिन् हु-व ल-क सम्मै-त बिही नफ़ स-क अव् अन्ज़ल्-तहू फ़ी किताबि-क अव् अ़ल्लम्-तहू अ-हदम् मिन् ख़ल्क़ि-क अविस्तासर्-त बिही फ़ी इल्मिल्-ग़ैबि इन्द-क अन् तज्अ़-लल्क़ुरआ-न

रबी-अ क़लबी व नू-र सद्री व जलाअ हुज़्नी व ज़हा-ब हम्मी० (अहमद)

ऐ अल्लाह! यक़ीनन् मैं तेरा बन्दा हूँ और तेरे ही बन्दे और तेरी ही बन्दी का बेटा हूँ, मेरी पेशानी तेरे ही हाथ में है मुझ में तेरा हुक्म जारी है मेरे बारे में तेरा फ़ैसला इन्साफ़ पर है। मैं तेरे हर ख़ास नाम के ज़रीए तुझ से बिंती करता हूँ जो तू ने ख़ुद अपना नाम रखा है या उसे अपनी किताब में उतारा है या अपनी मख़लूक़ में से किसी एक को सिखाया है या उसे अपने यहाँ इल्मे ग़ैब में रखने को पसंद किया है। (मैं आजिज़ी करता हूँ कि) तू क़ुरआन मजीद को मेरे दिल की बहार और मेरे सीने का नूर, मेरे ग़म का इलाज और मेरी फ़िक्र का इलाज बना दे।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَ الْحُزْنِ، والْعَجْزِ والْكَسَلِ والْبُخْلِ والْجُبْنِ، وضَلْعِ الدَّيْنِ وغَلَبَةِ الرِّجَالِ

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिनल्-हम्मि वल-हुज़्नि वल्-अज्ज़ि वल्-क-सलि वल्- जुब्नि वल्-बुख़्लि व ज़-ल-इद्-दैनि व ग़-ल-बतिर्रिजाल० (बुख़ारी)

ऐ अल्लाह! यक़ीनन् मैं तेरी हिफ़ाज़त चाहता हूँ परेशानी और ग़म से, कमज़ोरी और काहिली से और कंजूसी और बुज़दिली से, क़र्ज़ के बोझ और लोगों के अत्याचार से।

तक्लीफ़ और मुसीबत के वक़्त की दुआएं

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ الْعَظِيْمُ الْحَلِيْمُ، لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ

ला इला-ह इल्लल्लाहुल्-अज़ीमुल्-हलीमु, ला इला-ह इल्लल्लाहु रब्बुल्-अर्शिल्-अज़ीमि ला इला-ह इल्लल्लाहु रब्बुस्समावाति व रब्बुल्-अर्ज़ि व रब्बुल्-अर्शिल्-करीम०

(बुख़ारी, मुस्लिम)

अ़ज़मत वाले बुर्दबार अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं जो अ़र्शे अ़ज़ीम (विशाल अर्श) का रब है, अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं जो आसमानों का रब है और ज़मीन का रब है और अ़र्शे करीम का रब है।

اَللّٰهُمَّ رَحْمَتَكَ أَرْجُوْ فَلَا تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ، وَّأَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ

अल्लाहुम्-म रह्-म-त-क अर्जू फ़ला तकिलनी इला नफ़्सी तर्-फ़-त अैनिंव्-व अस्लिह ली शअ्नी कुल्लहू ला इला-ह इल्ला अन्-त० (अबूदाऊद, अहमद)

ऐ अल्लाह! मैं तेरी रहमत ही की उम्मीद रखता हूँ, इसलिए तू मुझे पलक झपकने के बराबर भी मेरे अपने हवाले न करना और मेरे सब काम सुधार दे कि तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं।

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ أَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ

ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हान-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन० (तिर्मिज़ी)

तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं तू पाक है। यक़ीनन् मैं ही ज़ालिमों में से हूँ।

اَللّٰهُ اَللّٰهُ رَبِّيْ لَآ أُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا

अल्लाहु अल्लाहु रब्बी ला उशरिकु बिही शैआ०
(अबूदाऊद)

अल्लाह! अल्लाह मेरा रब है मैं उस के साथ किसी को शरीक नहीं करता।

दुश्मन और ज़ालिम बादशाह से मिलते वक़्त की दुआएं

اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ، وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ

अल्लाहुम्-म इन्ना नज्अलु-क फ़ी नुहूरिहिम् व नअुज़ुबि-क मिन् शुरुरिहिम्० (अबूदाऊद)

ऐ अल्लाह! हम तुझे उन के मुक़ाबले में करते हैं। और उन की शरारतों से तेरी हिफ़ाज़त में आते हैं।

اَللّٰهُمَّ أَنْتَ عَضُدِيْ، وَأَنْتَ نَصِيْرِيْ، بِكَ أَجُوْلُ وَبِكَ أَصُوْلُ وَبِكَ أُقَاتِلُ

अल्लाहुम्-म अन्-त अज़ुदी वअन्-त नसीरी, बि-क अजूलु वबि-क असूलु वबि-क उक़ातिलु० (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

ऐ अल्लाह! तू ही मेरा बाज़ू है और तू ही मेरा मदद्गार। तेरी ही तौफ़ीक़ से मैं चलता फिरता और तेरी ही मदद् से (दुश्मन पर) हमला करता हूँ और तेरी(मदद के) साथ ही दुश्मन से लड़ता हूँ।

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ

हस्बुनल्लाहु व निअ्मल्-वकील० (बुख़ारी)

हमें अल्लाह (ही) काफ़ी है और वह सब से अच्छा मददगार (कारसाज़) है।

बादशाह के ज़ुल्म के ड़र की दुआ

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، كُنْ لِّيْ جَارًا مِّنْ فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ وَّ اَحْزَابِهٖ مِنْ خَلَآئِقِكَ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيَّ اَحَدٌ مِّنْهُمْ اَوْيَطْغٰى، عَزَّ جَارُكَ وَ جَلَّ ثَنَآؤُكَ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ

अल्लाहुम्-म रब्बस्समावातिस्-सब्अि व रब्बल्-अर्शिल्-अज़ीमि, कुल्ली जारम्-मिन् फ़ुलानिब्नि फ़ुलानिंव्-व

अहज़ा बिही मिन् ख़लाइक़ि-क अंय्यफ़ुरु-त अलय्-य अ-हदुम्-मिन्हुम् अव् यत़ग़ा, अज़्-ज़ जारु-क व जल्-ल सनाउ-क व ला इला-ह इल्ला अन्-त० (अल्-अ-द-बुल्मुफ़रद् बुख़ारी)

ऐ अल्लाह! सातों आसमानों के रब और अर्शे अज़ीम के रब! पनाह बन जा तु मेरे लिए फ़लाँ बिन फ़लाँ (यहाँ उस आदमी का नाम ले) से और अपनी मख़लूक़ में से उसके गिरोहों से (इस बात से) कि इन में से कोई एक (मुझ पर) ज़्यादती या बुराई करना चाहे, तेरी हिफ़ाज़त बहुत मज़बूत है, तेरी तअरीफ़ बड़ी शान वाली है, तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअबूद नहीं।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَعَزُّ مِنْ خَلْقِهٖ جَمِيْعًا، اَللّٰهُ اَعَزُّ مِمَّآ اَخَافُ وَ اَحْذَرُ، اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ، اَلْمُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ اَنْ يَّقَعْنَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ مِنْ شَرِّ عَبْدِكَ فُلَانٍ وَّجُنُوْدِهٖ وَاَتْبَاعِهٖ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ، اَللّٰهُمَّ كُنْ لِّىْ جَارًا مِّنْ

شَرِّهِمْ جَلَّ ثَنَآؤُكَ وَ عَزَّ جَارُكَ وَ تَبَارَكَ اسْمُكَ وَ لَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

अल्लाहुअकबर, अल्लाहु अअ़ज़्ज़ु मिन् ख़ल्क़िही जमीअ़न्, अल्लाहु अअ़ज़्ज़ु मिम्मा अख़ाफ़ु व अह्-ज़रु, अअ़ूज़ुबिल्लाहिल्- लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व, अलमुम्सिकुस्-समावातिस्-सब्अि अंय्यक़अ़्-न अ़लल्-अर्ज़ि इल्ला बिइ़ज़्निही मिन् शर्रि अ़ब्दि-क फ़ुलानिंव्- व जुनूदिही व अत्बाअ़िही व अशयाअ़िही मिनलजिन्नि वलइन्सि, अल्लाहुम्-म कुल्ली जारम्-मिन् शर्रिहिम् जल्-ल सनाउ-क व अ़ज़्-ज़ जारु-क व तबा-र-कस्मु-क व ला इला-ह ग़ैरु-क (3 बार)० (अल्-अदबुल्मुफ़रद् बुख़ारी)

अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह तआ़ला अपनी सारी मख़लूक़ पर ग़ालिब है, अल्लाह उन चीज़ों से कहीं ज़्यादा ताक़त वाला है जिन से मैं घबराता और डरता हूं, मैं उस अल्लाह की हिफ़ाज़त में आता हूँ जिस के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, जिस ने सातों असमानों को ज़मीन पर गिरने से रोक रखा है,

मगर उस की इजाज़त से (गिर सकते हैं)। ऐ अल्लाह! मैं तेरे फ़लाँ बन्दे (यहाँ उस आदमी का नाम ले) की बुराई से, उस के लश्करों की बुराई से, उस के पैरोकारों और उस के साथी जिन्नों और इन्सानों से (तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ) ऐ अल्लाह! उन की बुराई से, तू मेरे लिए पनाह बन जा। तेरी तअ़रीफ़ बड़ी शान वाली है। तेरी हिफ़ाज़त बहुत मज़बूत है, तेरा नाम बरकत वाला है और तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं।

दुश्मन को बद्दुआ देना

اَللّٰھُمَّ مُنْزِلَ الْکِتَابِ، سَرِیْعَ الْحِسَابِ، اِھْزِمِ الْاَحْزَابَ، اَللّٰھُمَّ اھْزِمْھُمْ وَزَلْزِلْھُمْ

अल्लाहुम्-म मुन्ज़िलल्-किताबि, सरीअ़ल्-हिसाबिहज़िमिल्- अहज़ा-ब, अल्लाहुम्-महज़िम्हुम् व ज़लज़िल्हुम्० (मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! किताब को उतारने वाले! जल्द हिसाब लेने वाले! (मुख़ालिफ़) गिरोहों को हिला कर रख दे, ऐ अल्लाह! उन्हें हरादे और उन्हें हिला कर रख दे।

लोगों से डर लगे तो क्या पढ़े

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْهِمْ بِمَا شِئْتَ

अल्लाहुम्-मक्फ़ीनीहिम् बिमा शिअ्-त० (मुसिलम)

ऐ अल्लाह! जिस तरह तू चाहे मुझे इन से काफ़ी हो जा।

ईमान में शक हो जाने की दुआ

1. अल्लाह तआ़ला की पनाह माँगे।

2. उस चीज़ या काम से रुक जाए जिस में शक हो। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ)

फिर कहे:

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ

आमन्तु बिल्लाहि व रुसुलिही० (मुस्लिम)

मैं अल्लाह तआ़ला और उस के रसूलों पर ईमान लाया।

इन कलमात के बाद अल्लाह तआ़ला का यह फ़रमान पढ़े:

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ

हु-वल्-अव्-वलु वल्-आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल्-बातिनु व हु-व बिकुल्लि शैइन् अलीम० (सुर: अल हदीद 3, अबूदाऊद)

वही अव्वल है वही अख़िर है वही ज़ाहिर है वही बातिन है और वह हर चीज़ को ख़ूब जानता है।

कर्ज़ की अदाईगी की दुआ

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ، وَأَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

अल्लाहुम्-मक्फ़िनी बिहलालि-क अन् हरामि-क व अग़्निनी बिफ़ज़्लि-क अम्मन् सिवा-क० (तिर्मिज़ी)

ऐ अल्लाह! तू मुझे अपनी हलाल (की हुई) चीज़ के साथ अपनी हराम (की हुई) चीज़ से काफ़ी हो और मुझे अपने फ़ज़्ल से अपने सिवा सब से बेपरवाह कर दे।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ، وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ، وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ

अल्लाहुम्-म इन्नी अअ़ूज़ुबि-क मिनल्-हम्मि वल हुज़्नि वल्-अ़ज्ज़ि वल्-क-सलि वल्-जुब्नि वल्-बुख़्ल व ज़-लअ़िद्दैनि व ग़-ल बतिर्रिजाल० (बुख़ारी)

ऐ अल्लाह! यक़ीनन् मैं तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ परेशानी और ग़म से, कमज़ोरी और काहिली से, कंजूसी और बुज़दिली से, और क़र्ज़ के बोझ और लोगों के अत्याचार से।

क़ुरआन या नमाज़ पढ़ते हुए वसवसा आने की दुआ

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

अअ़ूज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम० (पढ़ कर बाईं तरफ 3 बार थुत्कार दे)। (मुस्लिम)

मैं अल्लाह की पनाह में आता हूँ शैतान मर्दूद से। उस्मान बिन अबिल आस ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल ! शैतान मेरे और मेरी नमाज़ और क़िरअत के बीच रुकावट बन जाता है। इस तरह कि वह नमाज़ की तादाद और क़िरअत मुझ पर गड़ मड़ कर देता है। रसूलुल्लाह ﷺ ने जवाब दिया कि वह एक शैतान है जिसका नाम ख़िन्ज़ब है, जब तुम उसे

महसूस करो तो 3 बार उस से अल्लाह की पनाह मांगो और बाईं तरफ़ तीन बार थुत्कार दो। इस रिवायत में उस्मान رضی اللہ عنہ फ़रमाते हें कि मैंने ऐसा ही किया तो अल्लाह तआ़ला ने उसे मुझ से दूर कर दिया।

मुश्किल के वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ إِلَّا مَا جَعَلْتَهٗ سَهْلًا، وَّأَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ إِذَا شِئْتَ سَهْلًا

अल्लाहुम्-म ला सह्-ल इल्ला मा जअ़ल्-तहू सहलन् व अन्-त तज्अ़लुल्हज़्-न इज़ा शिअ्-त सह्-लन्० (सहीह इब्ने हिब्बान)

ऐ अल्लाह! सिर्फ़ वही काम आसान है जिसे तू ने आसान कर दिया और तू जब चाहे मुश्किल को आसान कर देता है।

गुनाह कर बैठे तो क्या करे?

जो शख़्स कोई गुनाह करे तो वह अच्छी तरह वुज़ू करे फिर खड़ा हो कर दो रकात नमाज़ पढ़े, अल्लाह तआ़ला से मआ़फ़ी माँगे तो अल्लाह तआ़ला उसे मआ़फ़ कर देता है।

शैतान और उसके वसवसे दुर करने की दुआ

1. शैतान से अल्लाह की पनाह माँगना। (अबूदाऊद, सूरः मुमिनून आयत 98-99)

2. अज़ान। (बुख़ारी, मुस्लिम)

3. सुन्नत से साबित दुआएं और क़ुरआन करीम की तिलावत।

रुसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान है कि तुम अपने घरों को कबरस्तान न बनाओ शैतान उस घर से भाग जाता है जिस में सूरः बक़रः पढ़ी जाए। (मुस्लिम)

इसी तरह जो चीज़ें शैतान को दूर कर देती हैं उन में सुबह शाम की दुआएं, घर में दाख़िल होने और घर से बाहर जाने की दुआएं, मस्जिद में दाख़िल होने और हैं जो शरीअत से साबित हैं। जैसे सोते वक़्त आयतुल् कुर्सी सूरः बक़रः की आख़िरी दो आयतें। और जो कोई सौ बार यह दुआ पढ़ता है। वह पूरा दिन शैतान से महफ़ूज़ रहता है।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व-लहुल्-हम्दु व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर०
(मुस्लिम)

अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत है और उसी के लिए है हर तअ़रीफ और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है।

इसी तरह अज़ान भी शैतान को दूर करती है।

ना पसन्दीद : वाक़िअ : या बेबसी की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला के यहाँ ताक़तवर मोमिन, कमज़ोर मोमिन से बहतर और ज़्यादा प्यारा है। जब कि दोनों में अच्छाई मौजूद है। जो चीज़ें तुम्हें फ़ाएदा पहुँचा सकती है उन्हें पाने की कोशिश करो और अल्लाह

तआ़ला से मदद् माँगो, बेबस हो कर न बैठो। अगर तुम्हें कोई नुक़्सान पहुँच जाए तो यह न कहो अगर मैं इस तरह कर लेता तो अच्छा होता। बल्कि कहो

قَدَّرَ اللهُ وَمَا شَآءَ فَعَلَ

कद्द-रल्लाहु व मा शा-अ फ़अल०

अल्लाह ने मुक़द्दर किया, और उस ने जो चाहा किया।

क्यों कि अगर का शब्द शैतान को दख़ल देने का मौक़ा देता है। (मुस्लिम)

नौ मौलूद (नव जन्मी) की मुबारकबाद और उस का जवाब

بَارَكَ اللهُ لَكَ فِي الْمَوْهُوْبِ لَكَ وَشَكَرْتَ الْوَاهِبَ وَبَلَغَ اَشُدَّهٗ وَرُزِقْتَ بِرَّهٗ

बा-र-कल्लाहु ल-क फ़िलमौहूबि ल-क व शकर्-तल्वाहि-ब व ब-ल-ग़ अशुद्-दहू व रुज़िक़्-त बिर्रहू०

अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिए इस बच्चे में बरकत दे जो दिया गया है, और तुम देने वाले का शुक्र अदा करते रहो और (यह बच्चा) अपनी जवानी की ताकतों को पहुँचे और तुम्हें इस का अच्छा बरताव नसीब हो।

दूसरा इस के जवाब में कहे।

بَارَكَ اللهُ لَكَ وَ بَارَكَ عَلَيْكَ وَ جَزَاكَ اللهُ خَيْرًا وَّ رَزَقَكَ اللهُ مِثْلَهُ وَاَجْزَلَ ثَوَابَكَ

बा-र-कल्लाहु ल-क व बार-क अ़लै-क व जज़ाकल्लाहु ख़ैरंव्- व र-ज़-क़कल्लाहु मिस्- लहू व अज्-ज़-ल सवाबक० (नु-ववी की अल्-अज़्कार)

अल्लाह तआ़ला तुम्हें बरकत दे और तुम पर बरकत करे, तुम्हें अच्छा बदला दे और तुम्हें इस जैसा दे, और तुम्हें बहुत ज़्यादा सवाब दे।

बच्चों को अल्लाह की हिफ़ाज़त में देने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ हसन और हुसैन رضی اللہ عنہما को इन अलफ़ाज़ के साथ अल्लाह की हिफ़ाज़त में देते।

أُعِيذُكُمَا بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّآمَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّ هَآمَّةٍ وَّ مِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَّآمَّةٍ

अुअीज़ुकुमा बिकलिमातिल्लाहित्-ताम्मति मिन् कुल्लि शैतानिंव्-व हाम्मतिंव्-व मिन् कुल्लि अैनिल्-लाम्मह०
(बुख़ारी)

मैं तुम दोनों को अल्लाह तआला के पूरे कलिमात की हिफ़ाज़त में देता हूँ, हर शैतान और ज़हरीले जानवर से और हर तरह की बुरी नज़र से।

बीमार पुर्सी के वक़्त मरीज़ के लिए दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी बीमार की बीमार पुर्सी के लिए जाते तो फ़रमाते

لَا بَأْسَ طَهُوْرٌ إِنْ شَآءَ اللهُ

ला बअ्-स तहूरुन् इन्-शाअल्लाह० (बुख़ारी)

कोई हर्ज नहीं अल्लाह ने चाहा तो यह बीमारी पाक करने वाली है।

أَسْأَلُ اللهَ الْعَظِيْمَ، رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ أَنْ يَّشْفِيَكَ

अस्अलुल्लाहल्-अज़ी-म रब्बल्-अर्शिल्-अज़ीमि अंय्यशफ़िय-क० (सहीह तिर्मिज़ी, अबूदाऊद)

मैं बड़ी अ़ज़्मत वाले अल्लाह से जो अ़र्शे अ़ज़ीम का रब है, दुआ करता हूँ कि वह तुझे शिफ़ा दे दे।

कोई मुसलमान ऐसे मरीज़ की बीमार पुर्सी करे जिस की मौत का वक़्त न आ पहुँचा हो और 7 बार यह दुआ पढ़े तो अल्लाह के हुक्म से उसे शिफ़ा मिल जाती है।

बीमार पुर्सी की फ़ज़ीलत

आप ﷺ ने फ़रमाया जब कोई आदमी अपने मुस्लिम भाई की बीमार पुर्सी के लिए जाता है तो वह बैठने तक जन्नत के मेवों में चलता है, जब वह बैठता है तो रहमत उसे ढाँप लेती है। अगर सुबह का वक़्त हो तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते

उस के लिए दुआ करते रहते हैं और अगर शाम का वक़्त हो तो सुबह तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उस के लिए दुआ करते रहते हैं। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजह)

ज़िन्दगी से ना उम्मीद मरीज़ की दुआ

أَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ وَأَلْحِقْنِيْ بِالرَّفِيْقِ الْأَعْلٰى

अल्लाहुम्-मग़्फ़िर्ली वरहम्नी व अल्हिक़्नी बिर्रफ़ीक़िल्-अअ़्ला० (बुख़ारी, मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! मुझे मआफ़ कर, मुझ पर रहम कर और मुझे रफ़ीक़े अअ़ला (सब से बड़े साथी) के साथ मिला दे।

❁ नबी करीम ﷺ वफ़ात के वक़्त अपने हाथों को पानी में डाल कर अपने मुबारक चेहरे पर फेरने लगे और यह दुआ पढ़ने लगे।

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ، إِنَّ لِلْمَوْتِ لَسَكَرَاتٍ

ला इला-ह इल्लल्लाहु इन्-न लिल्मौति स-करात० (बुख़ारी फ़त्ह के साथ)

अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं यक़ीनन् मौत की बहुत सी सख़्तियाँ है।

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ، لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहुअक्बरु ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू ला इला-ह इल्लल्लाहु लहुल-मुल्कु व लहुल-हम्दु ला इला-ह इल्लल्लाहु वला हौ-ल वला क़ुव्-व-त इल्ला बिल्लाह० (तिर्मिज़ी, इब्नि माजह)

अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं और अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, वह अकेला है अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, उसी की ही बादशाहत है, उसी के लिए

ही है हर तअ़रीफ़ अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं और अल्लाह की तौफ़ीक़ के बिना गुनाह से बचने की हिम्मत है न नेकी करने की ताक़त।

मौत से क़रीब इन्सान को तल्क़ीन

जिस का आख़री कलाम لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ ला इला-ह इल्लल्लाहु० हो वह जन्नत में जाएगा। (अबूदाऊद)

मुसीबत में घिरे इन्सान की दुआ

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ اَللّٰهُمَّ أْجُرْنِي فِي مُصِيبَتِي وَاخْلُفْ لِي خَيْرًا مِّنْهَا

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, अल्लाहुम्मअ जुर्नी फ़ी मुसीबती वख़्लुफ़् ली ख़ैरम्मिन्हा० (मुस्लिम)

यक़ीनन् हम अल्लाह ही की मिल्कियत हैं और हमें उसी की तरफ़ वापस जाना है, ऐ अल्लाह! मुझे मेरे सदमे पर अज्र दे और मुझे इस का अच्छा बदला दे।

मय्यत की आँखें बन्द करते वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِفُلَانٍ وَّارْفَعْ دَرَجَتَهٗ فِي الْمَهْدِيِّيْنَ، وَاخْلُفْهٗ فِيْ عَقِبِهٖ فِي الْغَابِرِيْنَ، وَاغْفِرْ لَنَا وَلَهٗ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ، وَافْسَحْ لَهٗ فِيْ قَبْرِهٖ وَنَوِّرْ لَهٗ فِيْهِ

अल्लाहुम्-मग़्फ़िर् लिफ़ुलानिंव्-वर्फ़अ् द-र-ज-तहू फ़िल्-महदिय्यी-न वख़्लुफ़्हू फ़ी अक़्बिहि फ़िल्-ग़ाबिरी-न वग़्फ़िरलना व लहूया रब्बल्-आलमी-न वफ़्सह् लहू फ़ी क़बरिही व नव्विर लहू फ़ीहि० (मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! फ़लाँ (नाम ले) को मआफ़ कर दे और उस का दर्जा और रुतबा हिदायत पाए हुए लोगों में उँचा कर दे और उस के बाद, उस के पीछे रह जाने वालों में जानशीन बना, और ऐ रब्बुल आलमीन हमें और उसे मआफ़ कर दे और उस के लिए उस की क़ब्र को फैला दे और क़ब्र में उस के लिए रौशनी कर दे।

नमाज़े जनाज़ : की दुआऐं

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهٗ وَارْحَمْهُ، وَعَافِهٖ وَاعْفُ عَنْهُ، وَأَكْرِمْ نُزُلَهٗ،

وَوَسِّعْ مُدْخَلَهُ، وَاغْسِلْهُ بِالْمَآءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ، وَنَقِّهِ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الْأَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ، وَأَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِّنْ دَارِهِ، وَأَهْلًا خَيْرًا مِّنْ أَهْلِهِ، وَزَوْجًا خَيْرًا مِّنْ زَوْجِهِ، وَأَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ، وَأَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ

अल्लाहुम्- मग़्फ़िर्-लहू वरहम्हु व आफ़िही वअ़्फ़ु अ़न्हु व अक्रिम् नुज़ु-लहू व वस्सिअ़् मुद्-ख़-लहू वग़्सिल्हु बिल्माअि वस्सल्जि वल्-ब-रदि व नक़्क़िही मिनलख़ताया कमा नक़्क़ै-तस्सौबल्-अब य-ज़ मिनद्द-नसि व अब्दिलहु दारन् ख़ैरम्मिन् दारिही व अहलन् ख़ैरम्मिन् अहलिही व ज़ौजन् ख़ैरम्मिन् ज़ौजिही व अदख़िल्हुल्-जन्न-त व अअ़िज़्हु मिन् अ़ज़ाबिल्-क़बरि व अ़ज़ाबिन्नार० (मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! उसे मआ़फ़ कर दे, उस पर रहम कर, उसे आ़फ़ियत (सुकून) दे, उसे मआ़फ़ कर दे, उस की इज़्ज़त के

साथ महमानी कर, उस की क़ब्र में फैलाव कर दे और उसे (उस के गुनाहों को) पानी, बर्फ़ और ओलों के साथ धो दे और उसे गुनाहों से इस तरह साफ़ कर दे जैसे तू ने सफ़ेद कपड़े को मैल से साफ़ कर दिया, और उसे उस के घर के बदले में अच्छा घर, घर वालों के बदले अच्छे घर वाले, उस के जोड़े से अच्छा जोड़ा दे और उसे जन्नत में दाख़िल कर और उसे क़ब्र के अ़ज़ाब से और आग के अ़ज़ाब से बचाले।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا ، وَغَائِبِنَا ، وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا ، وَذَكَرِنَا وَأُنْثَانَا ، اَللّٰهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَأَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ ، وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْإِيْمَانِ ، اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا أَجْرَهُ ، وَلَا تُضِلَّنَا بَعْدَهُ

अल्लाहुम्-मग़्फ़िर् लिहय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़-करिना व उन्साना, अल्लाहुम्-म मन् अहयय्-तहू मिन्ना फ़अहयिही अलल्- इस्लामि व मन् तवफ़्फ़ै-तहू मिन्ना फ़-त-वफ़्फ़हू

अलल् ईमानि, अल्लाहुम्-म ला तहरिम्ना अज्-रहू व ला तुज़िल्लना बअ्-दहू० (इब्ने माजह, अहमद)

ऐ अल्लाह! मआफ़ कर दे हमारे ज़िन्दों और मुर्दों को हमारे हाज़िर और ग़ायब को, हमारे छोटों और बड़ों को, हमारे मर्दों और औरतों को या इलाही! हम में से जिस को तू ज़िन्दा रखे उसे इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हम में से जिसे तू मौत दे उसे ईमान पर मौत देना, ऐ अल्लाह! हमें इस (मय्यत) के बदले से महरूम न कर और इस के बाद हमें न भटका।

اَللّٰهُمَّ إِنَّ فُلَانَ بْنَ فُلَانٍ فِيْ ذِمَّتِكَ، وَحَبْلِ جِوَارِكَ، فَقِهِ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ ، وَأَنْتَ أَهْلُ الْوَفَآءِ وَالْحَقِّ ، فَاغْفِرْ لَهٗ وَارْحَمْهُ، إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

अल्लाहुम्-म इन्-न फ़ुला-नब्-न फ़ुलानिन् फ़ी ज़िम्मति-क व हब्लि जवारि-क फ़क़िहि मिन् फ़ित्-नतिल्-क़बरि व अज़ाबिन्नारि व अन्-त अहलुल्-वफ़ाइ वल्-हक़्क़, फ़ग़्फ़िर्-लहू वरहम्हू, इन्न-क अन्-तल्-ग़फ़ूरुर्रहीम० (इब्ने माजह, अबूदाऊद)

ऐ अल्लाह! बेशक फ़लाँ बिन फ़लाँ (मय्यत का नाम ले)तेरे ज़िम्मे और तेरी हिफ़ाज़त में है, इसलिए इसे बचा ले क़ब्र के इमतहान से और आग के अ़ज़ाब से और तू वफ़ा और हक़ वाला है, इसलिए तू उसे मआ़फ़ कर दे और उस पर रहम कर, यक़ीनन् तू ही बहुत ज़्यादा मआ़फ़ करने वाला बहुत ज़्यादा रहम करने वाला है।

اَللّٰهُمَّ عَبْدُكَ وَابْنُ أَمَتِكَ، اِحْتَاجَ إِلٰى رَحْمَتِكَ، وَأَنْتَ غَنِيٌّ عَنْ عَذَابِهٖ، إِنْ كَانَ مُحْسِنًا فَزِدْ فِيْ حَسَنَاتِهٖ، وَإِنْ كَانَ مُسِيْئًا فَتَجَاوَزْ عَنْهُ

अल्लाहुम्-म अ़ब्दु-क वब्नु अ-मति-क इहता-ज इला रह-मति-क व अन्-त ग़निय्युन् अ़न् अ़ज़ाबिही, इन् का-न मुहसिनन् फ़ज़िद फ़ी ह-सनातिही व इन् का-न मुसीअन् फ़-तजावज़ अ़न्हु० (हाकिम)

इलाही तेरा (यह) बन्दा और तेरी कनीज़ का बेटा, मुहताज है तेरी रहमत का और तू उसे अ़ज़ाब देने से बेनियाज़ है, अगर

यह नेक था तो इस की नेकियों को ज़्यादा कर और अगर यह गुनहगार था तो इस को मआफ़ कर दे।

बच्चे की नमाज़े जनाज़ : की दुआऐं

اَللّٰهُمَّ اَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

अल्लाहुम-म अइज़्हु मिन अज़ाबिल क़ब्रि० (मुअत्ता इमाम मालिक 1/288, मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा 3/217)

ऐ अल्लाह! इसे अज़ाबे क़ब्र से बचा ।

नीचे दी हुई दुआ पढ़ना भी मुस्तहब है:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ فَرَطًا وَّذُخْرًا لِّوَالِدَيْهِ، وَشَفِيْعًا وَّ مُجَابًا، اَللّٰهُمَّ ثَقِّلْ بِهٖ مَوَازِيْنَهُمَا، وَأَعْظِمْ بِهٖ أُجُوْرَهُمَا، وَأَلْحِقْهُ بِصَالِحِ الْمُؤْمِنِيْنَ، وَاجْعَلْهُ فِي كَفَالَةِ إِبْرَاهِيْمَ، وَقِهِ بِرَحْمَتِكَ عَذَابَ الْجَحِيْمِ

وَ اَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِّنْ دَارِهٖ وَاَهْلًا خَيْرًا مِّنْ اَهْلِهٖ، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاَسْلَافِنَا وَاَفْرَاطِنَا وَمَنْ سَبَقَنَا بِالْاِيْمَانِ

अल्लाहुम्-मज्अल्हु फ़-रतंव्-व ज़ुख़्रल लिवालिदैहि व शफ़ीअम्-मुजाबन् अल्लाहुम्-म स़क्क़िल बिही मवाज़ीनहुमा व अअ्ज़िम् बिही उजूरहुमा व अल्हिक़्हु बिस़ालिहिल् मुअ-मिनी-न वज्अल्हु फ़ी कफ़ालति इब्राही-म व क़िहि बिरह्-मति-क अज़ाबल्-जहीमि व अब्दिल्हु दारन् खैरम्-मिन्दारिही व अह्लन खैरम-मिनअह्लिही अल्लाहुम् - मग़्फ़रलि अस्लाफ़िना व अफ़रातिना व मन् स-ब-क़ना बिलईमान० (इब्ने कुदामह की अल मुग़नी)

इलाही! उसे अपने माँ बाप के लिए मीर मन्ज़िल (आगे जाने वाला) और ज़ख़ीरा बना दे और (उन के लिए) ऐसा सिफ़ारशी बना दे जिस की सिफ़ारिश कुबूल हो, इलाही! उस के ज़रीए इन दोनों के तराज़ू भारी कर दे और उस के ज़रीए इन के अज्र बढ़ा। और उसे मिला दे नेक मोमिनों के साथ और उसे इब्राहीम عليه السلام की परवरिश में कर दे। और उसे अपनी रहमत से दोज़ख़ के अज़ाब से बचा। और उस के घर से अच्छा घर और घर वालों से अच्छे घर वाले दे। ऐ अल्लाह

हमारे आगे चलने वाले और हमारे आगे जाने वाले को मआफ़ कर दे और जो हम से पहले ईमान के साथ गए (उन्हें भी मआफ़ कर दे)।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا، وَّسَلَفًا وَّأَجْرًا

अल्लाहुम्-मजअलहु लना फ़-रतंव्-व स-लफ़ंव्-व अज्रा० (बुख़ारी, बग़वी की शर्हुस्सुन्नह)

ऐ अल्लाह! इसे हमारे लिए मीर मन्ज़िल (आगे जाने वाला) और पेशरव और सवाब का ज़रीआ बना दे।

ताज़ियत की दुआ

إِنَّ لِلّٰهِ مَا أَخَذَ، وَلَهُ مَا أَعْطٰى، وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِأَجَلٍ مُّسَمًّى

इन्ना लिल्लाहि मा अ-ख़-ज़ व लहू मा अअ्ता व कुल्लु शैइन् इन्-दहू बि-अ-जलिम्-मुसम्मन् फ़ल्-तस्बिर वल्तह्-तसिब्० (बुख़ारी, मुस्लिम)

यक़ीनन् अल्लाह ही का है जो उस ने लिया और उसी का है जो उस ने दिया। और उस के पास हर चीज़ तय किये हुए वक़्त

के साथ है। तुम्हें सब्र करना और सवाब की उम्मीद रखना चाहिए।

यह दुआ भी अच्छी है।

أَعْظَمَ اللهُ أَجْرَكَ، وَأَحْسَنَ عَزَآءَكَ، وَغَفَرَ لِمَيِّتِكَ

अअ्ज़-मल्लाहु अज र-क व अह्-स-न अ़ज़ाअ-क व ग़-फ़्-र लिमय्यिति-क० (नुववी की अल अज़्कार)

अल्लाह तआ़ला तुम्हारे अज्र को बढ़ाए और तुम्हें अच्छी तसल्ली दे और तुम्हारे मरने वाले को मआ़फ़ करे।

मय्यत को क़ब्र में उतारते वक़्त की दुआ

بِسْمِ اللهِ وَعَلَى سُنَّةِ رَسُوْلِ اللهِ

बिस्मिल्लाहि व अ़ला सुन्नति रसूलिल्लाह० (अबूदाऊद)

अल्लाह के नाम के साथ और रसूल ﷺ की सुन्नत के मुताबिक़ (तुम्हें दफ़्न करते हैं)।

मय्यत को दफ़्न करने के बाद की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब मय्यत को दफ़न कर लेते तो उस की क़ब्र के पास खड़े होते और फ़रमाते अपने भाई के लिए अल्लाह से बख़शिश माँगो और इस के लिए साबित कदम (जमे) रहने की दुआ करो क्यों कि अब इस से सवाल किया जाएगा।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَهٗ اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْهُ

अल्लाहुम्-मग़्फ़िर्- लहू अल्लाहुम्-म सब्बित्हु० (अबूदाऊद)

ऐ अल्लाह! उसे मआफ़ कर ऐ अल्लाह! उसे जमा दे।

क़ब्रस्तान को देखने की दुआ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ، وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ، (وَيَرْحَمُ اللهُ الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنَّا وَالْمُسْتَأْخِرِيْنَ) أَسْأَلُ اللهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ

अस्सलामु अलैकुम अहलद्दियारि मिनल्-मुअमिनी-न वलमुस्लिमी-न व इन्ना इन्-शाअल्लाहु बिकुम् ललाहिक़ू-न व यरहमुल्लाहुल्-मुस्तक़्दिमी-न मिन्ना वल्-

मुस्तअख़िरी-न अस्अलुल्ला-ह लना व लकुमुलआफ़ियह० (मुस्लिम)

सलाम हो तुम पर इन घरों (क़ब्रों) के रहने वाले मोमिन और मुसलमानों! और बेशक हम भी इन् शाअल्लाह तुम से मिलने वाले हैं। और अल्लाह तआला हम में से पहले जाने वालों और बाद में जाने वालों पर रहम करे मैं अल्लाह तआला से अपने और तुम्हारे लिए आफ़ियत माँगता हूँ।

आँधी की दुआ

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ خَيْرَهَا، وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क ख़ै-रहा व अऊज़ुबि-क मिन् शर्रिहा० (अबूदाऊद, इब्ने माजह)

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से इस की अच्छाई का सवाल करता हूँ और इस की बुराई से तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ خَيْرَهَا، وَخَيْرَ مَا فِيْهَا، وَخَيْرَ مَا أُرْسِلَتْ بِهٖ، وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا، وَشَرِّ مَا فِيْهَا، وَشَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهٖ

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क ख़ै-रहा व ख़ै-र मा फ़ीहा व ख़ै-र मा उरसिलत बिही व अऊज़ुबि-क मिन् शर्रिहा व शर्रि मा फ़ीहा व शर्रि मा उरसिलत बिही० (बुख़ारी, मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से इस की अच्छाई और इस में मौजूद चीज़ की अच्छाई का सवाल करता हूँ और उस चीज़ की अच्छाई का जिस के साथ यह भेजी गई है और मैं तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ इस की बुराई से और उस चीज़ की बुराई से जो इस में है और उस चीज़ की बुराई से जिस के साथ यह भेजी गई है।

बादल गरजने की दुआ

سُبْحَانَ الَّذِیْ یُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِہٖ وَالْمَلَآئِکَۃُ مِنْ خِیْفَتِہٖ

सुब्हानल्लज़ी युसब्बिहुर्रअ्दु बिहम्दिही वल मलाइ-कतु मिन् ख़ी-फ़तिही० (मुअत्ता इमाम मालिक)

पाक है वह ज़ात कि गरज उस की तअ़रीफ़ के साथ तस्बीह पढ़ती है, और फ़रिश्ते उस के डर से उस की तस्बीह पढ़ते हैं।

बारिश माँगने की दुआएं

اَللّٰهُمَّ اسْقِنَا غَيْثًا مُّغِيْثًا مَّرِيْئًا مَّرِيْعًا نَّافِعًا غَيْرَ ضَآرٍّ عَاجِلًا غَيْرَ اٰجِلٍ

अल्लाहुम्-मस्क़िना ग़ैसम्मुग़ीसम्-मरीअम्-मरीअन्-नाफ़िअन्-ग़ै-र ज़ार्रिन् आजिलन् ग़ै-र आजिलिन्० (अबूदाऊद)

ऐ अल्लाह! तू हमें ऐसी बारिश से सैराब कर जो मदद्गार, मन पसंद, हरा भरा करने वाली, फ़ाएदे वाली हो, नुक़्सान देने वाली न हो, जल्द हो, देर से न हो।

اَللّٰهُمَّ اَغِثْنَا، اَللّٰهُمَّ اَغِثْنَا، اَللّٰهُمَّ اَغِثْنَا

अल्लाहुम्-म अग़िस्ना अल्लाहुम्-म अग़िस्ना अल्लाहुम्-म अग़िस्ना० (बुख़ारी, मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! हमें बारिश दे। ऐ अल्लाह! हमें बारिश दे। ऐ अल्लाह! हमें बारिश दे।

اَللّٰهُمَّ اسْقِ عِبَادَكَ وَ بَهَآئِمَكَ وَ انْشُرْ رَحْمَتَكَ وَ اَحْيِ بَلَدَكَ الْمَيِّتَ

अल्लाहुम्-मस्क़ि इबा-द-क व बहाइ-म-क वन्शुर रह्-म-त-क व अहयि ब-ल-द-कल्-मय्यि-त० (अबूदाऊद)

ऐ अल्लाह! अपने बन्दों और जानवरों को पानी पिला, और अपनी रहमत फैला दे और अपने वीरान शहर को आबाद कर दे।

बारिश उतरते वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ صَيِّبًا نَّافِعًا

अल्लाहुम्-म सय्यिबन्-नाफ़िआ० (बुख़ारी फ़त्ह के साथ)

ऐ अल्लाह! इसे फ़ाएदे वाली बारिश बना दे।

बारिश उतरने के बाद की दुआ

مُطِرْنَا بِفَضْلِ اللهِ وَرَحْمَتِهٖ

मुतिरना बिफ़ज़्लिल्लाहि व रह्मतिही० (बुख़ारी, मुस्लिम)

हमें अल्लाह के फ़ज़्ल और उस की रहमत से बारिश मिली।

आसमान साफ़ होजाने के लिए दुआ

اَللّٰهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا، اَللّٰهُمَّ عَلَى الْاٰكَامِ وَالظِّرَابِ، وَبُطُوْنِ الْأَوْدِيَةِ، وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ

अल्लाहुम्-म हवालैना व ला अलैना अल्लाहुम्-म अललआकामि वज़्ज़राबि व बुतूनिल्-अव्दि-यति व मनाबितिश्-श-जरि० (बुख़ारी, मुस्लिम)

इलाही! हमारे आस पास बारिश बरसा, हमारे ऊपर न बरसा, ऐ अल्लाह! टीलों और पहाड़ियों पर, वादियों के अन्दर और पेड़ों के उगने की जगहों पर (बारिश बरसा)।

नया चाँद देखने की दुआ

اَللّٰهُ أَكْبَرُ، اَللّٰهُمَّ أَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْأَمْنِ، وَالْإِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْإِسْلَامِ، وَالتَّوْفِيْقِ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى رَبُّنَا وَرَبُّكَ اللّٰهُ

अल्लाहुअक्बरु अल्लाहुम्-म अहिल्लहू अलैना बिल्-अम्नि वल्-ईमानि वस्सलामति वल्-इस्लामि वत्तौफ़ीक़ि लिमा तुहिब्बु रब्बना व तरज़ा रब्बुना व रब्बु-कल्लाहु० (तिर्मिज़ी)

अल्लाह सब से बड़ा है, ऐ अल्लाह! तू इसे हम पर निकाल अमन, ईमान और सलामती वाला, इस्लाम और उस चीज़ की तौफ़ीक़ के साथ जो ऐ हमारे रब तेरे यहाँ महबूब और पसन्दीदा है। (ऐ चाँद!) हमारा और तुम्हारा रब अल्लाह है।

रोज़ा इफ़्तार करते वक़्त की दुआएं

ذَهَبَ الظَّمَأُ، وَابْتَلَّتِ الْعُرُوْقُ، وَثَبَتَ الْأَجْرُ إِنْ شَآءَ اللهُ

ज़-हबज़ ज़-म-अु वब्-तल्लतिल्-अुरूक़ु व-स-बतलअज्रु इन् शाअल्लाह० (अबूदाऊद)

प्यास बुझ गई रगें तर (गीली) हो गईं और इन शाअल्लाह सवाब पक्का हो गया।

❁ अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया रोज़ादार के लिए रोज़ा खोलते वक़्त एक दुआ है जो रद्द नहीं की जाती। अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ रोज़ा खोलते वक़्त यह दुआ पढ़ते थे।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ بِرَحْمَتِكَ الَّتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ، أَنْ تَغْفِرَ لِيْ

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क बिरह्-मति-कल्लती वसिअत कुल्-ल शैइन् अन् तग़्फ़िर्-रली० (इब्ने माजह)

इलाही! मैं तुझ से तेरी उस रहमत के साथ सवाल करता हूँ जो हर चीज़ को घेरे हुए है, कि तू मुझे मआ़फ़ कर दे।

खाना खाने से पहले की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान है कि जब तुम में से कोई शख़्स खाना खाने लगे तो उसे بِسْمِ اللّٰهِ **बिस्मिल्लाह०** अल्लाह के नाम के साथ (खाना) शुरू करता हूँ। कहना चाहिए और अगर शुरू में भूल जाए तो उसे بِسْمِ اللّٰهِ فِيْ أَوَّلِهٖ وَاٰخِرِهٖ **बिस्मिल्लाहि फ़ी अव्वलिही व अख़िरिही०**

(अल्लाह के नाम के साथ (खाना) शुरू करता हूँ, उस के शुरू और उस के आख़िर में) कहना चाहिए। (अबूदाऊद)

❁ रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान है कि जिसे अल्लाह तआ़ला खाना खिलाए उसे कहना चाहिए,

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَأَطْعِمْنَا خَيْرًا مِّنْهُ

अल्लाहुम्-म बारिक लना फ़ीहि व अत्इम्ना ख़ैरम्मिन्हू०

इलाही! हमारे लिए इस (खाने) में बरकत दे और हमें इस से बहतर खाना खिला।

और जिसे अल्लाह तआ़ला दूध पिलाए, उसे कहना चाहिए।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ

अल्लाहुम्-म बारिक लना फ़ीहि व ज़िद्ना मिन्हु०

इलाही! इस में हमारे लिए बरकत दे और हमें इस से ज़्यादा दे।

खाना खाने के बाद की दुआएं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ أَطْعَمَنِيْ هٰذَا وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِّنِّيْ وَلَا قُوَّةٍ

अल-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ी अत अ़-मनी हाज़ा व र-ज़-क़नीहि मिन् ग़ैरि हौलिम्मिन्नी व ला क़ुव्वतिन्० (अबूदाऊद, इब्ने माजह, तिर्मिज़ी)

हर तरह की तअ़रीफ अल्लाह ही के लिए है जिस ने मुझे यह (खाना) खिलाया और मुझे यह (खाना) बिना मेरी किसी कोशिश और बिना मेरी किसी ताक़त के दिया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ، غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَّلَا مُوَدَّعٍ وَّلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا

अल्हम्दु लिल्लाहि हम्दन् कसीरन् तय्यिबम्-मुबारकन् फ़ीहि ग़ै-र मक्फिय्यिंव्-व ला मुवद्-दअ़िंव्-व ला मुस्तग़नन् अ़न्हु रब्बना० (बुख़ारी, तिर्मिज़ी)

हर तरह की तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए है बहुत ज़्यादा,पाक और बरकत वाली तअ़रीफ़ जो न काफ़ी समझी गई है (कि ज़्यादा की ज़रूरत न रहे) न छोड़ी जा सकती है और न उस से बेपरवाही की गई है ऐ हमारे रब।

महमान की मेज़बान के लिए दुआ

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيْمَا رَزَقْتَهُمْ، وَاغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ

अल्लाहुम्- म बारिक लहुम् फ़ीमा र-ज़क़्तहुम् वग़्फ़िर् लहुम् वरहम्हुम्० (मुस्लिम)

इलाही! तू ने जो कुछ इन्हें दिया है उस में इन के लिए बरकत दे और इन्हें मआफ़ कर और इन पर रहम कर।

पिलाने वाले के लिए दुआ

اَللّٰهُمَّ أَطْعِمْ مَنْ أَطْعَمَنِيْ، وَاسْقِ مَنْ سَقَانِيْ

अल्लाहुम्-म अत्इम्-मन् अत्-अ-मनी वस्क़ि मन् सक़ानी० (मुस्लिम)

इलाही! जिस ने मुझे खिलाया, तू उसे खिला और तू उसे पिला जिस ने मुझे पिलाया।

किसी के यहाँ इफ़्तारी की दुआ

أَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّآئِمُوْنَ وَأَكَلَ طَعَامَكُمُ الْأَبْرَارُ، وَصَلَّتْ عَلَيْكُمُ الْمَلَآئِكَةُ

अफ़्त-र इन्दकुमुस्- साइमू-न व अ-क-ल तआ-मकुमुल्-अबरारु व सल्लत अलैकुमुल्- मलाइ-कतु०

(अबूदाऊद, इब्ने माजह)

इफ़्तार करते रहें तुम्हारे यहाँ रोज़ा दार और खाते रहें तुम्हारा खाना नेक लोग और दुआएं करते रहें तुम्हारे लिए अल्लाह के फ़रिश्ते।

दावत के वक़्त रोज़ा इफ़्तार न करने वाले की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान है कि जब तुम में से किसी को (खाने की) दावत दी जाए तो उसे क़ुबूल करना चाहिए। अगर वह रोज़े से हो तो उसे दुआ करनी चाहिए और अगर वह रोज़े से न हो तो उसे खाना चाहिए। (मुस्लिम)

रोज़ेदार को कोई गाली दे तो क्या कहे?

اِنِّیْ صَآئِمٌ، اِنِّیْ صَآئِمٌ

इन्नी साइमुन्, इन्नी साइमुन्० (बुख़ारी फ़त्ह के साथ, मुस्लिम)

मैं रोज़े से हूँ, मैं रोज़े से हूँ।

पहला फल देखने के वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِیْ ثَمَرِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِیْ مَدِیْنَتِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِیْ صَاعِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِیْ مُدِّنَا

अल्लाहुम्-म बारिक लना फ़ी स-मरिना व बारिक लना फ़ी मदी-नतिना व बारिक लना फ़ी साञ्अिना व बारिक लना फ़ी मुद्दिना० (मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! हमारे लिए हमारे फल में बरकत दे और हमारे लिए हमारे शहर में बरकत दे और हमारे लिए हमारे साअ़ (तौल के पैमाने) में बरकत दे और हमारे लिए हमारे मुद (तौल के पैमाने)में बरकत दे।

छींक की दुआ

❁ रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान है कि जब तुम में से किसी को छींक आए तो वह कहे।

अल-हम्दु लिल्लाह० اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

सब तरह की तअ़रीफ अल्लाह ही के लिए है।

और उस के दोस्त या भाई को कहना चाहिए,

यर्-हमुकल्लाह० يَرْحَمُكَ اللّٰهُ

तुम पर अल्लाह रहम करे।

और जब उस का भाई उसे यह कहे तो पहला यह कहे।

يَهْدِيكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ

यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बा लकुम्० (बुख़ारी)

अल्लाह तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा हाल सही करे।

अगर काफ़िर छींक आने पर **अल्हम्दु लिल्लाह** कहे तो उसे क्या कहा जाए?

يَهْدِيكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ

यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बा लकुम्० (तिर्मिज़ी 5/82, अहमद 4/400, अबूदाऊद 4/308)

अल्लाह तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा हाल सही करे।

शादी करने वाले के लिए दुआ

بَارَكَ اللهُ لَكَ، وَبَارَكَ عَلَيْكَ، وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِي خَيْرٍ

बा-रकल्लाहु ल-क वबा-र-क अलै-क व ज-म-अ बै-नकुमा फ़ी ख़ैर० (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

अल्लाह तआ़ला तेरे लिए बरकत करे और तुझ पर बरकत करे और तुम दोनों को ख़ैर (भलाई) पर जमा करे।

शादी करने और सवारी ख़रीदने वाले के लिए दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि जब तुम में से कोई शख़्स शादी करे या लौन्डी (या सवारी) ख़रीदे तो उसे यह दुआ करनी चाहिए।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا، وَخَيْرَ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا، وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क ख़ै-रहा व ख़ै-र मा ज-बल्-तहा अ़लैहि व अऊ़ज़ुबि-क मिन् शर्रिहा व शर्रि मा जबल्-तहा अ़लैहि०

इलाही! मैं तुझ से इस की अच्छाई और भलाई का सवाल करता हूँ और उस चीज़ की भलाई का भी जिस पर तू ने इसे पैदा किया और तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ इस की बुराई से और उस चीज़ की बुराई से जिस पर तू ने इसे पैदा किया।

और जब ऊँट ख़रीदे तो उस की कोहान की चोटी पकड़ कर यही दुआ पढ़े। (अबूदाऊद, इब्ने माजह)

बीवी के पास आने से पहले की दुआ

بِسْمِ اللهِ اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ، وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا

बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्-म जन्निब नश्-शैता-न व जन्निबिश्-शैता-न मा रज़क़्तना० (बुख़ारी, मुस्लिम)

अल्लाह के नाम के साथ, इलाही! हमें शैतान मर्दूद से बचा और जो (औलाद) तू हमें दे उसे भी शैतान से बचा।

ग़ुस्सा आजाने के वक़्त की दुआ

أَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

अअूज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम० (बुख़ारी, मुस्लिम)

मैं अल्लाह की पनाह में आता हूँ शैतान मर्दूद से।

मुसीबत में घिरे हुऐ को देखने के वक़्त की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ، وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानी मिम्मब्-तला-क बिही व फज़्ज़-लनी अला कसीरिम्-मिम्मन् ख़-ल-क़ तफ़्ज़ीला० (तिर्मिज़ी)

हर तरह की तअरीफ़ उस अल्लाह के लिए जिस ने मुझे उस चीज़ से बचाया जिस में तुझे मुब्तला किया है और उस ने मुझे (अपनी) बहुत सी मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत दी।

मज्लिस के बीच की दुआ

अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ का बयान है कि एक ही मज्लिस में उठने से पहले नबी ﷺ से एक सौ बार (यह कहते हुए) गिन लिया जाता।

رَبِّ اغْفِرْلِیْ وَتُبْ عَلَیَّ، إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الْغَفُوْرُ

रब्बिग़्फ़िर्ली व तुब् अलय्-य इन्न-क अन्-तत्-तव्वाबुल्-ग़फ़ूर० (तिर्मिज़ी, इब्ने माजह)

ऐ मेरे रब! मुझे मआ़फ़ कर और मेरी तौबा क़ुबूल कर, बेशक तू ही बहुत ज़्यादा क़ुबूल करने वाला बहुत ज़्यादा मआ़फ़ करने वाला है।

मज्लिस के गुनाह दूर करने की दुआ

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، أَشْهَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ

सुब्हा-न-कल्लाहुम्-म व बिहम्दि-क अश्हदु अल्ला इला-ह इल्ला अन्-त अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु इलै-क० (तिर्मिज़ी)

ऐ अल्लाह! तू अपनी ख़ूबियों समेत पाक है और मैं यह गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं। मैं तुझ से मआ़फ़ी माँगता हूँ और तेरी तरफ़ पलटता हूँ।

❁ आइशा ﵂ बयान करती हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा मैं आप को देखती हूँ कि आप जब किसी मज्लिस में बैठते हैं और कुरआन से कुछ पढ़ते हैं या कोई नमाज़ पढ़ते है तो इस दुआ के साथ ख़त्म करते हैं तो आप ने फ़रमाया जो

कोई भलाई की बात कहेगा यह दुआ उस भलाई वाली बात पर मोहर बना कर लगा दी जाएगी और अगर ज़ुबान से बुरी बात निकल गई तो उस के लिए यह दुआ कफ़्फ़ार: बन जाती है। (नसाई, अहमद)

अल्लाह तुझे मआफ़ करे कहने वाले के लिए दुआ

व ल-क० (नसाई) وَلَكَ

और तुझे भी (अल्लाह मआफ़ करे)।

भलाई करने वाले के लिए दुआ

जज़ाकल्लाहु ख़ैरा० (तिर्मिज़ी) جَزَاكَ اللهُ خَيْرًا

अल्लाह तआला तुम्हें अच्छा बदला दे।

दज्जाल से महफ़ूज़ रहने के वज़ाइफ़

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया जो शख़्स सूर: कहफ़ के शुरू की दस आयतें याद करेगा वह दज्जाल से महफ़ूज़ हो जाएगा। एक दूसरी रिवायत में है कि सूर: कहफ़ की आख़री दस आयतें।

इसी तरह हर नमाज़ के आख़री तशह्हुद में दज्जाल के फ़ित्ने से पनाह माँगना भी उस से हिफ़ाज़त का ज़रीया है। (मुस्लिम)

मुझे तुम से अल्लाह के लिए मुहब्बत है कहने वाले के लिए दुआ

اَحَبَّكَ الَّذِیْ اَحْبَبْتَنِیْ لَهٗ

अहब्ब-कल्लज़ी अह्-बब्तनी लहू० (अबूदाऊद)

वह हस्ती (अल्लाह तआला) तुम से मुहब्बत करे जिस के लिए तुम ने मुझ से मुहब्बत की।

माल और दौलत पेश करने वाले के लिए दुआ

بَارَكَ اللّٰهُ لَكَ فِیْ اَهْلِكَ وَمَالِكَ

बार-कल्लाहु ल-क फ़ी अहलि-क व मालि-क० (बुख़ारी फ़त्ह के साथ)

अल्लाह तआला तुम्हारे लिए तुम्हारे घर वालों और माल और दौलत में बरकत दे।

क़र्ज़ लौटाते वक़्त क़र्ज़ देने वाले के लिए दुआ

بَارَكَ اللّٰهُ لَكَ فِيْ اَهْلِكَ وَمَالِكَ اِنَّمَا جَزَآءُ السَّلَفِ الْحَمْدُ وَالْاَدَآءُ

बार-कल्लाहु ल-क फ़ी अहलि-क व मालि-क इन्नमा जज़ाउस्-स-लफ़िल-हम्दु वल्-अदाअु० (नसाई, इब्ने माजह)

अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिए तुम्हारे घर वालों और माल और दौलत में बरकत दे। क़र्ज़ का बदला तो सिर्फ़ और सिर्फ़ शुक्रिया और क़र्ज़ को अदा करना ही है।

शिर्क से इरने की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ وَاَنَا اَعْلَمُ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَآ اَعْلَمُ

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊ़ज़ुबि-क अन् उशिर-क बि-क व अना अअ्-लमु व अस्तग़िफ़रु-क लिमा ला अअ्-लमु०
(अहमद)

इलाही! मैं इस बात से तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ कि मैं जानते हुए किसी को तेरा शरीक (साझीदार) ठहराऊँ और मैं तुझ से उस (शिर्क) की मआ़फ़ी चाहता हूँ जो मैं नहीं जानता।

बरकत की दुआ देने वाले के लिए दुआ

व फ़ी-क बा-रकल्लाहु० (इब्नुस्सुनी) وَفِيْكَ بَارَكَ اللهُ

और अल्लाह तआला तुझ में भी बरकत दे।

बदशगूनी को ना पसन्द समझने की दुआ

اَللّٰهُمَّ لَا طَيْرَ اِلَّا طَيْرُكَ وَلَا خَيْرَ اِلَّا خَيْرُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

अल्लाहुम्-म ला तै-र इल्ला तैरु-क व ला ख़ै-र इल्ला ख़ैरु-क व ला इला-ह ग़ैरु-क० (अहमद, इब्नुस्सुनी)

इलाही! तेरी फ़ाल (शगून) के सिवा कोई फ़ाल नहीं और तेरी भलाई के सिवा कोई भलाई नहीं और तेरे सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं।

सवारी पर बैठने की दुआ

بِسْمِ اللهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، سُبْحَانَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ، وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

बिस्मिल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह, सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुन्क़लिबून०

अल्लाह तआला के नाम से, हर तरह की तअरीफ़ अल्लाह ही के लिए है, पाक है वह ज़ात जिस ने इसे हमारे क़ाबू में कर दिया, जब कि हम इसे अपने क़ाबू में नहीं ला सकते थे और यक़ीनन् हम अपने रब की तरफ़ ही वापस जाने वाले हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

अल-हम्दु लिल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह,अल्लाहुअक्बर,अल्लाहुअक्बर, अल्लाहुअक्बर, सुब्हा-नकल्लाहुम्-म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी फ़ग़्फ़िर्ली फ़इन्नहू ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन्-त० (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

हर तरह की तअरीफ़ अल्लाह ही के लिए है हर तरह की तअरीफ़ अल्लाह ही के लिए है हर तरह की तअरीफ़ अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है, इलाही! तू पाक है। यक़ीनन् मैं ने

अपनी जान पर ज़ुल्म किया है, तू मुझे मआ़फ़ कर दे, बेशक तेरे सिवा और कोई भी गुनाह मआ़फ़ करने वाला नहीं।

सफ़र की दुआ

اَللّٰهُ أَكْبَرُ، اَللّٰهُ أَكْبَرُ، اَللّٰهُ أَكْبَرُ، سُبْحَانَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ۖ، وَإِنَّآ إِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ۖ اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ فِيْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوٰى، وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰى، اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَاطْوِعَنَّا بُعْدَهٗ، اَللّٰهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ، وَالْخَلِيْفَةُ فِي الْأَهْلِ، اَللّٰهُمَّ إِنِّيْٓ أَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّعْثَآءِ السَّفَرِ، وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ، وَسُوْٓءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْأَهْلِ

अल्लाहुअक्बर, अल्लाहुअक्बर, अल्लाहुअक्बर, सुब्हानल्ल ज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुन्क़लिबून अल्लाहुम्-म इन्ना नस्अलु- क फ़ी स-फ़रिना हाज़ल्-बिर र वत्तक़्वा व

मिनल्-अ-मलि मा तरज़ा, अल्लाहुम्-म हव्विन् अलैना स-फ़-रना हाज़ा वतविअन्ना बुअ्-दहू अल्लाहुम्-म अन्-तस्साहिबु फ़िस्स-फ़रि वल्-ख़ली-फ़तु फ़िल्-अहलि अल्लाहुम्-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् वअ्साइस्स-फ़रि व कअबतिल्-मन्-ज़रि व सूइल मुन्-क़-लबि फ़िलमालि वल्-अहलि०

अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है, पाक है वह ज़ात जिस ने इसे हमारे क़ाबू में कर दिया, जब की हम इसे अपने क़ाबू में नहीं कर सकते थे और यक़ीनन् हम अपने रब की तरफ़ ही वापस जाने वाले हैं। ऐ अल्लाह! हम तुझ से अपने इस सफ़र में नेकी और तक़्वा का सवाल करते हैं और ऐसे अमल का (सवाल करते हैं) जिसे तू पसन्द करे, ऐ अल्लाह! हमारा यह सफ़र हम पर आसान कर दे और इस की दूरी हम से समेट दे। ऐ अल्लाह! तू ही इस सफ़र में (हमारा) साथी है और (तू ही) घर वालों (माल और दौलत) में नाइब (निरीक्षक) है। इलाही! मैं तेरी पनाह में आता हूँ इस सफ़र की तक्लीफ़ से और इस के तक्लीफ़ देने वाले

मन्ज़र से और तेरी पनाह चाहता हूँ माल और घर वालों में बुरी वापसी से।

सफ़र से वापसी पर भी यही कहते और इन में यह ज़्यादती करते।

اٰئِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ

आइबू-न, ताइबू-न, आबिदू-न लिरब्बिना हामिदून०
(मुस्लिम)

(हम) वापस लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले और अपने रब ही की तअ़रीफ़ करने वाले हैं।

शहर या बस्ती में दाख़िल होने की दुआ

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَمَآ أَظْلَلْنَ، وَرَبَّ الْأَرَضِيْنَ السَّبْعِ وَمَآ أَقْلَلْنَ، وَرَبَّ الشَّيَاطِيْنِ وَمَآ أَضْلَلْنَ، وَرَبَّ الرِّيَاحِ وَمَا ذَرَيْنَ، أَسْأَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَخَيْرَ أَهْلِهَا، وَخَيْرَ مَا فِيْهَا، وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ أَهْلِهَا، وَشَرِّ مَا فِيْهَا

अल्लाहुम्-म रब्बस्-समावातिस्-सब्इ वमा अज़्लल्-न व रब्बल्-अर्ज़ी-नस्-सब्इ वमा अक़्लल्-न व रब्बश्-शयातीनि व मा अज़्लल्-न व रब्बर्रियाहि व मा ज़रै-न अस्अलु-क ख़ै-र हाज़िहिल्-क़र्यति व ख़ै-र अहलिहा व ख़ै-र मा फ़ीहा व अऊज़ुबि-क मिन् शर्रिहा व शर्रि अहलिहा व शर्रि मा फ़ीहा० (हाकिम ने इसे रिवायत कर के सहीह कहा है, इब्नुस्सुनी)

ऐ सातों आसमानों और उन चीज़ों के रब जिन पर यह साया किए हुए हैं। और सातों ज़मीनों और उन चीज़ों के रब जिन को यह उठाए हुए हैं। और शैतानों के रब और (उन के रब) जिन्हें इन्हों ने गुमराह किया है। और हवाओं के रब और (उन चीज़ों के रब जो इन्हों ने उड़ाई हैं। मैं तुझ से इस बस्ती और इस के बासियों की और इस बस्ती) में मौजूद चीज़ों की भलाई का सवाल करता हूँ और मैं तेरी पनाह में आता हूँ इस की बुराई से और इस के बासियों की बुराई से और (उन चीज़ों की) बुराई से जो इन में हैं।

बाज़ार में दाख़िल होने की दुआ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، يُحْيِ وَ يُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु युह्यी व युमीतु व हु-व ह्य्युल्-ला यमूतु बियदिहिल्-ख़ैरु व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर० (तिर्मिज़ी, हाकिम)

अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं है, वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं उसी की बादशाहत और उसी की ही सब तअ़रीफ़ है वही ज़िन्दा करता और वही मारता है और वह ज़िन्दा है, मरता नहीं हर भलाई उसी के हाथ में है। और वह हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखता है।

सवारी फिसलने के वक़्त की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ **बिस्मिल्लाह०** (अबूदाऊद)

अल्लाह के नाम के साथ।

मुसाफ़िर की मुक़ीम के लिए दुआ

أَسْتَوْدِعُكُمُ اللهَ الَّذِيْ لَا تَضِيْعُ وَدَائِعُهُ

अस्तौदिअुकुमुल्ला-हल्लज़ी ला तज़ीअु व दाइअुहू०

(अहमद, इब्नि माजह)

मैं तुम्हें अल्लाह के सुपुर्द (हवाले) करता हूँ उस के सुपुर्द की हुई चीज़ें बरबाद नहीं हो सकतीं।

मुक़ीम की मुसाफ़िर के लिए दुआ

أَسْتَوْدِعُ اللهَ دِيْنَكَ وَأَمَانَتَكَ، وَخَوَاتِيْمَ عَمَلِكَ

अस्तौदिअुल्ला-ह दी-न-क व अमा-न-त-क व ख़वाती-म अ-मलि-क० (अहमद, तिर्मिज़ी)

मैं तेरा दीन, तेरी अमानत और तेरा आख़री अमल अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ ।

زَوَّدَكَ اللهُ التَّقْوٰى، وَغَفَرَ ذَنْبَكَ، وَيَسَّرَ لَكَ الْخَيْرَ حَيْثُمَا كُنْتَ

ज़व्व-दकल्लाहुत्-तक़्वा व ग़-फ़-र ज़म्ब-क व यस्स-र ल-कलख़ै-र हैसु मा कुन्-त० (तिर्मिज़ी)

अल्लाह तआ़ला, तुम्हें तक़वा का सामाने सफ़र दे और तुम्हारे गुनाह मआ़फ़ करे और जहाँ भी तुम रहो तुम्हारे लिए नेकी (के काम) आसान कर दे।

सफ़र में तस्बीह और तक्बीर

❁ जाबिर ﷺ का बयान है कि जब हम उपर चढ़ते तो तक्बीर (**अल्लाहु अक्बर**) कहते और जब नीचे उतरते तो तस्बीह (**सुब्हानल्लाह**) कहते। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ)

सफ़र में सुबह के वक़्त की दुआ

سَمِعَ سَامِعٌ بِحَمْدِ اللهِ وَ حُسْنِ بَلَآئِهٖ عَلَيْنَا رَبَّنَا صَاحِبْنَا وَ اَفْضِلْ عَلَيْنَا عَآئِذًا بِاللهِ مِنَ النَّارِ

समि-अ सामिअुम् बिहम्दिल्लाहि व हुस्नि बलाइही अ़लैना रब्बना साहिब्ना व अफ़्ज़िल् अ़लैना आइज़म् बिल्लाहि मिनन्नारि० (मुस्लिम)

एक सुनने वाले ने (हमारी तरफ़ से) अल्लाह की तआ़रीफ़ और हम पर उस के अच्छे इनआ़मात (के बारे में) सुना। ऐ

हमारे रब! हमारा साथी बन जा और हम पर महरबानी कर हम इस दुआ से अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में आते हैं आग (के अज़ाब) से।

सफ़र में या बिना सफ़र किसी जगह ठहरने की दुआ

أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

अअूज़ु बिकलिमातिल्लाहित्-ताम्माति मिन् शर्रि मा ख़-लक़० (मुस्लिम)

मैं अल्लाह के पूरे कलमात की पनाह में आता हूँ, उस की मख़्लूक़ की बुराई से।

सफ़र से वापसी की दुआ

❁ जब रसूलुल्लाह ﷺ किसी जंग या हज से वापस आते तो हर ऊंची जगह पर तीन बार **अल्लाहु अक्बर** कहते फिर यह दुआ पढ़ते।

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، اٰئِبُوْنَ، تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ، صَدَقَ اللهُ وَعْدَهٗ، وَنَصَرَ عَبْدَهٗ، وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهٗ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल्-मुल्कु व लहुल्-हम्दु व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर, आइबू-न, ताइबू-न, आबिदू-न लिरब्बिना हामिदू-न स-द-क़ल्लाहु वअ्-दहू व न-स-र अब्-दहू व ह-ज़-मल्-अह्-ज़ा-ब वह्-दहू० (बुख़ारी, मुस्लिम)

अल्लाह अकेले के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, उस का कोई शरीक नहीं है उसी की बादशाहत है और उसी की हर तअ़रीफ़ है, और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है, हम वापस आने वाले हैं तौबा करने वाले इबादत करने वाले हैं (और) अपने रब ही की तअ़रीफ़ करने वाले हैं, अल्लाह ने अपना वादा सच कर दिखाया और अपने बन्दे की मदद की। और उस अकेले ने (मुख़ालिफ़) गिरोहों को हरा दिया।

ख़ुशी या परेशानी की बात सुनने वाला क्या कहे ?

❁ रसूलुल्लाह ﷺ के पास अगर कोई ख़ुशी की ख़बर आती तो आप ﷺ कहते,

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी बिनिअ्-मतिही ततिम्मुस्-सालिहात०

हर तरह की तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिस के इनआ़म की वजह से (हमारे) नेक काम पूरे होते हैं।

अगर कोई परेशानी वाली ख़बर आती तो फ़रमाते।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ

अल-हम्दु लिल्लाहि अ़ला कुल्लि हाल० (अ़म्लुल्यौम वल्लैल: इब्नुस्सुनी)

हर हाल में अल्लाह ही की तअ़रीफ़ है।

रसूलुल्लाह ﷺ पर दरुद भेजने की फ़ज़ीलत

❁ रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान है कि जो कोई मुझ पर एक बार दुरूद भेजेगा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

❁ आप ﷺ का इर्शाद है कि मेरी क़ब्र को मेले की जगह न बनाओ और मुझ पर दरूद भेजो, तुम जहाँ भी हो तुम्हारा दरूद मुझे पहुँच जाता है। (अहमद, अबूदाऊद)

❁ आप ﷺ का फ़रमान है, जिस के सामने मेरा ज़िक्र हुआ और वह मुझ पर दरूद न भेजे वह कंजूस (बख़ील) है। (तिर्मिज़ी)

❁ आप ﷺ का फ़रमान है कि अल्लाह तआ़ला के कुछ फ़रिश्ते ऐसे हैं जो ज़मीन पर चलते फिरते हैं वह मेरी उम्मत का सलाम मुझे पहुँचाते हैं। (नसाई, हाकिम)

❁ आप ﷺ का फ़रमान है कि कोइ शख़्स (जब) भी मुझे सलाम कहता है, अल्लाह तआ़ला मेरी रूह मुझे वापस लौटा देता हैं ताकि मैं उसे सलाम का जवाब दूँ। (अबूदाऊद)

ज़्यादा से ज़्यादा सलाम फैलाना

❁ नबी ﷺ का फ़रमान है कि जब तक तुम मोमिन नहीं होगे जन्नत में दाख़िल नहीं होगे। और तुम मोमिन नहीं बनोगे यहाँ तक कि एक दूसरे से मुहब्बत न करो। क्या मैं तुम्हें ऐसा काम न बताऊँ जिस के करने से तुम एक दूसरे से मुहब्बत करोगे! आपस में सलाम ज़्यादा से ज़्यादा फैलाओ। (मुस्लिम)

❁ अम्मार बिन यासिर ﷺ फ़रमाते हैं कि तीन चीज़ें ऐसी हैं कि जिस किसी में हों वह ईमान को समेट लेगा। (1) अपने आप से इन्साफ़ करना। (2) लोगों को बहुत ज़्यादा सलाम कहना। (3) ग़रीब होते हुए भी (अल्लाह की राह में) ख़र्च करना। (बुख़ारी)

❁ अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ का बयान है कि एक आदमी ने नबी करीम ﷺ से पूछा कि इस्लाम का कौन सा काम सब से अच्छा है? आप ﷺ ने फ़रमाया, (सब से अच्छा काम यह है कि) तुम (लोगों को) खाना खिलाओ और जिसे तुम पहचानते हो और जिसे नहीं पहचानते (सब को) सलाम कहो। (बुख़ारी, मुस्लिम)

काफ़िर के सलाम का जवाब

(यहूदी और ईसाइ) तुम्हें सलाम कहें तो तुम कहो **वअ़लैकुम** (और तुम पर भी)। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ, मुस्लिम)

मुर्ग़ बोलने और गधा रेंकने के वक़्त की दुआ

❁ रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान है कि जब तुम मुर्ग़ की आवाज़ सुनो तो अल्लाह तआला से उस के फ़ज़्ल की दुआ करो। (यानी यह कहो)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क मिन् फ़ज़्लिक०

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से तेरा फ़ज़्ल माँगता हूँ।

क्यों कि उस ने फ़रिश्ते को देखा होता हैं। और जब तुम गधे के रेंकने की आवाज़ सुनो तो कहो।

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम०

मैं अल्लाह की पनाह में आता हूँ शैतान मर्दूद से

क्यों कि उस ने शैतान को देखा होता है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

रात को कुत्ते भोंकने के वक़्त दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि जब तुम रात के वक़्त कुत्तों के भोंकने और गधों के रेंकने की आवाज़ सुनो तो इन से

अल्लाह की पनाह में आने की दुआ करो। क्यों कि यह ऐसी चीज़ें देखते हैं जो तुम नहीं देख पाते। (अहमद, अबूदाऊद)

ऐसे शख़्स के लिए दुआ जिसे तुम ने गाली दी हो

❁ नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया ऐ अल्लाह! जिस किसी मोमिन को मैं ने बुरा कहा हो, उस के लिए इसे अपने यहाँ क़यामत के दिन नज़दीकी का ज़रिआ बना दे।

اَللّٰهُمَّ فَاَيُّمَا مُؤْمِنٍ سَبَبْتُهٗ فَاجْعَلْ ذٰلِكَ لَهٗ قُرْبَةً اِلَيْكَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

अल्लाहुम्-म फ़अय्युमा मोमिनिन् सबब्तुहू फज्अल् ज़ालि-क लहू क़ुर्बतन् इलै-क यौमल्-क़ियामति० (बुख़ारी फ़त्ह के साथ, मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! जिस किसी मोमिन को मैं ने बुरा कहा हो, उस के लिए इसे अपने यहाँ क़यामत के दिन अपने क़रीब होने का ज़रीआ बना दे।

मुसलमान दुसरे मुसलमान की तअरीफ़ में क्या कहे?

नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया कि जब तुम में से किसी को ज़रुर ही अपने दोस्त की तअ़रीफ़ करनी हो(इस शर्त पर कि वह यह चीज़ जानता हो)तो उसे यह कहना चाहिए मैं समझ्ता हूँ कि वह शख़्स ऐसे और ऐसे (यानी: मुत्तक़ी, नेक, अ़मल करने वाला आ़लिम, अमानतदार वग़ैरा) है लेकिन अल्लाह तआ़ला उस का हिसाब करने वाला है, मैं अल्लाह तआ़ला के सामने किसी को पाक नहीं समझ सकता। (मुस्लिम)

जब मुसलमान अपनी तअ़रीफ़ सुने तो कहे?

اَللّٰهُمَّ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَاغْفِرْلِيْ مَا لَا يَعْلَمُوْنَ وَاجْعَلْنِيْ خَيْرًا مِّمَّا يَظُنُّوْنَ

अल्लाहुम्-म ला तुआख़िज़्नी बिमा यक़ूलू-न वग़्फ़िर्ली मा ला यअ़्-लमू-न (वज्अ़ल्नी ख़ैरम मिम्मा यज़ुन्नून)०

(बुख़ारी की अदबुल मुफ़्रद)

ऐ अल्लाह! इस बात पर मेरी पकड न करना जो यह कह रहे हैं और जो कुछ यह नहीं जानते वह मुझे मआ़फ़ कर दे (और मुझे इस से अच्छा बना दे जो यह मेरे बारे में राए रखते हैं)।

हज या उमरा का एहराम बाँधने वाला लब्बैक कैसे कहे ?

لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ، لَا شَرِيْكَ لَكَ

लब्बैक अल्लाहुम्-म लब्बैक, लब्बै-क ला शरी-क ल-क लब्बैक, इन्नलहम-द वन्निअ्-म-त ल-क वल मुल्क ला शरी-क लक० (बुख़ारी फ़त्ह के साथ, मुस्लिम)

मैं हाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह! मैं बार बार हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ तेरा कोइ शरीक नहीं, मैं बार बार हाज़िर हूँ, बेशक हर तअ़रीफ़ और नेअ़मत तेरे ही लिए है और तेरी ही बादशाहत है तेरा कोई शरीक नहीं।

हज्रे अस्वद के क़रीब जा कर अल्लाहु अक्बर कहना

नबी करीम ﷺ ने ऊँट पर सवार हो कर काबतुल्लाह का तवाफ़ किया, जब आप ﷺ हज्रे अस्वद के पास आते तो उस की तरफ़ अपने पास मौजूद किसी चीज़ (छड़ी) से इशारा करते और अल्लाहु अक्बर कहते। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ)

रुक्ने यमानी और हज्रे अस्वद के बीच दुआ

नबी करीम ﷺ रुक्ने यमानी और हज्रे अस्वद के बीच यह दुआ पढ़ते थे।

﴿رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ﴾

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-नतंव्-व फ़िलआख़िर-रति ह-स-नतंव्-वक़िना अज़ाबन्नार० (अहमद, अबूदाऊद)

ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई दे और अख़िरत में भी भलाई दे और हमें आग के अ़ज़ाब से बचा।

सफ़ा और मर्वह पर रुकने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब सफ़ा के क़रीब हो जाते तो फ़रमाते।

﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللهِ أَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللهُ بِهِ﴾

इन्नस्-सफ़ा वल मर्व-त मिन् शआइरिल्लाहि अब्दउ बिमा ब-दअल्लाहु बिही०

बेशक सफ़ा और मर्वह अल्लाह तआला की निशानियों में से हैं मैं वहीं से शुरू करता हूँ जहाँ से अल्लाह तआला ने शुरू किया।

फिर नबी करीम ﷺ ने सफ़ा से शुरु किया। ऊपर चढ़ते गए यहाँ तक कि बैतुल्लाह को देखा उस की तरफ़ मुँह किया, अल्लाह तआला की तौहीद और बड़ाई बयान करते हुए यह अल्फ़ाज़ कहे।

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ أَنْجَزَ وَعْدَهٗ، وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهٗ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू लहुल्-मुल्कु व लहुल्-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर, ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू अन्ज-ज़ वअ्-दहू व न-स-र अ़ब्-दहू व ह-ज़मलअहज़ा-ब वह्-दहू०

अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं उसी की बादशाहत और उसी की

तअ़रीफ़ है और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है। अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, वह अकेला है, उस ने अपना वादा पूरा किया, अपने बन्दे की मदद की और उस अकेले ने (मुख़ालिफ़) लश्करों को हरा दिया।

फिर इस बीच दुआ़ की, इस तरह तीन बार कहा हदीस लम्बी है और इस में यह भी है कि नबी ﷺ ने मर्वह पर भी वैसे ही किया जैसे सफ़ा पर किया। (मुस्लिम)

अ़र्फ़ : के दिन (9 ज़िल्हिज्ज :) की दुआ़

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि सब से बहतर दुआ़ अ़र्फ़: के दिन की दुआ़ है। और (इस दिन) जो कुछ मैं ने और मुझ से पहले नबीयों ने कहा है इस में सब से अफ़ज़ल यह है।

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ. لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल्-मुल्कु व लहुल्-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर०

(तिर्मिज़ी)

अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं उसी की बादशाहत है और उसी की ही तअ़रीफ़ है और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है।

मश्अरे हराम के पास ज़िक्र

नबी ﷺ कस्वा (ऊँटनी) पर सवार हो गए। जब मश्अ़रे हराम के पास पहुँचे तो क़िब्ला की तरफ़ हो कर अल्लाह तआ़ला से दुआ की अल्लाहु अक्बर,ला इला-ह इल्लल्लाहु और तौहीद के कलमे कहते रहे। ख़ूब रौशनी होने तक यहीं ठहरे रहे। फिर सूरज निकलने से पहले यहाँ से चल पड़े। (मुस्लिम)

रमी जमरात के वक़्त हर कंकरी के साथ तक्बीर

रसूलुल्लाह ﷺ तीनों जम्रात के पास जब भी कंकरी फेंकते अल्लाहु अक्बर कहते। फिर आगे बढ़ते और पहले और दूसरे जम्रह के बाद दुआ भी करते। जब कि आख़री जम्रह को रमी करते हुए हर कंकरी के साथ अल्लाहु अक्बर कहते और उस के पास ठहरे बिना वापस हो जाते। (बुख़ारी, मुस्लिम)

ख़ूशी महसूस करने और ख़ूशी वाले काम पर दुआ

सुब्हानल्लाह० سُبْحَانَ اللهِ

अल्लाह पाक है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

अल्लाहु अक्बर० اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाह सब से बड़ा है। (बुख़ारी, तिर्मिज़ी)

ख़ूशख़बरी मिलने पर क्या करे?

नबी अकरम ﷺ को किसी ख़ुशी की ख़बर मिलती तो आप अल्लाह तआ़ला का शुक्र करते हुए सज्दे में गिर जाते। (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजह)

बदन में तक्लीफ़ महसूस हो तो क्या कहे?

रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान है कि बदन के जिस हिस्से में तक्लीफ़ हो, उस पर अपना हाथ रखो और 3 बार कहो।

बिस्मिल्लाह० بِسْمِ اللهِ

अल्लाह के नाम के साथ।

और 7 बार कहो।

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا اَجِدُ وَاُحَاذِرُ

अअूज़ु बिल्लाहि व कुद्-रतिही मिन् शर्रि मा अजिदु व उहाज़िरु० (मुस्लिम)

मैं अल्लाह तआला की क़ुदरत की हिफ़ाज़त में आता हूँ उस चीज़ कि बुराई से जो मैं महसूस करता हूँ और जिस का मुझे डर है।

अपनी नज़र लग जाने का डर हो तो क्या कहे?

रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान है कि जब तुम में से कोई शख़्स अपने भाई या अपने यहाँ या अपने माल में ख़ुश करने वाली चीज़ देखे तो उसे बरकत की दुआ करनी चाहिए क्योंकि नज़र (लग जाना)सच है। (अहमद)

घबराहट के वक़्त क्या कहा जाए?

ला इला-ह इल्लल्लाहु० لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

(बुख़ारी फ़त्ह के साथ, मुस्लिम)

अल्लाह तआला के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं।

कोई जानवर या ऊँट ज़बह करते वक़्त क्या कहे?

بِسْمِ اللهِ وَاللهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّيْ

बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अक्बर (अल्लाहुम्-म मिन्-क व ल-क) अल्लाहुम्-म तक़ब्बल मिन्नी० (मुस्लिम, बैहक़ी)

(मैं) अल्लाह तआला के नाम से (ज़बह करता हूँ) अल्लाह सब से बड़ा है, (ऐ अल्लाह! यह तेरी ही तरफ़ से और तेरे ही लिए है)। ऐ अल्लाह! (इसे) मेरी तरफ़ से तू क़ुबूल कर।

सरकश शैतानों के धोके और फ़रेब से बचने की दुआ

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّآمَّاتِ الَّتِيْ لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ مِّنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَذَرَاَ وَبَرَاَ وَمِنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِيْهَا، وَمِنْ شَرِّ مَا ذَرَأَ فِي الْاَرْضِ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمِنْ شَرِّ فِتَنِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَشَرِّ كُلِّ طَارِقٍ اِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَّارَحْمَانُ

अअूज़ु बिकलिमातिल्लाहित्-ताम्मातिल्लती ला युजाविज़ुहुन्-न बर्रुव्-व ला फ़ाजिरुम्-मिन् शर्रि मा ख़-

ल-क़ व ब-र-अ व ज़-र-अ व मिन् शर्रि मा यन्ज़िलु मिनस्समाइ व मिन् शर्रि मा यअ्रुजु फ़ीहा व मिन् शर्रि मा ज़-र-अ फ़िल्-अर्ज़ि व मिन् शर्रि मा यख़्रुजु मिन्हा व मिन् शर्रि फ़ि-तनिल्लैलि वन्नहारि व मिन् शर्रि कुल्लि तारिक़िन् इल्ला तारिक़ंय्-यत्रुकु बिख़ैरिंय्या रहमानु०

(अहमद)

मैं अल्लाह तआ़ला के उन पूरे कलिमात की पनाह में आता हूँ जिन से आगे कोई नेक और बुरा नहीं गुज़र सकता, हर उस चीज़ की बुराई से जिसे उस ने पैदा किया, उसे बनाया और फैलाया और उस चीज़ की बुराई से जो आसमान से उतरती है और उस चीज़ की बुराई से जो उस में चढ़ती है और उस चीज़ की बुराई से जिसे उस ने ज़मीन में फैलाया और उस चीज़ की बुराई से जो उस से निकलती है और रात दिन के फ़ित्नों की बुराई से और रात के वक़्त हर आने वाले की बुराई से सिवाए ऐसे के जो भलाई के साथ आए, ऐ बहुत ज़्यादा रहम करने वाले।

तौबा और इस्तिग़फ़ार

❁ रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया अल्लाह की क़सम मैं 70 बार से ज़्यादा अल्लाह तआ़ला से मआ़फ़ी माँगता हूँ और उस के सामने तौबा करता हूँ। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ)

❁ नबी ﷺ का फ़रमान है कि ऐ लागो! अल्लाह तआ़ला के सामने तौबा करो। मैं दिन में 100 बार उस के सामने तौबा करता हूँ। (मुस्लिम)

❁ और आप ﷺ ने फ़रमाया, जो कोई यह कहे।

اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَ اَتُوْبُ اِلَیْهِ

अस्तग़िफ़रुल्लाहल्-लज़ी ला इला-ह इल्ला हुवल्-हय्युल्-क़य्यूमु व अतूबु इलैह० (अबूदाऊद)

मैं अल्लाह तआ़ला से मआ़फ़ी माँगता हूँ जिस के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं है, वह सदा ज़िन्दा और सदा क़ायम है और मैं उसी के सामने तौबा करता हूँ। तो अल्लाह तआ़ला उसे मआ़फ़ कर देता है चाहे लड़ाई से भागा हो।

❁ और नबी ﷺ ने फ़रमाया रब तआला बन्दे के सब से क़रीब रात के आख़री हिस्से में होता है। अगर तुम उन लोगो में शामिल हो सकते हो जो उस वक़्त अल्लाह को याद करते हैं तो हो जाओ। (तिर्मिज़ी, नसाई)

❁ और नबी ﷺ ने फ़रमाया बन्दा अपने रब के सब से ज़्यादा नज़्दीक सज्दे की हालत में होता है। इसलिए (सज्दे में) ज़्यादा से ज़्यादा दुआ किया करो। (मुस्लिम)

❁ रसूलुल्लाह ने ﷺ फ़रमाया। मेरे दिल पर परदा सा आ जाता है और मैं दिन में 100 बार अल्लाह से मआफ़ी माँगता हूँ। (मुस्लिम)

तस्बीह(सुब्हानल्लाह), तहमीद(अल-हम्दुलिल्लाह), तहलील(ला इला-ह इल्लल्लाह) और तक्बीर (अल्लाहु अक्बर) की फ़ज़ीलत

❁ रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया जो कोई एक दिन में 100 बार कहे।

سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही०

अल्लाह अपनी तमाम ख़ूबियों समेत पाक है।

उस के गुनाह समन्दर के झाग के बराबर भी हों तो मआ़फ़ हो जाते हैं। (बुख़ारी, मुस्लिम)

❁ नबी ﷺ ने फ़रमाया जो शख़्स यह दुआ 10 बार पढ़े।

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू लहुल्-मुल्कु व लहुल्-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर०

अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मआ़बूद नहीं वह अकेला है उस का कोइ शरीक नहीं उसी की बादशाहत और उसी की तआ़रीफ़ है और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है।

वह उस शख़्स की तरह होगा जिस ने इस्माईल عليه السلام की औलाद में से चार ग़ुलाम आज़ाद किए। (बुख़ारी)

❁ और आप ﷺ ने फ़रमाया। दो कलमे ज़ुबान पर हलके फुलके हैं (लेकिन) तराज़ू में बहुत ज़्यादा भारी और अल्लाह तआ़ला को बहुत प्यारे हैं (और वह यह हैं)।

سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल्-अज़ीम०

(बुख़ारी, मुस्लिम)

अल्लाह तआ़ला अपनी तमाम ख़ूबियों समेत पाक है। और पाक है अल्लाह तआ़ला बड़ाई वाला।

❁ और आप ﷺ ने फ़रमाया कि मैं यह कहूँ।

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ

सुब्हानल्लाहि वल्-हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर०

अल्लाह तआ़ला पाक है और अल्लाह ही के लिए है हर तअ़रीफ़। और अल्लाह के सिवा कोइ (सच्चा) मअ़बूद नहीं। और अल्लाह सब से बड़ा है।

तो मुझे यह अमल उन तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब है जिन पर सूरज निकलता है। (यानी यह कलिमात कहना सारी दुनिया की नेअमतों से ज़्यादा महबूब है) (मुस्लिम)

❁ आप ﷺ ने फ़रमाया क्या तुम में से कोई शख़्स रोज़ाना एक हज़ार नेकी करने से भी बेबस है? साथियों में से किसी ने पूछा कि हम में से कोइ शख़्स एक हज़ार नेकी कैसे करे? आप ﷺ ने फ़रमाया।

वह 100 बार **सुब्हानल्लाह** कहे तो उस के लिए एक हज़ार नेकी लिख दी जाती है। या (फ़रमाया) कि उस के एक हज़ार गुनाह ख़त्म कर दिए जाते हैं। (मुस्लिम)

❁ आप ﷺ ने फ़रमाया जो कोई 1 बार कहता है

سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ

सुब्हानल्लाहिल्-अज़ीमि व बिहम्दिही०

अल्लाह तआला अपनी तमाम तर बड़ाईयों और ख़ूबियों के साथ पाक है।

उस के लिए जन्नत में ख़जूर का एक पेड़ लगा दिया जाता है। (तिर्मिज़ी, हाकिम)

❁ और आप ﷺ ने फ़रमाया ऐ अब्दुल्लाह बिन क़ैस! क्या मैं तुम्हें जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाने के बारे में न बताऊँ? मैं ने कहा! या रसूलुल्लाह ﷺ क्यों नहीं (ज़रुर बताएं) आप ﷺ ने फ़रमाया तुम कहो।

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ

ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह० (बुख़ारी, मुस्लिम)

अल्लाह की तौफ़ीक़ के बग़ैर गुनाह से बचने की हिम्मत है न नेकी करने की ताक़त।

❁ और आप ﷺ ने फ़रमाया चार कलमे अल्लाह तआला के यहाँ सब से ज़्यादा महबूब हैं।

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ

सुब्हानल्लाहि वल-हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर०

अल्लाह पाक है और हर तरह की तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए है और अल्लाह के सिवा कोइ (सच्चा) मअ़बूद नहीं और अल्लाह सब से बड़ा है।

इन में से जो भी पहले कह लिया जाए कोई हर्ज नहीं। (मुस्लिम)

❁ एक देहाती नबी ﷺ के पास आया, कहने लगा मुझे कुछ दुआ़एं सिखाएं जो मैं कहा करूँ। फ़रमाया कहो।

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، اللهُ أَكْبَرُ كَبِيْرًا وَّالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا سُبْحَانَ اللهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू, अल्लाहु अक्बरु कबीरंव्- वल-हम्दु लिल्लाहि कसीरन, सुब्हानल्लाहि रब्बिल्-आ–लमी-न ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल्-अ़ज़ीज़िल्-हकीम०

अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। अल्लाह सब से बड़ा और बहुत ही

बड़ा है और हर तरह की बहुत ज़्यादा तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए है। पाक है अल्लाह जो सारे जहानों का रब हे। बुराई से बचने की हिम्मत है, न नेकी करने की ताक़त, मगर अल्लाह ज़बरदस्त और हिक्मत वाले की तौफ़ीक़ से।

वह कहने लगा, कि यह तो मेरे रब के लिए हैं। मेरे लिए क्या है? फ़रमाया। तुम कहो।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَاهْدِنِیْ وَارْزُقْنِیْ

अल्लाहुम्-मग़्फ़िर्ली वरहमनी वहदिनी वरज़ुक़नी० (मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! मुझे मआ़फ़ कर, मुझ पर रहम कर, मुझे हिदायत दे और मुझे रोज़ी दे।

❁ जब कोई शख़्स मुसलमान होता तो आप ﷺ उसे नमाज़ सिखाते, फिर उसे हुक्म देते कि इस तरह से दुआ किया करे।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَاهْدِنِیْ وَعَافِنِیْ وَارْزُقْنِیْ

अल्लाहुम्-मग़फ़िर्ली वरहमनी वहदिनी व आफ़िनी वरज़ुक़नी० (मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! मुझे मआफ़ कर, मुझ पर रहम कर, मुझे हिदायत दे, मुझे आफ़ियत दे और मुझे रोज़ी दे। और अबूदाऊद ने इस ज़्यादती के साथ बयान किया है कि जब देहाती वापस जाने लगा तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया बेशक इस आदमी ने अपने दोनों हाथ भलाई से भर लिए ।

❁ आप ﷺ का इर्शाद है कि सब से अफ़्ज़ल दुआ है

अल-हम्दु लिल्लाह० اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

हर तरह की तअरीफ़ अल्लाह ही के लिए है।

और सब से अफ़्ज़ल ज़िक्र है।

ला इला-ह इल्लल्लाह० لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

अल्लाह के सिवा कोई (सच्चा) मअबूद नहीं। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजह)

बाक़ी रहने वाले नेक आमाल यह है।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ

सुब्हानल्लाहि वल-हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह० (अहमद)

अल्लाह पाक है, हर तरह की तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह के सिवा कोइ (सच्चा) मअ़बूद नहीं, अल्लाह सब से बड़ा है और बुराई से बचने की हिम्मत है न नेकी करने की ताक़त मगर अल्लाह की तौफ़ीक़ से।

नबी करीम ﷺ तस्बीह कैसे पढ़ते थे?

अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबी ﷺ को दाएं हाथ (के पोरों) पर तस्बीह गिनते देखा। (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

मुख़्तलिफ़ नेकियां और जामेअ आदाब

आप ﷺ का फ़रमान है कि जब रात का अंधेरा छा जाए या फ़रमाया कि जब शाम हो जाए तो अपने बच्चों को रोक लिया करो, क्यों कि उस वक़्त शैतान फैलते हैं और जब रात का कुछ हिस्सा बीत जाए तो उन्हें छोड़ दो और **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर दरवाज़े बन्द कर दिया करो। क्यों कि शैतान बंद दरवाज़े

नहीं खोलता और अल्लाह का नाम लेकर अपनी मश्कों के मुंह बन्द कर दिया करो। और अल्लाह तआ़ला का नाम लेकर बरतन ढाँप दिया करो चाहे इन पर कोइ चीज़ ही रख दिया करो और अपने चिराग़ बुझा दिया करो। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ, मुस्लिम)

व सल्लल्लाहु व सल्ल-म व बा-र-क अ़ला नबिय्यिना मुहम्मदिंव्- व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्-मअ़ी-न०

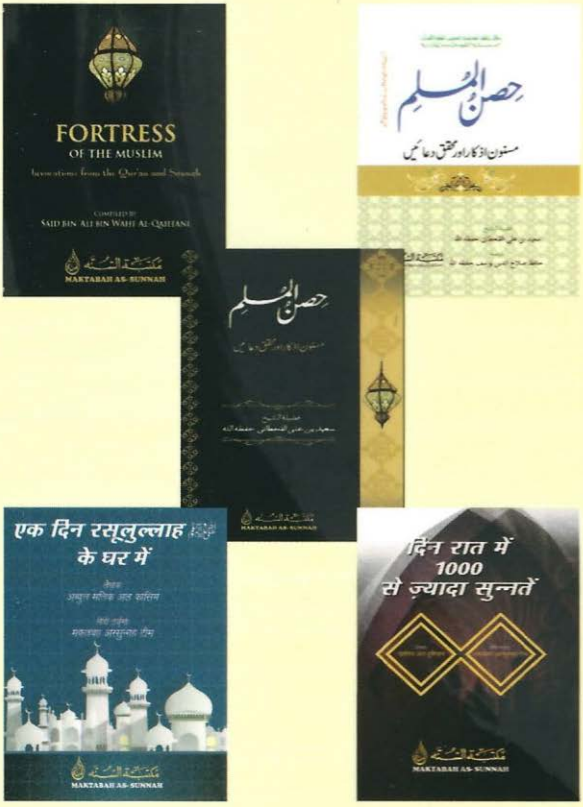

مكتبة السنة

MAKTABAH AS- SUNNAH

Shop no. 5, Firdaus Manzil, 12, Ghoghari Mohalla,
Bhendi Bazar, Mumbai- 400 003.
Mobile: 9222315006/ 8097444448/ 7498555422
Email: bakaliarmn@gmail.com
maktabahassunnah@hotmail.com

₹ 70/-